राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

# गौरवशाली भारत

वर्ष : 12
अंक : 118
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
शुक्रवार 11 नवंबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334
नई दिल्ली से प्रकाशित

मुख्य अपडेट
पेज 3 छावला मामले में खराब जांच को लेकर डीसीडब्ल्यू ने भारत सरकार के गृहसचिव को पत्र लिखा
पेज 5 यूपी पुलिस के माथे पर कलंक, चौकी में घुसकर चोरों ने पिस्तौल-कारतूस के साथ वर्दी भी उड़ाई
पेज 7 जी-20 समिट में भाग नहीं लेंगे पुतिन, यूक्रेन युद्ध पर बाइडन सहित पश्चिमी नेताओं से हो सकती थी टकरार

दीक्षांत समारोह

केंद्रीय रक्षा मंत्री, राजनाथ सिंह नई दिल्ली में दीक्षांत समारोह के दौरान 60वें राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज (एनडीसी) पाठ्यक्रम के स्नातक अधिकारियों के साथ।

## देश में तीन कोरोना मरीजों की मौत, मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत

नयी दिल्ली। देश में पिछले 24 घंटे में कोरोना महामारी से तीन मरीजों की मौत होने से, मृतकों की संख्या 5,30,514 तक पहुंच गयी है और मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि सुबह सात बजे तक 219.76 करोड़ टीके लगाए गए। देश में पिछले 24 घंटे में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी के 1,016 नये मामले सामने आने के साथ ही इस बीमारी से प्रभावितों की संख्या बढ़कर 4,46,63,968 हो गयी है। पिछले 24 घंटे में कोविड-19 संक्रमण से 1,385 लोग स्वस्थ हुए हैं, जिससे अब कोरोना से निजात पाने वालों की कुल संख्या बढ़कर 4,41,20,267 हो गयी है और स्वस्थ दर 98.75 प्रतिशत है। मंत्रालय ने बताया कि इसी अवधि में पांच राज्यों और एक केन्द्र शासित प्रदेश में कोराना वायरस (कोविड-19) महामारी के मामलों में वृद्धि हुई है।

# कर्ज के चलते परिवार के 6 लोगों ने दी जान

## नवादा में पति-पत्नी और 4 बच्चों ने खाया जहर

नवादा। नवादा में कर्ज के चलते बुधवार को एक ही परिवार के 6 लोगों ने जान दे दी।

न्यू एरिया मोहल्ले के केदार लाल गुप्ता ने देर रात अपनी पत्नी और 4 बच्चों के साथ जहर खा लिया। सभी जमीन पर तड़पते रहे। इसके बाद सभी को अस्पताल ले जाया गया। वहां एक-एक कर सभी ने दम तोड़ दिया।

मरने से पहले एक बेटे ने बताया कि हमने कर्ज के चलते जहर खा लिया है। वहीं पुलिस ने मामले में 2 लोगों को हिरासत में लिया है। मरने से पहले परिवार के मुखिया केदार लाल गुप्ता ने एक दिन पहले 2 पन्नों का सुसाइड नोट भी लिखा था।

मरने वालों में से घर के मुखिया 50 वर्षीय केदार लाल गुप्ता, 47 वर्षीय पत्नी अनिता कुमारी, बेटा 16 वर्षीय प्रिंस, बेटी 20 वर्षीय शबनम कुमारी, बेटी 17 वर्षीय गुड़िया कुमारी शामिल है। अस्पताल में 14 घंटे बाद अपना दम तोड़ने वाली बेटी साक्षी ने बताया कि पापा ने 4-5 लोगों से 12 लाख रुपए का कर्ज ले रखा था। पापा रोज ब्याज भी देते थे। कर्ज को लेकर घर में झगड़े होते थे। महाजन बार-बार परेशान करता था।

जानकारी के अनुसार मृतक घर के मुखिया केदार लाल गुप्ता शहर के विजय बाजार में फल का दुकान चलाते थे। कर्ज से तंग आकर शहर की कृषि फार्म की मजार के पास जाकर सभी ने जहर खा लिया जिसके कारण सभी की मौत हो गई।

मृतक प्रिंस कुमार मरने से पहले बताया कि बाजार से कुछ लोगों से कर्ज लिया था और हम लोग को काफी प्रताड़ित कर रहा था। हम लोग पैसा वापस करने को लेकर थोड़ा समय मांगा, लेकिन लोग मानने को तैयार नहीं थे। बार-बार धमकी दे रहे थे, जिसको लेकर हम लोगों ने जहर खा लिया।

मरने से पहले घर के मुखिया केदार लाल गुप्ता ने बताया कि महाजन रुपए वापस करने को लेकर गाली-गलौज और धमकी दे रहा था।

वहीं इस घटना की सूचना पुलिस को दिया गया पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर सभी को सदर अस्पताल ले आई। सबसे अंतिम में 16 वर्षीय पुत्री साक्षी ने भी पावापुरी विम्स में दम तोड़ दिया। 14 घंटे तक वह अस्पताल में जिंदगी-मौत के बीच जंग करती रही। पूरे मामले पर थाना प्रभारी अरुण कुमार सिंह ने कहा है कि मामले की तहकीकात की जा रही है अब तक 6 लोगों की मौत हुई है।

तमिलनाडु के मदुरै की पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट

# 5 मजदूरों के शरीर के चीथड़े उड़े, 10 घायल

मदुरै। तमिलनाडु के मदुरै जिले के उसिलांबट्टी के पास गुरुवार को एक पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट हुआ। विस्फोट के बाद फैक्ट्री में आग लग गई। इस हादसे में फैक्ट्री में काम कर रहे 5 मजदूरों की मौत हो गई, जबकि करीब 10 मजदूर घायल हैं। सिंधुपट्टी पुलिस स्टेशन के एक अधिकारी ने बताया ब्लास्ट इतना जोरदार था कि फैक्ट्री में काम कर रहे 5 मजदूरों के शरीर के चीथड़े उड़ गए।

हादसे की जानकारी मिलते ही दमकल और पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई। एसपी मदुरै ने इस हादसे की पुष्टि की है। उन्होंने बताया विस्फोट की वजह अभी तक पता नहीं चली है। जांच की जा रही है, जल्द ही कारण पता चल जाएगा।

मृतकों की पहचान अम्मावासी, वल्लारासु, गोपी, विकी और प्रेमा के रूप में हुई है। वहीं, हादसे में घायलों की हालत भी गंभीर बनी हुई है।

### सितंबर में हुई थी 7 मजदूरों की मौत

इससे पहले सितंबर में तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले की एक पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट हुआ था। जिसमें 7 मजदूरों की मौत हुई थी जबकि कई मजदूर घायल हो गए थे। इससे पहले जुलाई में नेवेली लिग्नाइट पावर प्लांट में विस्फोट हुआ था। इस हादसे में 5 लोगों की मौत हुई थी, वहीं 17 लोग घायल हो गए थे।

# हिमाचल प्रदेश के कई इलाकों में भारी बर्फबारी

## लेह-मनाली हाईवे समेत कई सड़कें बंद, टूरिस्टों को यात्रा से बचने की एडवाइजरी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में के जनजातीय जिला लाहौल स्पीति और चंबा में भारी बर्फबारी हुई है। चंबा के पांगी, किलाड़ व भरमौर की ऊंची चोटियों पर बीती रात ताजा हिमपात हुआ। इससे जहां मनाली-लेह हाईवे बंद हुआ, वहीं लाहौल स्पीति और चंबा जिले के अधिक ऊंचे क्षेत्रों की सड़कें भी वाहनों के लिए बंद हो गई हैं।

### 20 से ज्यादा सड़कें बंद

ताजा बर्फबारी को देखते हुए लाहौल स्पीति पुलिस ने भी सभी सैलानियों और स्थानीय लोगों को अनावश्यक

यात्रा से बचने की एडवाइजरी जारी है। पुलिस ने लोगों से सावधानी बरतने की अपील की है, क्योंकि ताजा हिमपात के बाद सड़क पर फिसलन बहुत बढ़ गई है। ऐसी सड़क पर सफर करना जोखिम भरा हो सकता है। अब तक मिली जानकारी के अनुसार, चंबा और लाहौल स्पीति में 20 से ज्यादा सड़कें बंद हो गई हैं। PWD महकमा इन सड़कों को बहाल करने में जुटा हुआ है।

### अटल टनल पर वाहनों की आवाजाही बंद

कुल्लू अटल टनल रोहतांग के छोर पर बुधवार से लगातार बर्फबारी हो रही है उसके बाद बीती पूरी रात यहां बर्फबारी का दौर जारी रहा जिस कारण यहां से वाहनों की आवाजाही को एहतियातन तौर पर रोक दिया गया है। पट्टन वैली में भी हल्की बर्फबारी शुरू हो चुकी है। अधिक ऊंचे क्षेत्रों में ताजा बर्फबारी के बाद तापमान में भी 3 से 5 डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट दर्ज की गई है। केलोंग का न्यूनतम तापमान 2.6 डिग्री सेल्सियस और कुकुमसेरी का 2.3 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया है। इसी तरह कल्पा 0, नारकंडा 2.1 डिग्री, कुफरी 3.6 डिग्री, डलहौजी में 3.3 डिग्री, मनाली 4.8 डिग्री और शिमला का 7 डिग्री तक गिर गया है।

प्रदेश के कई क्षेत्रों में बीती रात हल्की बारिश भी हुई है। पालमपुर में सबसे ज्यादा 10 मिलीमीटर, कुकुमसैरी में 8.2 मिलीमीटर, कल्पा में .2 मिलीमीटर दर्ज की गई।

# जम्मू-कश्मीर में बस हादसा, 3 की मौत

## जम्मू-पठानकोट हाइवे पर 2 बसें टकराईं, 17 यात्री घायल

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले में बुधवार शाम दो बसों के टकरा जाने से बड़ा हादसा हो गया। जिसमें 3 लोगों की जान चली गई और 17 यात्री घायल हो गए। मरने वालों में एक 13 साल की बच्ची भी शामिल है। यह हादसा जम्मू-पठानकोट नेशनल हाईवे पर चिची माता मंदिर के पास हुआ।

हादसा उस समय हुआ जब जम्मू से हरिद्वार जा रही बस नानके चक के पास पहुंची और चालक ने अपनी बस धीमी की थी, उसी समय पीछे से तेज गति से आ रही सुपरफास्ट बस ने टक्कर मार दी।

टकराने वाली एक बस यूपी रोडवेज की के सहारनपुर डिपो की है। हादसे के बाद ड्राइवर मौके से फरार हो गए जिनकी तलाश पुलिस कर रही है।

सांबा जिला अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी डॉ भारत भूषण ने बताया कि हादसे में सामान्य घायल 10 यात्रियों को सांबा जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है और 7 गंभीर घायलों को जम्मू के सरकारी मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। जान गवाने वालों की संख्या में इजाफा हो सकता है।

### स्थानीय लोगों की मदद से हुआ रेस्क्यू

इस भीषण घटना के बाद चारों तरफ चीख-पुकार मच गई। घटना की सूचना मिलते ही पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने बस में फंसे लोगों को रेस्क्यू किया। स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से घायलों को अस्पतालों तक पहुंचाया गया। बताया जा रहा है कि यह हादसा ओवरस्पीड की वजह से हुआ। यूपी रोडवेज की बस को ज्यादा नुकसान हुआ। इसलिए घायलों में ज्यादातर लोग यूपी रोडवेड की बस में सवार लोग हो सकते हैं।

### मरने वालों की हुई पहचान

हादसे में सभी मरने वालों की पहचान कर ली गई है। उनकी पहचान सांबा के रहने वाले कसूरी लाल राजपुरा, बाटाला पंजाब की रहने वाली महिला मांगी देवी, बाटाला पंजाब की रहने वाली बच्ची तानिया के रूप में हुई है।

### एलजी मनोज सिन्हा ने दुख व्यक्त किया

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने इस घटना के बाद दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे डोडा और सांबा में सड़क हादसों में लोगों की जान जाने से वह बेहद दुखी हैं। उपराज्यपाल सिन्हा ने जिला प्रशासन को घायल हुए लोगों को हर संभव मदद के निर्देश दिए है।

### जान गवाने वालों के परिजनों को मिलेंगे एक-एक लाख

**हादसे के तुरंत बाद जिला उपायुक्त सांबा अनुराधा गुप्ता सहित जिला प्रशासन और पुलिस के उच्च अधिकारी भी मौके पर घायलों का हालचाल जानने के लिए अस्पताल पहुंचे। जिला आयुक्त सांबा ने हादसे में जान गवाने वालों के परिवार को एक-एक लाख, गंभीर रूप से घायलों को 50 हज़ार और मामूली घायलों दस-दस हज़ार रूपए देने का एलान किया।**

# कोयंबटूर ब्लास्ट केस में एनआईए का बड़ा एक्शन, दो राज्यों में 44 जगहों पर छापेमारी

## यह छापेमारी 23 अक्टूबर को कोयंबटूर में हुए धमाकों के सिलसिले की गई

नई दिल्ली। नेशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने गुरुवार को तमिलनाडु और केरल में 44 जगहों पर छापेमारी की। यह छापेमारी 23 अक्टूबर को कोयंबटूर में हुए धमाकों के सिलसिले की गई है। इस धमाके के दौरान आरोपी हमलावर मारा गया था। हमलावर एक कार में सवार होकर कोट्टाई ईश्वरन मंदिर के सामने जा रहा था। इसी दौरान कार में धमाका हो गया था। जिन 43 जगहों पर छापेमारी की गई है, वह जगहें तमिलनाडु के आठ जिलों- चेन्नई, कोयंबटूर, थिरुवल्लूर, थिरुप्पुर, नीलगिरीज, चेंगलपट्टू, कांचीपुरम और नागापट्टिनम और

केरल का एक जिला पलक्कड़ है।

### आईएसएस में ली थी शपथ

एनआईए ने इस बारे में बयान भी जारी किया है। इसमें बताया गया है कि शुरुआती जांच के मुताबिक आरोपी जमेशा मुबीन ने इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक और सीरिया में शपथ ली थी। वह धर्म व समुदाय विशेष के निशानों और इमारतों को सुसाइड अटैक से उड़ाना चाहता था। इसके जिए वह समुदाय विशेष के मन में डर पैदा करना चाहता था। गृह मंत्रालय ने 27 अक्टूबर को इस संघीय एजेंसी को मामले की जांच सौंपी थी। एनआई के मुताबिक गुरुवार को तलाशी के दौरान संदिग्ध के आवास से डिजिटल डिवाइसेस और आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद हुए हैं। अभी तक मामले में छह लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

### पूरी तैयारी थी

राष्ट्रीय जांच एजेंसी के मुताबिक आरोपियों ने मारे गए जामेशा मुबीन के साथ मिलकर विभिन्न केमिकल्स और अन्य वस्तुओं से आईईडी विस्फोटक तैयार किया था। इन सभी ने एक व्हीकल पर लगने वाला आईडी भी तैयार किया था। आरोपियों ने इसे ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म से खरीदा था और खतरनाक आतंकी गतिविधि को अंजाम देना चाहते थे। एजेंसियों को संदेह है कि यह किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की साजिश थी। इसकी वजह यह है कि धमाके में मारा गया मुबीन और गिरफ्तार छह अन्य लोग मोहम्मद अजहरुद्दीन के संपर्क में थे। अजहरुद्दीन फिलहाल आईएसआईएस के साथ लिंक और 2019 में श्रीलंका में ईस्टर संडे पर हुई बमबारी की घटना में जेल में बंद है। इसके अलावा स्थानीय पुलिस ने 75 किलो पोटैशियम नाइट्रेट, चारकोल, सल्फर और एल्यूमिनियम पॉवडर ने बरामद किया है।

# पहली बार होगा भारत-आसियान रक्षा मंत्री सम्मेलन, समुद्री सैन्य अभ्यास

नयी दिल्ली। भारत एवं आसियान के बीच संवाद की 30 वीं वर्षगांठ के मौके पर पहली बार इन देशों के रक्षा मंत्रियों का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जबकि वर्ष 2023 की शुरुआत में भारत आसियान समुद्री सैन्य अभ्यास आयोजित किया जाएगा। विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) सौरभ कुमार ने यहां उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की 19वीं आसियान भारत शिखर बैठक और पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए कल से होने वाली कंबोडिया यात्रा की जानकारी देने के लिए आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। कुमार ने कहा कि धनखड़ 11 से 13 नवंबर तक कंबोडिया की यात्रा पर रहेंगे। इस यात्रा के दौरान वह नोम पेन्ह में होने वाले 19वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 17 वें पूर्व एशिया सम्मेलन में हिस्सा लेंगे।

## संसद में बोलने नहीं देती मोदी सरकार : राहुल

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधा हमला करते हुए कहा है कि उनके नेतृत्व वाली सरकार संसद में विपक्ष को बोलने नहीं देती और जनता की आवाज दबाने का काम करती हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि संसद में जब भी जनता के मुद्दे उठाए जाते हैं तो सरकार विपक्ष को बोलने नहीं देती और माइक बंद कर दिया जाता है। उनका कहना था कि बेरोजगारी, महंगाई, चीनी घुसपैठ जैसे जो भी मुद्दा संसद में विपक्ष उठाता है माइक बंद कर दिया जाता है। उन्होंने मोदी से सीधा सवाल करते हुए कहा कि जनता की आवाज को इस तरह से दबाने का प्रयास अहंकार है और अहंकार को जनता जरूर तोड़ेगी इसलिए श्री मोदी को जनता की आवाज सुन लेनी चाहिए। गांधी ने ट्वीट कर कहा चीन - माइक ऑफ, महंगाई - माइक ऑफ, नोटबन्दी - माइक ऑफ, अग्निपथ - माइक ऑफ बेरोज़गारी - माइक ऑफ।

हादसा

बिल्डिंग के गैरेज में आग लगी; 9 लोग अभी भी लापता, 28 को बचाया गया

# मालदीव : बिल्डिंग में आग 9 भारतीयों समेत 11 की मौत

एजेंसी

माले। मालदीव के माले शहर में गुरुवार को एक बिल्डिंग के गैरेज में आग लग गई। इस हादसे में 9 भारतीयों समेत 11 लोगों की मौत हो गई। घटना बुधवार देर रात की बताई जा रही है। गुरुवार सुबह यानी आज आग पर काबू पाया गया, जिसके बाद ये जानकारी सामने आई है। पुलिस ने कहा- देर रात बुधवार करीब 12: 30 बजे हमें एक बिल्डिंग में आग लगने की खबर मिली। हम तुरंत मौके पर पहुंचे। दमकल की गाड़ियां भी बुलाई गई। आग ग्राउंड फ्लोर पर बने गैरेज में लगी, जो काफी भीषण थी। इसकी

लपटें पहली मंजिल तक पहुंच गई। देखते ही देखते पूरी इमारत जल गई।

### बिल्डिंग में माइग्रेंट वर्कर्स

एक पुलिस ऑफिसर ने कहा- बिल्डिंग के फर्स्ट फ्लोर पर माइग्रेंट वर्कर्स रहते थे। सभी प्रवासी भारत, बांग्लादेश और श्रीलंका के रहने वाले थे। हादसे में एक बांग्लादेशी प्रवासी की भी मौत हुई है। इस इमारत में तीसरी बार आग लगी है। 2 महीने पहले ही यहां आग लगी थी। मालदीव नेशनल डिफेंस फोर्स की फायर एंड रेस्क्यू सर्विस के मुताबिक, 28 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। 9 लोग अब भी लापता हैं। वहां कुल कितने लोग थे, इसकी जानकारी नहीं है।

### गैरेज में कई तरह की गैस रखी थीं

पुलिस ऑफिसर ने कहा- फिलहाल आग लगने की वजह का पता नहीं चल सका है। हालांकि गैरेज में कई तरह की गैस रखी हुई थी। जिससे शायद आग लगी। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद ही आग लगने की असली वजह का पता चल पाएगा।

### मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है

एक दमकल कर्मी ने कहा- आग बहुत तेजी से फैली। लोगों को बचने का मौका ही नहीं मिला। ब्लिडिंग के अंदर जाने वाले दरवाजे पर आग लगी थी। हमारे लिए अंदर जाना मुश्किल हो रहा था। इसलिए एक छोटी सी खिड़की से लोगों को बाहर निकाला गया। हम बिल्डिंग में मौजूद सभी लोगों को बचा नहीं पाए।

उन्होंने कहा- हमें फर्स्ट फ्लोर से 7 लोगों के शव मिले। 2 लोग घायल थे उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। एक की रास्ते में मौत हो गई और दूसरे की इलाज के दौरान मौत हुई। इसके बाद दमकलकर्मियों को 2 और लाशें मिली। अब तक कुल 11 लोगों की मौत हुई है। लेकिन मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है।

# फरीदाबाद में गर्लफ्रेंड का मर्डर : हाथ-पैर तोड़कर सड़क पर फेंक भागा बॉयफ्रेंड, अस्पताल में दम तोड़ा

फरीदाबाद। हरियाणा के फरीदाबाद में बॉयफ्रेंड ने युवती की हत्या कर दी। युवती गुरुवार सुबह सेक्टर-22 स्थित सोहना मोड के पास गंभीर अवस्था में पड़ी मिली। परिजन उसे लेकर बीके अस्पताल पहुंचे, जहां उसने दम तोड़ दिया। युवती की हत्या हाथ-पैर तोड़कर की गई। मरने से पहले युवती का एक वीडियो भी वायरल हुआ है, जिसमें वह आरोपी का नाम उजागर कर रही है। परिजनों के मुताबिक युवती रात घर घायल अवस्था में पड़ी थी।

### बिहार के आरा की थी रहने वाली थी युवती

मिली जानकारी के अनुसार, बिहार के आरा जिला निवासी रोशनी (19) फरीदाबाद के डबुआ चौक के पास परिवार के साथ किराए पर रहती थी। वह वर्लफूल चौक सेक्टर-24 के पास किसी निजी कंपनी में नौकरी करती थी। सुबह 8 बजे ड्यूटी जाती थी और रात में साढ़े 8 बजे तक घर वापस आती थी। मृतका के जीजा राजू ने बताया कि बुधवार सुबह 8 बजे वह ड्यूटी पर गई थी, लेकिन रात में लौटकर नहीं आई। उसका मोबाइल बंद था।

### दोनों हाथ पैर टूटे मिले

राजू के मुताबिक, गुरुवार सुबह साढ़े 6 बजे किसी के नंबर से परिजनों को सूचना मिली कि रोशनी सोहना मोड़ सेक्टर-22 के पास गली में घायल अवस्था में पड़ी है। सूचना पर परिजन मौके पर पहुंचे तो देखा कि रोशनी के दोनों हाथ पैर टूटे पड़े थे। उसे लेकर बीके अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी मौत हो गई।

### महेंद्र नामक व्यक्ति का नाम ले रही थी मृतका

मृतका के जीजा ने बताया कि रोशनी किसी महेंद्र नामक व्यक्ति का नाम ले रही थी। दोनों की दो-तीन साल से दोस्ती थी। उनका आरोप है कि उसी ने ही रोशनी का ये हाल किया था। राजू ने बताया कि रोशनी पूरी रात गली में घायल अवस्था में पड़ी थी। फोन बंद हो जाने के कारण संपर्क नहीं हो पाया था।

परिजन की शिकायत पर मुजेसर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। आरोपी की तलाश की जा रही है।

## शार्ट न्यूज

### सिक्किम में पंचायत चुनावों की शुरुआत

गंगटोक। सिक्किम में गुरुवार को पंचायत चुनाव शुरू हो गए तथा मतदाताओं में अपने मताधिकार को लेकर अच्छा खासा उत्साह नजर आया। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक राज्य के कुछ बूथों पर उत्सुक मतदाता निर्धारित समय से एक घंटे पहले ही पहुंच गए। तथाथांगचेन में सबसे अधिक 1,072 मतदाताओं की संख्या है। उन्होंने बताया कि पीठासीन अधिकारी द्वारा सत्यापन के बाद ही बूथों पर फोटोग्राफी और प्रेस को अनुमति दी जाएगी। अब तक मतदान अब तक शांतिपूर्ण रहा है।

### मर्चेंट नेवी में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करने वाला आरोपी राजस्थान से गिरफ्तार

नैनीताल। मर्चेंट नेवी में नौकरी दिलाने के नाम पर 1.35 लाख रुपये की ठगी के आरोपी को पिथौरागढ़ पुलिस ने अलवर राजस्थान से गिरफ्तार किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार भड़कटिया, पिथौरागढ़ निवासी किशन सिंह ने 15 अक्टूबर को जाजरदेवल थाना पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया कि मर्चेंट नेवी में नौकरी दिलाने के नाम पर अज्ञात व्यक्ति ने उससे 1.35 लाख रुपये की धोखाधड़ी की है। आरोपी ने उसे मर्चेंट नेवी में नौकरी दिलाने और दस्तावेज बनाने के नाम पर 1.35 लाख रुपये ठगे हैं। आरोपी ने टेलीग्राम के माध्यम से मर्चेंट नेवी बताया कि वह कैप्टन संजीव बोल रहा है और मर्चेंट नेवी में पद रिक्त होने और जहाज गोल्डन मैरीन विशाखापट्टनम आने और तब तक दस्तावेज तैयार करने की बात कही। इसके बाद पुलिस ने धारा 420 और सूचना प्रौद्योगिकी की धारा 66डी के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच में आरोपी की पहचान संजय कुमार बैरवा निवासी अलवर, राजस्थान के रूप में हुई। पुलिस टीम ने आरोपी को अलवर से गिरफ्तार कर लिया।

### इसरो ने किया शक्तिशाली क्रायो इंजन का परीक्षण

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शक्तिशाली सीई-20 क्रायोजेनिक इंजन का परीक्षण किया है। इसरो ने इसके बारे में गुरूवार को जानकारी दी। इसरो ने अपने बयान में कहा कि स्वदेशी निर्मित क्रायोजेनिक इंजन का विकसित होने से यह सबसे भारी रॉकेट लॉन्च व्हीकल मार्क (एलएमवी-3) को ताकत देगा। इससे एलएमवी-3 की अतिरिक्त प्रणोदक क्षमता के साथ पेलोड ले जाने की क्षमता को 450 किलोग्राम तक बढाया गया। इसमें थ्रस्ट कंट्रोल वाल्व (टीसीवी) वाले पिछले इंजनों की तुलना में बड़े बदलाव किए गए हैं, ताकि सिस्टम में थ्रस्ट कंट्रोल शुरू किया जा सके। इसरो ने कहा कि इसके अलावा 3डी प्रिंटेड एलओएक्स और एलएच2 टर्बाइन एग्जॉस्ट केसिंग को पहली बार इंजन में शामिल किया गया है। भीषण आग के पीछे का उद्देश्य यह परीक्षण करना था कि इंजन अतिरिक्त प्रणोदक लोडिंग के साथ 450 किलोग्राम तक की पेलोड क्षमता का वहन कर सकता है। रॉकेट फायर होने के बाद इसरो ने कहा, पहले 40 सेकेंड में 20 टन का थ्रस्ट और इसके बाद टीसीवी को घुमाकर थ्रस्ट लेवल को 21 8 टन तक बढ़ाया। इस परीक्षण के दौरान इंजन और बाकी हिस्सों ने भी सुचारू रूप से काम किया।

### कोयले के खनन के लिए नहीं जारी किया लाइसेंस : मेघालय सरकार

शिलांग। मेघालय सरकार ने बुधवार को उच्च न्यायालय को बताया कि राज्य में किसी भी रूप में कोयले के खनन के लिए कोई लाइसेंस जारी नहीं किया गया है। अवैध कोयला खनन पर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान महाधिवक्ता अमित कुमार ने बताया कि सरकार ने कोयला खनन करने के लिए लाइसेंस की मांग करने वाले कई दलों के आवेदनों को केंद्र को भेज दिया है। केंद्र सरकार ने आवेदनों को एक विशेषज्ञ निकाय के पास भेज दिया है। राज्य सरकार ने अदालत को यह भी बताया कि उसने ट्रक मालिकों के संघों को चेतावनी दी है कि अगर अवैध रूप से खनन किए गये नये कोयले के परिवहन का कोई प्रयास किया गया तो ट्रक ड्राइवरों और मूल संघ के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले खनन किए गए कोयले की नीलामी के संबंध में महाधिवक्ता ने दलील दी कि राज्य द्वारा दायर पिछले हलफनामों में इंगित समय सीमा के संदर्भ में पर्याप्त प्रगति हुई है। महाधिवक्ता ने कहा, इस मामले में उच्च न्यायालय के पिछले आदेशों का पालन करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। विशेष रूप से कोयले की नीलामी से संबंधित और यह सुनिश्चित करने के लिए कि राज्य में कोयले का खनन बिल्कुल नहीं है या कोयले का कोई परिवहन नहीं है। न्यायालय ने मामले पर अगली सुनवाई की तारीख सात दिसंबर तय की है।

### द्रौपदी मुर्मू ने की श्री जगन्नाथ मंदिर में पूजा अर्चना

पुरी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुरुवार को ओडिशा के पवित्र शहर पुरी में 12वीं शताब्दी के श्री जगन्नाथ मंदिर में पूजा अर्चना की। मुर्मू दो दिन के दौरे पर आज भुवनेश्वर पहुंचीं। जहां राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल, मुख्यमंत्री नवीन पटनायक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया। राष्ट्रपति को पारंपरिक गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। राष्ट्रपति ने अपनी पुत्री, ओडिशा के राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ दोपहर 12 बजकर 30 मिनट मंदिर में प्रवेश किया। राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद इस पवित्र शहर पुरी की यह उनका पह दौरा है। राष्ट्रपति को मंदिर के गर्भगृह गयीं जहां उन्होंने भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा की पूजा की। श्रीमती मुर्मू ने देवताओं को पवित्र तुलसी की माला अर्पित की। मंदिर परिसर के अंदर स्थित देवी विमला और महालक्ष्मी की भी पूजा की। वायु सेना के एक विशेष हेलीकॉप्टर द्वारा भुवनेश्वर से तलबानिया हवाई पट्टी पहुंचने के बाद राष्ट्रपति मुर्मू सड़क मार्ग से सीधे श्री जगन्नाथ मंदिर के लिए रवाना हुईं। मारीचिकोट चक से मंदिर तक ग्रैंड रोड पर एक किमी की दूरी तक राष्ट्रपति की एक झलक पाने के लिए सड़क के दोनों ओर लोगों की भीड़ दिखी। इस दौरान राष्ट्रपति ने उत्साहित जनता का हाथ हिलाकर अभिवादन किया।

### किसान से दो लाख रुपये छीनकर भाग रहे बदमाश मौके पर ही गिरफ्तार

मुरैना। मध्यप्रदेश के मुरैना शहर में अपनी बेटी की शादी के लिये जेवर लेने ई रिक्सा में बैठकर जा रहे एक किसान से दो लाख रुपये छीनकर भागे बदमाश को पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए मौके पर ही पकड़ लिया और किसान को रुपये वापिस दिलाये। पुलिस सूत्रों ने आज यहां बताया कि हेतमपुर निवासी किसान कंपोटर सिंह अपनी बेटी की शादी के लिये जेवर खरीदने ई -रिक्शा में बैठकर सर्राफा बाजार जा रहा था। तभी कोतवाली थाना क्षेत्र में स्थित गोपीनाथ की पुलिया के समीप साथ ही ई -रिक्शा में बैठा एक बदमाश किसान से दो लाख रुपये छीनकर भागने लगा। उसी दौरान सामने से आ रही पुलिस वाहन में बैठे पुलिस कर्मियों ने उसे मौके पर ही रंगे हाथ पकड़ लिया और किसान के रुपये वापिस दिलाये। पुलिस ने आरोपी अर्जुन गिहार निवासी विष्णु का पुरा बाह जिला आगरा उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार कर लिया है।

### चार नक्सली अलग-अलग स्थानों से गिरफ्तार

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा में सुरक्षा बलों ने जिले के अलग-अलग क्षेत्रों से चार नक्सलियों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर विस्फोटक सामग्रियां बरामद की। चारों नक्सली पिछले कई साल से सक्रिय थे। पकड़े गए नक्सलियों न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार जिले के भेजी थाना क्षेत्र से जिला बल, डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और कोबरा 202 के जवान कल सर्चिंग के लिए निकले थे। गच्छनपल्ली इलाके में जवानों को देख कुछ लोग छुपने की कोशिश कर रहे थे। जवानों ने घेराबंदी कर तीन व्यक्तियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उनकी पहचान कड़ती दुर्गा ( मिलिशिया प्लाटून सदस्य), वेट्टी सोमा (जीआरडी कमांडर) माड़वी बुधरा के रूप में हुयी। पकड़े गए नक्सलियों ने बताया कि वे पिछले कई वर्षों से नक्सल संगठन के लिए काम कर रहे हैं। बाद में इनकी निशानदेही पर जवानों ने एक टिफिन बम, इलेक्ट्रानिक डेटोनेटर, कार्डेक्स, वायर, इलेक्ट्रानिक वायर बरामद किया। दूसरी ओर चिंतलनार इलाके में 201 कोबरा और जिला बल की टीम ने सवगुड़ा के जंगल में एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ा। पूछताछ करने पर उसकी पहचान मड़कम बोड़डा मिलिशिया सदस्य के रूप में हुयी है।

# श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अपमान पर डेराप्रेमी की हत्या

## दुकान खोलते वक्त ताबड़तोड़ फायरिंग, गैंगस्टर गोल्डी बराड़ ने ली जिम्मेदारी

चंडीगढ़। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी केस के आरोपी डेरा प्रेमी प्रदीप सिंह की गुरुवार को पंजाब के फरीदकोट में हत्या कर दी गई। प्रदीप को उस समय निशाना बनाया गया, जब वह अपनी डेयरी ( दुकान) खोल रहा था।

2 मोटरसाइकिल सवार 5 बदमाशों ने उन पर कई गोलियां चलाईं। इस हमले में गनमैन समेत तीन लोग जख्मी हो गए हैं। इनमें पास का एक दुकानदार भी शामिल है। उधर, इस हत्या की जिम्मेदारी गैंगस्टर गोल्डी बराड़ ने ली है। गोल्डी बराड़ पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला के कत्ल का मास्टरमाइंड है।

प्रदीप ने 2015 में बरगाड़ी गांव के गुरुद्वारा साहिब से श्री गुरु ग्रंथ साहिब को चोरी कर अंग फाड़ दिए थे। इस पर सिख समुदाय ने विरोध किया था। बाद में उस पर केस दर्ज हुआ और उसे जेल भेज दिया गया। अभी जमानत पर बाहर है। जान से मारने की धमकी के बाद प्रदीप को सुरक्षा मिली हुई थी।

### बिना नंबर प्लेट की बाइक से आए थे, रेकी की थी

डेरा प्रेमी को मारने बदमाश बिना नंबर की बाइक पर आए थे। पुलिस का कहना है कि जिस तरह से डेरा प्रेमी की हत्या की गई, उससे लगता है कि बदमाशों ने उनके रुटीन की रेकी की थी। उन्हें पता था कि प्रदीप सुबह के वक्त दुकान खोलता है। सीसीटीवी फुटेज में बदमाश वहीं घूमकर इंतजार करते देखे गए। जैसे ही डेरा प्रेमी ने दुकान खोली तो उसकी गोलियां मारकर हत्या कर दी गई।

### गैंगस्टर ने कहा- बेअदबी इंसाफ नहीं मिला, इसलिए हत्या की

सोशल मीडिया पोस्ट में गोल्डी बराड़ के नाम से दावा किया गया कि उन्हें बेअदबी केस में इंसाफ नहीं मिला, इसलिए ऐसा करना पड़ा। इस पोस्ट में गनमैन के घायल होने पर अफसोस जताया। बेअदबी के आरोपियों की सुरक्षा देने पर सवाल उठाए गए। हालांकि, यह पोस्ट बराड़ ने की या किसी और ने, पंजाब पुलिस की साइबर सेल इसकी जांच कर रही है।

इससे पहले जेल के भीतर भी बेअदबी के आरोपी डेरा प्रेमी महिंदरपाल बिट्टू का कत्ल हो चुका है।

डेरा प्रेमी बिट्टू को बरगाड़ी में श्री गुरू ग्रंथ साहिब की बेअदबी के केस में पकड़ा गया था। 22 जून 2019 को बिट्टू का नाभा जेल में कत्ल कर दिया गया था।

## 'चीन से ज्यादा अमेरिकी वीज़ा मिलेंगे भारत को'

नयी दिल्ली। कोविड महामारी के बाद तेजी से सामान्य हो रही परिस्थितियों के बाद अमेरिका ने भारत के लिए वीज़ा आवेदनों को तेज़ी से निपटाने के लिए विशेष इंतजाम किये हैं और आशा जतायी है कि अगले वर्ष गर्मियों तक भारत चीन को पछाड़ कर दूसरा सर्वाधिक अमेरिकी वीज़ा पाने वाला देश बन जाएगा। नयी दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास के एक वरिष्ठ अधिकारी ने गुरुवार को यहां कहा कि अमेरिका की सरकार के लिए भारत नंबर एक प्राथमिकता वाला देश है। हम नवंबर मध्य में वीज़ा स्लॉट खोलने जा रहे हैं और अगले वर्ष 2023 में अमेरिकी मिशन अधिक वीज़ा आवेदनों का न्यूनतम संभव समय में निस्तारण कर रहा होगा।

## नगर निगम ग्रेटर के महापौर उपचुनाव की प्रक्रिया पर लगी रोक

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में नगर निगम ग्रेटर के महापौर के उपचुनाव के लिए आज मतदान हुआ लेकिन उच्च न्यायालय के राज्य सरकार के मेयर सौम्या गुर्जर को बर्खास्त करने के आदेश को रद्द करने के बाद राज्य निर्वाचन आयोग ने उपचुनाव प्रक्रिया को रोक दिया है।

इस संबंध में जारी किए निर्वाचन आयोग ने अपने आदेश में कहा कि उच्च न्यायालय द्वारा राज्य सरकार के श्रीमती गुर्जर को महापौर पद से हटाये जाने के जारी आदेश को अपास्त कर दिया गया हैं और इस स्थिति के मद्देनजर अधिवक्ता ने निर्वाचन विभाग से नगर निगम ग्रेटर के महापौर पद के लिए आयोग द्वारा करवाये जा रहे उपचुनाव को रोकने का निवेदन किया हैं। चूंकि न्यायालय के आदेश की अभी कॉपी प्राप्त नहीं हुई हैं, अत: उपचुनाव प्रक्रिया को तुरंत रोक दिया जाये। कॉपी प्राप्त होने पर अगली कार्रवाई की जायेगी।

इसके बाद चुनाव प्रक्रिया को रोक दिया गया। हालांकि उपचुनाव के लिए सुबह दस बजे मतदान शुरु हुआ और इस दौरान 146 पार्षदों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

# कैथल डेरे को दान किया डेढ़ साल का बच्चा वापस

## चाइल्ड वेल्फेयर कमेटी ने पिता को चेतावनी देकर छोड़ा; हर 15 दिन बाद फॉलोअप लेगी अंबाला यूनिट

चंडीगढ़। कैथल में डेरे को दान किया गया डेढ़ माह का बच्चा दंपति को वापस दे दिया गया। चाइल्ड वेलफेयर कमेटी ने आवश्यक कागजी कार्रवाई के बाद बच्चा पिता को सौंप दिया। कमेटी की ओर से पिता को चेतावनी दी गई कि यदि दोबारा उसके द्वारा ऐसा किया जाता है तो उसके खिलाफ लीगल एक्शन लिया जाएगा।

### डीसीपी अंबाला 15 दिन में लेगा फॉलोअप

CWC के चेयरमैन राणा बंसल ने बताया कि दंपति को बुलाया गया था।

जेजे एक्ट के तहत सभी कागजी कार्रवाई की गई है। पिता व अन्य परिजनों से इस मामले में स्वघोषणा पत्र लिया गया है। इसके साथ ही बच्चे के भविष्य को देखते हुए डिस्टिक चाइल्ड प्रोटेक्शन अंबाला को हर 15 दिन में बच्चे का फॉलोअप लेने को कहा गया है।

### 28 अक्टूबर को दान दिया बच्चा

कैथल जिले के बाबा राजपुरी डेरे में अंबाला के रहने वाले दंपत्ति ने 28 अक्टूबर को बच्चा दान दिया। डेरे के महंत हीरापुरी ने बताया कि बच्चे को दंपत्ति ने इच्छा से बाबा की गद्दी को चढ़ाया है। विरोधी डेरे को बदनाम करने के लिए अफवाह फैला रहे हैं।

### इच्छा से दान किया बेटा

डेरे को बेटा देने वाले पिता संजय चौहान ने बताया कि उन्होंने अपनी मर्जी से बेटे का दान किया है। हमने पहले ही यह बात तय कर दी थी। बच्चा बाद में बड़ा होकर नहीं जाता, इसलिए अभी दे दिया है। बाबा का उनके ऊपर कोई दबाव नहीं है। संजय ने कहा कि बाबा की कृपा रही तो आगे और भी बच्चे होते रहेंगे।

# हरियाणा में इंटर स्टेट एटीएम लूट गैंग का पर्दाफाश : 6 सदस्य गिरफ्तार

## महाराष्ट्र, असम और गुजरात से डेढ़ करोड़ लूट की वारदातें कबूली

चंडीगढ़। हरियाणा पुलिस ने इंटर स्टेट एटीएम लूट गैंग का पर्दाफाश किया है। नूंह जिले से पुलिस ने गैंग के 6 अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता मिली है। पकड़े गए लुटेरों ने महाराष्ट्र, असम और गुजरात में 7 एटीएम से 1.5 करोड़ रुपए लूट की वारदात कबूल की है।

### यूपी हरियाणा में की 11 वारदातें

एटीएम लुटरों की गिरफ्तारी से यूपी के नोएडा, गाजियाबाद और हरियाणा के रेवाड़ी, गुरुग्राम और नूंह में हाईवे डकैती की करीब 11 घटनाओं का भी खुलासा हुआ है।

हरियाणा पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि कई राज्यों की पुलिस लंबे समय से इस एटीएम गिरोह की तलाश कर रही थीं।

हरियाणा पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 4 देसी तमंचा, 4 कारतूस, एक एटीएम कटर मशीन, फॉग स्प्रे और कई अन्य उपकरण भी बरामद किए हैं। पुलिस ने नूंह जिले में अरावली पहाड़ियों पर स्थित एक धर्मकांटा के पास बैठकर राहगीरों को लूटने की साजिश रच रहे सभी बदमाशों को गिरफ्तार किया।

### गैंग सरगना के खिलाफ 24 मुकदमे

अभी तक की जांच में खुलासा हुआ है कि 11 साल पहले क्राइम की दुनिया में कदम रखने वाले गैंग के सरगना साजिद उर्फ काला के खिलाफ दो दर्जन आपराधिक मामले दर्ज हैं। वह उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और दिल्ली में दर्ज करीब 15 मामलों में भी फरार चल रहा है। काला ने बताया कि एटीएम कटर मशीन की मदद से एटीएम चोरी व लूट की वारदातों में गिरोह काफी समय से सक्रिय था।

### इसरो ने किया शक्तिशाली क्रायो इंजन का परीक्षण

चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शक्तिशाली सीई-20 क्रायोजेनिक इंजन का परीक्षण किया है। इसरो ने इसके बारे में गुरूवार को जानकारी दी। इसरो ने अपने बयान में कहा कि स्वदेशी निर्मित क्रायोजेनिक इंजन का विकसित होने से यह सबसे भारी रॉकेट लॉन्च व्हीकल मार्क (एलएमवी-3) को ताकत देगा। इससे एलएमवी-3 की अतिरिक्त प्रणोदक क्षमता के साथ पेलोड ले जाने की क्षमता को 450 किलोग्राम तक बढाया गया । इसमें थ्रस्ट कंट्रोल वाल्व वाले पिछले इंजनों की तुलना में बड़े बदलाव किए गए हैं, ताकि सिस्टम में थ्रस्ट कंट्रोल शुरू किया जा सके। इसरो ने कहा कि इसके अलावा 3डी प्रिंटेड एलओएक्स और एलएच2 टर्बाइन एग्जॉस्ट केसिंग को पहली बार इंजन में शामिल किया गया है। भीषण आग के पीछे का उद्देश्य यह परीक्षण करना था कि इंजन अतिरिक्त प्रणोदक लोडिंग के साथ 450 किलोग्राम तक की पेलोड क्षमता का वहन कर सकता है।

## जनजातीय क्षेत्रों में बर्फबारी के चलते चुनाव आयोग की मुश्किलें बढ़ी

शिमला। चुनाव से दो दिन पहले हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र लाहुल स्पीति, किन्नौर और भरमौर का पांगी क्षेत्र में बर्फबारी होने से इन इलाकों में शीतलहर का प्रकोप बढ़ गया है और केलांग में न्यूनतम तापमान शून्य से कम 2.6 डिग्री तक पहुंच गया है।

मौसम विभाग के अनुसार तीन जिलों में आज भी बारिश और बिजली गिरने का यलो अलर्ट जारी किया है। जनजातीय क्षेत्रों में बर्फबारी से चुनाव आयोग की दिक्कतें भी बढ़ गई हैं। प्रदेश में 12 नवंबर को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होना है। जिला चंबा के जनजातीय क्षेत्र पांगी में सुबह करीब आधा फुट हिमपात हुआ है। बर्फबारी के कारण पांगी घाटी के लोगों का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। ऊपरी क्षेत्र में करीब एक फुट तक बर्फबारी हुई है।

इस बर्फबारी के बाद पांगी घाटी में बिजली समेत पानी की आपूर्ति ठप हो गई है। बर्फबारी के बाद घाटी की छह से अधिक पंचायतों में बिजली की आपूर्ति भी ठप पड़ गई है। किलाड़ मुख्यालय में आधा फुट बर्फबारी हुई। इसके अलावा साच पास सहित पांगी की ऊपरी चोटियों पर तीन से चार फीट तक ताजा हिमपात हुआ है। केलांग में 10 सेंटीमीटर, गौन्धला में 15 सेंटीमीटर और हंसा में पांच सेंटीमीटर वर्फबारी हुई है।

प्रदेश में शिंकुला, बारालाचा और रोहतांग दर्रे में एक फुट से अधिक बर्फबारी हुई है। ताजा बर्फबारी के बाद तीनों दर्रों को पर्यटकों की आवाजाही के लिए पूरी तरह से बंद कर दिया है। बर्फबारी से शिमला और कई अन्य स्थानों पर ठंड बढ़ गई है। प्रदेश में मनाली में नौ मिलीमीटर, डलहौजी में आठ, चंबा में 7.5 और खड़ा पत्थर में एक मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है।

मौसम विभाग के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार वीरवार को प्रदेश के तीन जिलों कांगड़ा, मंडी और शिमला में आंधी तथा बिजली गिरने का यलो अलर्ट जारी किया गया है।

## छत्तीसगढ़ में विद्यार्थियों को अब एक ही बार जारी होगा जाति प्रमाण पत्र

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष जाति प्रमाण पत्र जारी किये जाने के स्थान पर एक ही बार जाति प्रमाण पत्र जारी किये जाने का निर्णय लिया हैं। विद्यार्थियों को जारी जाति प्रमाण पत्र स्थायी अभिलेख की तरह होंगे। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा इस संबंध में कलेक्टरों को जारी किए गए निर्देश में स्पष्ट किया गया है कि स्थाई सामाजिक प्रास्थिति प्रमाण पत्र (जाति प्रमाण पत्र) की मान्यता समय के द्वारा सीमित नहीं होगी अर्थात् यह कालातीत नहीं होगा यह सर्वदा के लिए होगा। यह एक तरह से स्थाई अभिलेख है। बार-बार जाति प्रमाण जारी किये जाने की आवश्यकता नही है. जाति प्रमाण पत्र खो जाने की स्थिति में प्राधिकृत अधिकारी द्वारा इसका डुप्लीकेट भी जारी किया जा सकेगा।

# कश्मीर में पाकिस्तानी से जुड़े आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़

श्रीनगर। सुरक्षा बलों ने उत्तरी कश्मीर में एक आतंकवादी वित्त पोषण और भर्ती मॉड्यूल का भंडाफोड करते हुए इसको चलाने वाले तहरीक-ए-उल मुजाहिदीन समूह के छह सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

पुलिस ने कहा कि कश्मीर के युवाओं को आतंकवादी समूह में शामिल करने वाला भर्ती मॉड्यूल एक नकली गैर सरकारी संगठन है, जो इस्लाही फलाही रिलीफ ट्रस्ट (आईएफआरटी) की आड़ में एक रैकेट चला रहा था। कुपवाड़ा पुलिस ने सेना की 21 राष्ट्रीय राइफल्स और 47 आरआर के साथ मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया।

उन्होंने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर, कुपवाड़ा के चीरकोट इलाके के रहने वाले एक व्यक्ति बिलाल अहमद डार से पूछताछ के दौरान पता चला कि वह उत्तरी कश्मीर के विभिन्न हिस्सों के पांच अन्य लोगों के साथ आईएफआरटी नामक एक नकली एनजीओ की आड़ में एक आतंकी फंडिंग रैकेट चला रहा है, जिसने गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने का दावा किया था।

पुलिस ने बताया कि डार ने अपने अन्य साथियों के रूप में लंगेते हंदवाड़ा लंगेते कचलू से वाहिद अहमद भट्ट, बारामूला सिंहपोरा से जावेद अहमद नज़र, सोपोर ब्रथ के मुश्ताक अहमद नज़र, सोपोर मुंडजी से बशीर अहमद मीर और चीरकोट से जुबैर अहमद डार के नामों का खुलासा किया है।

बयान में बताया गया कि उत्तरी कश्मीर में तहरीक-ए-उल मुजाहिदीन जम्मू-कश्मीर (टीयूएमजेके) के संचालन में सहायता के लिए पाकिस्तान स्थित संचालकों द्वारा मॉड्यूल का समन्वय किया जा रहा था। बयान के मुताबिक, समूह के आगे की योजना विभिन्न गांवों में जाकर, कार्यक्रमों और सभाओं का आयोजन करना था ताकि दान के लिए धन जुटाया जा सके।

## उच्च न्यायालय ने सौम्या गुर्जर को बर्खास्त करने के राज्य सरकार के आदेश को किया रद्द

जयपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार द्वारा जारी जयपुर नगर निगम ग्रेटर की महापौर सौम्या गुर्जर की बर्खास्तगी के आदेश को रद्द कर दिया है।

न्यायाधीश महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने आज यह आदेश दिए। न्यायालय ने राज्य सरकार के गत 27 सितंबर को जारी गुर्जर को महापौर पद से हटाये जाने के आदेश को रद्द करते हुए याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका देकर नए सिरे से आदेश जारी करने के आदेश दिए है।

उल्लेखनीय है कि गुर्जर ने महापौर पद से हटाये जाने के बाद इसे न्यायालय में चुनौती दी थी। उन्होंने महापौर के पद पर हो रहे उपचुनाव को लेकर भी चुनौती दी थी। उनके अधिवक्ता एम एस सहारन के अनुसार इस मामले की सुनवाई में आज न्यायालय ने उनकी दलीले सुनी और

उन पर सहमति जताते हुए यह आदेश जारी किए।

इसके बाद गुर्जर के वकील श्री सहारन निर्वाचन विभाग से उपचुनाव की प्रक्रिया को रोकने का निवेदन किया और इसके बाद निर्वाचन विभाग ने उपचुनाव के मतदान के बाद आगे की प्रक्रिया को रोक देने के आदेश जारी किए।

निर्वाचन विभाग के आदेश के बाद उपचुनाव के मतदान के बाद शुरु हुई मतगणना को रोक दिया गया और मतदान को लिफाफों में सील कर दिया गया। गौरतलब है कि दो वर्ष पहले सौम्या गुर्जर जयपुर नगर निगम ग्रेटर की पहली महापौर चुनी गई थी और गत वर्ष चार जून को निगम कार्यालय में तत्कालीन आयुक्त यज्ञमित्र सिंह देव के साथ श्रीमती गुर्जर और अन्य पार्षदों में विवाद का मामला सामने आने के बाद इसके अगले दिन पांच जून को सरकार ने मामले में सौम्या एवं तीन पार्षदों के खिलाफ शिकायत की जांच स्वायत शासन निदेशालय को दी थी। इसके बाद छह जून को इस मामले में इन चारों को दोषी मानते निलंबित कर न्यायिक जांच शुरु कर दी थी।

इसके बाद राज्य सरकार ने सात जून को पार्षद शील धाभाई को कार्यवाहक महापौर बना दिया, जिसे गुर्जर ने उच्च न्यायालय में चुनौती दी लेकिन 28 जून को न्यायालय ने इस मामले में रोक लगाने से मना कर दिया।

## कंबोडिया की यात्रा पर जाएंगे धनखड़

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 19वीं आसियान भारत शिखर बैठक और पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने कल कंबोडिया की राजधानी नोमपेन्ह जाएंगे। विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) सौरभ कुमार ने गुरुवार को यहां बताया कि श्री धनखड़ 11 से 13 नवंबर तक कंबोडिया की यात्रा पर रहेंगे। इस यात्रा के दौरान वह नोम पेन्ह में होने वाले 19वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 17 वें पूर्व एशिया सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। उप राष्ट्रपति के साथ विदेश मंत्री एस. जयशंकर भी होंगे। उन्होंने बताया कि भारत-आसियान स्मारक सम्मेलन का आयोजन 12 नवंबर को दोनों पक्षों के द्विपक्षीय संबंधों के 30 वर्ष पूरा होने के अवसर पर किया जा रहा है। यह वर्ष आसियान-भारत मित्रता वर्ष के रुप में भी मनाया जा रहा है। उपराष्ट्रपति 13 नवंबर को 17 वें पूर्व एशिया सम्मेलन में भाग लेंगे।

## सबसे स्थिर सरकारें कांग्रेस ने दी, भाजपा ने अस्थिरता फैलाई : प्रियंका

एजेंसी

शिमला। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि आजादी से अब तक सबसे स्थिर सरकारें कांग्रेस ने दी हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अस्थिरता फैलाई है।

उन्होंने सिरमौर जिले के सतौन में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, इस प्रदेश को जब बनाया गया तो सभी ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से यह कहा कि यह प्रदेश चल नहीं पाएगा। श्रीमती गांधी आपके भरोसे इस प्रदेश को बनाया, यहां के बुजुर्गों, कर्मचारियों, नौजवानों ने यह प्रदेश बनाया लेकिन आज पूरा भारत देखता है तो सबसे शिक्षित और जागरुक जनता हिमाचल की है।

वाड्रा ने भाजपा सरकार पर हमला बोला और कहा कि हिमाचल प्रदेश 70 हजार करोड़ रुपये के कर्ज में है। यहां की जनता ने बड़ी मेहनत से अपने

बच्चों को पढ़ाया ताकि उनका भविष्य बने, लेकिन प्रदेश में 30 लाख में से 15 लाख युवा बेरोजगार हैं। पांच सालों से 63,000 सरकारी पद खाली पड़े हैं।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की नीयत सही नहीं है। छत्तीसगढ़, राजस्थान में ओपीएस लागू की गई है, हिमाचल प्रदेश में भी लागू की जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता कहते हैं कि इसके लिए पैसे ही नहीं हैं। श्रीमती वाड्रा ने पूछा कि भाजपा के उद्योगपति मित्रों के कर्ज माफ करने के लिए लाखों करोड़ रुपये कहां से आते हैं। इस सरकार ने रोजगार, पेंशन छीनी है और महंगाई बढ़ाई है।

## शार्ट न्यूज

### नोएडा में बुजुर्ग बिजनेसमैन ने पत्नी के साथ की सुसाइड, बढ़ते कर्ज से थे परेशान

नोएडा। नोएडा से एक दिल दहलाने वाली खबर सामने आई है। लोहे का बिजनेस करने वाले पति-पत्नी ने कथित तौर पर सुसाइड कर ली है। 60 साल के दीपक गुप्ता और उनकी 59 साल की पत्नी मृदुला गुप्ता ने कर्ज से परेशान होकर मौत को गले लगा लिया। पुलिस ने बताया कि यह घटना बिसरख थाना क्षेत्र में स्थित फ्यूजन होम्स सोसायटी की है। पुलिस ने बताया कि सुसाइड की सूचना पाते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने वहां देखा कि दीपक का शव फांसी के फंदे से लटका हुआ है। वहीं उनकी पत्नी मृदुला का शव बिस्तर पर पड़ा हुआ है। आज सुबह हुई इस घटना के समय घर में दंपती के बेटा-बहू और बेटियां भी थी। यानी जब दीपक और मृदुला सुसाइड कर रहे थे उस वक्त परिवार के बाकी लोग भी घर में थे। थाना प्रभारी ने बताया कि शुरूआती जांच में पता चला है कि गुप्ता की ईकोटेक-12 लोहे का सामान बनाने की फैक्टरी है और वह कर्ज में डूबे होने के कारण काफी तनाव में थे। उन्होंने बताया कि पुलिस इस संबंध में सभी पहलुओं से जांच कर रही है।

### पानी पीने के लिए महिला के घर में घुसे, गहने और नकदी लेकर हुए फरार

नई दिल्ली। दिल्ली के रोहिणी इलाके में एक महिला के घर में घुसकर लूटपाट की घटना सामने आई है। पुलिस ने बताया कि दो-तीन लोग एक 52 साल की महिला के घर में पानी पीने के बहाने घुस गए और उसके सोने के गहने और नकदी लूट लिए। पुलिस ने बताया कि 52 साल की महिला विधवा हैं और किराने की दुकान चलाती हैं। महिला की बेटी बाहर रहती है। घर पर महिला अकेले ही रहती हैं। पुलिस कमिश्नर गुरिकबल सिंह सिद्धू ने बताया कि अभी यह पता नहीं चल पाया है कि महिला को धमकाने के लिए किसी तरह के हथियार का इस्तेमाल किया गया था या नहीं। मामले की जांच की जा रही है। डीसीपी ने कहा कि घटना का कोई सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध नहीं है, लेकिन पुलिस ने कहा कि उनके पास मजबूत सुराग हैं और जल्द ही संदिग्धों को पकड़ लिया जाएगा। प्रेम नगर पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 392 (डकैती) और 34 (सामान्य इरादा) के तहत मामला दर्ज किया गया है और आगे की जांच जारी है।

### जेल में ही रहेंगे सत्येंद्र, मनी लॉन्ड्रिंग मामले में न्यायिक हिरासत 27 अगस्त तक बढ़ी

नई दिल्ली। मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जेल में बंद आम आदमी पार्टी (आप) के नेता और दिल्ली के कैबिनेट मिनिस्टर सत्येंद्र जैन अभी जेल में ही रहेंगे। दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को एक बार फिर जैन की न्यायिक हिरासत 27 अगस्त तक के लिए बढ़ा दी है। हालांकि, अदालत ने आज उनकी पत्नी पूनम जैन को नियमित जमानत प्रदान कर दी है, पहले उन्हें अंतरिम जमानत दी गई थी। केजरीवाल सरकार में बिना विभाग के मंत्री 57 वर्षीय सत्येंद्र जैन को ईडी ने 30 मई को मनी लॉन्ड्रिंग प्रिवेंशन एक्ट (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया था। पहले उन्हें पहले पुलिस हिरासत में और उसके बाद न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। बता दें कि, ईडी ने सीबीआई द्वारा 24 अगस्त, 2017 को दर्ज एफआईआर के आधार पर सत्येंद्र जैन एवं अन्य के खिलाफ धन शोधन रोकथाम की धाराओं के तहत जांच शुरू की थी। सीबीआई ने आरोप लगाया था कि दिल्ली सरकार में मंत्री रहने के दौरान 14 फरवरी, 2015 से 31 मई, 2017 के बीच जैन ने आय से अधिक संपत्ति अर्जित की। ईडी ने 27 जुलाई को स्पेशल मनी लॉन्ड्रिंग प्रिवेंशन एक्ट (पीएमएलए) कोर्ट में अपनी चार्जशीट दायर की थी।

### ट्विन टावरः नोएडा अथॉरिटी की सीईओ ने बताया, सोसाइटी की बाउंड्री को पहुंचा नुकसान

नई दिल्ली। फ्लैट खरीदारों के लंबे समय तक चले संघर्ष के बाद आखिरकर नोएडा सेक्टर 93 के ट्विन टावर्स को ढहा दिया गया है। इसको गिराने के लिए 10 सीनियर इंजिनयर्स की निगरानी में बड़ी तैयारी की गई थी। आसपास की इमारतों को नुकसान से बचाने के लिए हर प्रयास किए गए और इसमें सफलता भी मिली। नोएडा अथॉरिटी की सीईओ रितू माहेश्वरी ने कहा कि इस डिमोलिशन की वजह से किसी इमारत को नुकसान नहीं पहुंचा है, हालांकि पास की एटीएस सोसाइडी की 10 मीटर की बाउंड्री क्षतिग्रस्त हो गई है। उन्होंने कहा, मलबे की वजह से सोसाइटी की बाउंड्री वॉल को नुकसान पहुंचा है इसके अलावा किसी अन्य तरह के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। माहेश्वरी ने कहा, आसपास के जिन लोगों के घरों को खाली करवाया गया था उन्हें शाम को 7 बजे के बाद अपने घरों में जाने की इजाजत दे दी जाएगी। यहां 100 से ज्यादा वॉटर टैंकर और 300 से ज्यादा सफाई कर्मचारियों को लगाया गया है।

### हिंडन पर पुल को जल्द पूरा होने की उम्मीद

**ग्रेटर नोएडा।** ग्रेटर नोएडा के एलजी चौक से नोएडा के सेक्टर-146 के बीच वाहनों की आवाजाही के लिए नए वैकल्पिक मार्ग का निर्माण जल्द होने के आसार हैं। गुरुवार को नोएडा-ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की सीईओ रितु माहेश्वरी ने हिंडन मुहाने तक जाकर निर्माणाधीन पुल और संपर्क रोड का जायजा लिया। किसानों से जमीन लेकर इसके निर्माण शीघ्र करने के लिए दोनों प्राधिकरणों के अधिकारियों को निर्देश दिए। परी चौक पर ट्रैफिक का दबाव कम करने के लिए नोएडा के सेक्टर-146 से लेकर ग्रेटर नोएडा के एलजी चौक के बीच नया वैकल्पिक मार्ग बन रहा है। इसके लिए सेतु निगम से हिंडन नदी पर पुल का निर्माण कराया जा रहा है। किसानों से जमीन न मिल पाने के कारण एप्रोच रोड का निर्माण अटका हुआ है। गुरुवार को नोएडा-ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की सीईओ रितु माहेश्वरी ने एसीईओ प्रेरणा शर्मा, एसीईओ अमनदीप डुली और एसीईओ आनंद वर्धन और प्रभारी जीएम प्रोजेक्ट सलिल यादव सहित प्राधिकरण के अन्य स्टाफ के साथ मौके पर जाकर जायजा लिया।

### पालतू कुत्ते ने सुरक्षाकर्मी को नोचा

ग्रेटर नोएडा। सेक्टर पी-2 की यूनिटेक होराइजन सोसाइटी में पालतू कुत्ते ने सुरक्षाकर्मी पर हमला कर दिया। कुत्ते ने सुरक्षाकर्मी के हाथ में काट लिया। आरोप है कि कुत्ते को घूमा रही महिला उस पर नियंत्रण नहीं रख सकी थी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। सोसाइटी के लोगों में इस घटना से रोष है। सोसाइटी के टावर एक की लॉबी में बुधवार की रात सुरक्षाकर्मी इंद्रेश ड्यूटी पर तैनात था। निवासियों ने बताया कि रात के समय महिला अपने पालतू कुत्ते को घूमा रही थी। इसी बीच कुत्ते ने सुरक्षाकर्मी पर हमला कर दिया। कुत्ते ने सुरक्षाकर्मी के हाथ में काट लिया। सुरक्षाकर्मी ने किसी तरह खुद को बचाया। इसके बाद महिला ने कुत्ते को पकड़ा। निवासियों का आरोप है कि महिला कुत्ते पर नियंत्रण नहीं रख सकी, जिसके चलते वह सुरक्षाकर्मी पर टूट पड़ा। लोगों का आरोप है कि सोसाइटी में लावारिस कुत्ते भी लोगों पर कई बार हमला कर चुके हैं। वह प्राधिकरण से इसकी शिकायत कर चुके हैं, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

### सेक्टर-112 में फैक्टरी मालिक से लूट का मामला झूठा निकला

नोएडा। सेक्टर-112 के पास फैक्टरी मालिक के साथ हुई लूट का मामला पुलिस जांच में झूठी निकला है। कर्ज में डूबे मालिक ने लूट की झूठी सूचना पुलिस को दी थी। जब पुलिस ने गहनता से जांच की तो सच्चाई सामने आई। पुलिस इस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है। सेक्टर-71 निवासी आयुष नैन की सेक्टर-65 में गारमेंट की फैक्टरी है। उन्होंने सात नवंबर दोपहर को पुलिस को सूचना दी थी कि सेक्टर-112 में बाइक सवार दो बदमाशों ने उनकी कार को ओवरटेक करके रोक लिया। आयुष ने आरोप लगाया था कि बदमाशों ने अवैध हथियार दिखाकर उनसे 1.83 लाख नकदी, एक सोने का कड़ा और दो सोने की आंगूठी लूट ली। एडीसीपी आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे, सर्विलांस विधि और पीड़ित के बयान के आधार पर छानबीन की। इस दौरान सामने आया कि लूट की सूचना गलत है। जब पीड़ित से सख्ती पूछताछ की गई तो उसने बताया कि वह कर्ज में डूबा हुआ था।

# इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनफॉर्मेशन और इनोवेशन के बिना आज के दौर में काम चलना मुश्किल : धनखड़

## उपराष्ट्रपति ने दिल्ली विश्वविद्यालय में किया तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का उद्घाटन

**प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत**

नई दिल्ली। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनफॉर्मेशन और इनोवेशन के बिना आज के दौर में काम चलना मुश्किल है। इन्फ्रास्ट्रक्चर आसान है, लेकिन इनोवेशन कठिन है। श्री धनखड़ बुधवार को दिल्ली विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनफॉर्मेशन एंड इनोवेशन फॉर बिल्डिंग न्यू भारत के उद्घाटन अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का आयोजन विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, गांधी स्मृति एवम दर्शन समिति तथा दिल्ली पुस्तकालय संघ और S.R.F.L.I.S. द्वारा संयुक्त रूप किया गया। समारोह के दौरान गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष विजय गोयल विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की।

जगदीप धनखड़ ने कहा कि इस कान्फ्रेंस में जब इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनफॉर्मेशन एंड इनोवेशन पर फोक्स किया जाएगा तो ज्वलंत मुद्दे कवर होंगे, इन तीनों के बिना आज के दिन काम चलना मुश्किल है। उन्होने कहा कि आज भारत पहले से अधिक गति से उभर रहा है। आज भारत को वो स्थान प्राप्त हो रहा है जो शदियों पहले था। दुनिया में भारतीयता और भारतियों का सम्मान बढ़ा है। उन्होने कहा कि देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तेजी से विकास कर रहा है। जो चीजें कभी सोची भी नहीं थी, वो आज हकीकत बन रही हैं। उपराष्ट्रपति ने कहा कि कोविड महामारी के दौर में जब लंदन और यूरोप सहित अनेकों देशों में हेल्थ स्ट्रक्चर फेल हो गए थे तब भी भारत ने मजबूती दिखाई। देश में 200 करोड़ वेक्सीन लगाना कोई आसान काम नहीं था, जिसे सरकार ने साकार किया है।

उन्होने मोदी के नेतृत्व में तकनीकी विकास की चर्चा करते हुए कहा कि पहले लोग बिल भरने से लेकर अनेकों सेवाओं के लिए घंटों तक लंबी लाइनों में लग कर समय बर्बाद करते थे, लेकिन सरकार की दूरगामी सोच के साथ डिजिटल इंडिया पहल ने सभी ऐसी सेवाओं को डिजिटल कर के सुगम बना दिया है। उन्होने कहा कि इन्फ्रास्ट्रक्चर हर चीज का मूल है, लेकिन कई बार ये दिखाई नहीं देता। देश में तकनीकी रूप से इसे मजबूत किया गया है। आज वन्देभारत ट्रेनों ने सफर के समय को बहुत ही कम कर दिया है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि आज जब दुनिया आर्थिक संकट झेल रही है, इस दौर में भी भारत शाइनिंग स्टार बन कर उभर रहा है। इसके पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकारी नीतियों में साकारात्मक बदलाव और देश के लोगों की कड़ी मेहनत ही है। आज गांधी के सपनों का भारत सामने नज़र आने लगा है। मोदी के नेतृत्व में लोगों ने बदलाव की शुरुआत की है। सपूर्ण स्वछता के साथ शुरू हुआ बदलाव आज भारत के विकास की यात्रा में जबर्दस्त आयाम दिखाता है। नए भारत में हर व्यक्ति का भविष्य उज्ज्वल नज़र आता है।

उन्होने ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का जिक्र करते हुए कहा कि 34 साल बाद यह क्रांतिकारी कदम उठाया गया है। शिक्षा नीति के निर्माण में सभी हितधारकों से इनपुट लिए गए हैं। इस नीति में पहली बार भारतीयता को समझा गया है। मातृ भाषा की ओर संकेत के द्वारा इस नीति के तहत देश की प्रतिभाओं को चमकने का मौका दिया गया है।

धनखड़ ने कहा कि आज दुनिया की अनेकों बड़ी कंपनियों में भारतीय व्यक्ति उच्च पदों पर आसीन हैं। ये सब भारत के प्रतिभाशाली लड़के और लड़कियां ही कर रहे हैं।

अब समय आ गया है जब युवाओं को इथेंटिक ओपिनियन मेकर बनना है। आपके पास आइडिया है तो पैसे की कोई कमी नहीं है। सरकार ने अनेकों योजनाओं से इसे सुलभ बना दिया है। आजादी के अमृत महोत्सव में आत्म निर्भर भारत एक नया कंसेप्ट बन कर उभरा है।

# छावला मामले में खराब जांच को लेकर डीसीडब्ल्यू ने भारत सरकार के गृहसचिव को पत्र लिखा

**आनंद राय/गौरवशाली भारत**

नई दिल्ली। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने भारत सरकार के गृह सचिव को एक पत्र लिखकर खराब जांच और मुकदमे में समस्याओं से संबंधित उन मुद्दों की जांच करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति की मांग की है, जिसके कारण उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली के छावला में 19 साल की लड़की के सामूहिक बलात्कार और हत्या के मामले में दोषियों को बरी कर दिया।

निचली अदालत व उच्च न्यायालय द्वारा मृत्युदंड दिए गए अभियुक्तों को उच्चतम न्यायालय द्वारा बरी करते हुए सुनवाई के दौरान कुछ चूकों के साथ-साथ दिल्ली पुलिस द्वारा की गई अनुचित जांच पर प्रकाश डाला। आयोग ने इसका उदाहरण देते हुए कहा कि उच्चतम न्यायालय ने कहा कि आरोपी व्यक्तियों की शिनाख्त परेड पुलिस द्वारा नहीं की गई थी, आरोपी व्यक्तियों की कार को जब्त करने से लेकर प्रयोगशाला भेजे जाने तक की हिरासत अस्पष्ट थी और मामले में फोरेंसिक नमूने पुलिस स्टेशन के मालखाने में रखे रहे। 13 दिन बाद इन्हें जांच के लिए सीएफएसएल भेजा गया था! उच्चतम न्यायालय ने कहा कि चूंकि नमूने 13 दिनों तक पुलिस मालखाने में रहे, इसलिए उनके साथ छेड़छाड़ की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। उच्चतम न्यायालय ने यह भी पाया कि अभियोजन पुलिस अधिकारियों और 10 गवाहों की गवाही कराने में विफल रहा। आयोग की अध्यक्ष ने पत्र में कहा है कि जब फोरेंसिक साक्ष्य में आरोपी व्यक्तियों को दोषी ठहराया, तब भी विभिन्न प्रक्रियाओं का पालन करने के तरीकों से एक संदेह का एक तत्व पैदा हुआ, जिससे अंततः आरोपी व्यक्तियों को लाभ हुआ और उन्हें बरी कर दिया गया था।

उन्होंने आगे कहा है कि इस मामले का चल रहे बलात्कार के मामलों पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा और उच्चतम न्यायालय द्वारा बताए गए प्रणालीगत मुद्दों को ठीक किया जाना चाहिए। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष ने सिफारिश की है कि दिल्ली पुलिस, फोरेंसिक प्रयोगशाला के साथ-साथ सुनवाई अदालत के कामकाज को मजबूत करने के लिए व्यापक सुधारों का सुझाव देने के लिए गृह सचिव, पुलिस आयुक्त, दिल्ली महिला आयोग अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित एक उच्च स्तरीय समिति का तत्काल गठन किया जाए। इसके अलावा, दिल्ली पुलिस को यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देश जारी किया जाना चाहिए कि फोरेंसिक नमूने संग्रह के 48 घंटे के भीतर प्रयोगशाला में भेजे जाएं और यदि समय सीमा पार हो जाती है, तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए।

### पड़ोसियों के झगड़े में छेड़छाड़ के आरोपों में मुकदमा दर्ज कराने की प्रवृत्ति पर रोक लगे

नई दिल्ली। पड़ोसियों के आपसी विवाद में महिलाओं से छेड़छाड़ और मान-सम्मान को ठेस पहुंचाने के आरोपों में मुकदमा दर्ज कराने की प्रवृत्ति पर दिल्ली हाईकोर्ट ने चिंता व्यक्त की है। हाईकोर्ट ने इसे गंभीरता से लेते हुए कहा है कि इस प्रवृत्ति पर तत्काल रोक लगाने की जरूरत है। जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा ने आरोपी और शिकायतकर्ता के बीच में हुए समझौते के आधार पर दर्ज मुकदमे को खारिज करते हुए यह टिप्पणी की है। दोनों पक्षों ने हाईकोर्ट को बताया था कि गलतफहमी के चलते विवाद हो गया था और अब समझौता हो गया है, ऐसे में दर्ज मुकदमे को खारिज कर दिया जाए। कोर्ट ने कहा है कि पड़ोसियों के बीच विवादों को निपटाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध यानी आईपीसी की धारा 354 और 509 के तहत मामले दर्ज करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कोर्ट ने कहा है कि यह चिंता की बात है और इस पर तत्काल लगाम लगाने की जरूरत है। कोर्ट ने कहा है कि मामले में चार्जशीट दाखिल की जा चुकी है और पक्षकारों ने आपसी सहमति से मामले का निपटारा करने और अदालत आने में देर कर दी है। कोर्ट ने सभी पक्षों को सुनने के बाद वर्ष 2017 में बाबा हरिदास नगर थाने में दर्ज मुकदमे को रद्द कर दिया। हालांकि, इस मामले के प्रत्येक आरोपी पर दस-दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। हाईकोर्ट ने आरोपियों को जुर्माने की रकम एक सप्ताह के भीतर तीस हजारी कोर्ट स्थित अधिवक्ता कल्याण कोष में जमा कराने का आदेश दिया है।

# साहित्य अकादेमी में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन

नई दिल्ली। आज़ादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साहित्य अकादेमी अपने परिसर में एक भव्य पुस्तक मेले का आयोजन 11 से 18 नवंबर 2022 तक प्रतिदिन पूर्वाह्न 10 बजे से सायं 7 बजे तक करने जा रही है। इस पुस्तक मेले का उद्घाटन दिनांक 11 नवंबर 2022 को माननीय संस्कृति राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अर्जुन राम मेघवाल करेंगे। इस पुस्तक मेले में 30 से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रकाशक शामिल हो रहे हैं। पुस्तक संस्कृति और बच्चों में पढ़ने की रुचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अकादेमी ने पुस्तकायन शीर्षक से इस पुस्तक मेले का आयोजन किया है। इस बार के पुस्तक मेले की थीम बाल साहित्य है।

आठ दिनों तक चलने वाले इस पुस्तक मेले में विभिन्न भारतीय भाषाओं के 65 से ज्यादा बाल लेखक शामिल हो रहे हैं। मेले में अकादेमी बच्चों के लिए कई रोचक, ज्ञानवर्धक एवं आज़ादी के रंग बाल कलाकारों के संग शीर्षक से उभरते हुए बाल कलाकारों की गांरकृतिक प्रस्तुतियाँ सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से की जा रही है। बच्चों के लिए कविता और कहानी लेखन कार्यशाला के अलावा कार्टून चित्रांकन कार्यशाला 13 नवंबर रविवार को पूर्वाह्न 11.00 बजे से होंगी। कविता और कहानी लेखन कार्यशाला का संचालन दीपा अग्रवाल एवं श्याम सुशील करेंगे तथा इसी दिन, अपराह्न 2.00 बजे कार्टून चित्रांकन कार्यशाला का संचालन माधव जोशी एवं उदय शंकर करेंगे। इसके अलावा बच्चों के लिए और भी कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य पर चर्चा और रचनाओं का पाठ वरिष्ठ बाल साहित्यकारों द्वारा किया जाएगा। मेले में अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रम के अंतर्गत - बालस्वरूप राही, दिविक रमेश, क्षमा शर्मा, कमलजीत नीलों, पारो आनंद एवं असद रज़ा आदि बाल साहित्यकारों से मिलने का अवसर भी होगा। साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी परिसर में पहली बार आयोजित किए जा रहे इस बाल पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी के अतिरिक्त देश के अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशकों की पुस्तकें विशेष छूट पर बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी।

# दिल्ली नगर निगम चुनाव में 22,000 आगनवाड़ी कर्मियों द्वारा 'आप' व 'भाजपा' के बहिष्कार का ऐलान

## दिल्ली की आँगनवाड़ीकर्मियों के घरों में 'आप' व भाजपा प्रत्याशियों व कार्यकर्ताओं के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबन्ध

**विवेक राय/गौरवशाली भारत**

नयी दिल्ली। प्रेस क्लब, दिल्ली में दिल्ली स्टेट आँगनवाड़ी वर्कर्स एण्ड हेल्पर्स यूनियन के द्वारा एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। आगामी नगर निगम चुनाव के मद्देनज़र संघर्ष का बिगुल फूँकते हुए दिल्ली स्टेट आँगनवाड़ी वर्कर्स एण्ड हेल्पर्स यूनियन ने आँगनवाड़ीकर्मी विरोधी और व्यापक स्तर पर मज़दूर विरोधी 'आप' और 'भाजपा' के ख़िलाफ़ सघन बहिष्कार अभियान चलाने का ऐलान किया। ज्ञात हो कि इस वर्ष के प्रारम्भ में दिल्ली की हज़ारों आँगनवाड़ीकर्मियों ने 38 दिनों तक लम्बी हड़ताल करके एक बहादुराना व ऐतिहासिक संघर्ष को अंजाम दिया था। तमाम पैंतरों से इस हड़ताल को तोड़ने की नाक़ाम कोशिशों के बाद दिल्ली सरकार ने भाजपा से मिलीभगत करके उपराज्यपाल के ज़रिए दमनकारी हेस्मा कानून थोप दिया था। हेस्मा लागू होने के उपरान्त दिल्ली स्टेट आँगनवाड़ी वर्कर्स एण्ड हेल्पर्स यूनियन ने हड़ताल को स्थगित करने का फ़ैसला लिया था। यूनियन का कहना था कि चूँकि आँगनवाड़ीकर्मी सरकारी कर्मचारी के दर्जे में आती ही नहीं हैं, इसलिए हेस्मा जैसे कानून को लागू किये जाने का कोई औचित्य ही नहीं बनता है।

एक ओर तो दिल्ली सरकार ने महत्वपूर्ण सेवाओं के बाधित होने का बहाना बना कर आँगनवाड़ीकर्मियों के जायज़ और बुनियादी हक़ों के इस संघर्ष को कुचलने का काम किया। दूसरी ओर इसी सरकार ने हड़ताल स्थगित होने के बाद 884 महिलाकर्मियों को ग़ैर-कानूनी तरीके से केवल संवैधानिक हक़ का इस्तेमाल करने के लिए बर्ख़ास्त कर दिया था। इस मसले पर दिल्ली स्टेट आँगनवाड़ी वर्कर्स एण्ड हेल्पर्स यूनियन ने दिल्ली उच्च न्यायालय में अपील दायर की थी।

दिल्ली उच्च न्यायालय में यह मसला अभी भी न्यायाधीन है। उच्च न्यायलय ने फ़िलहाल बर्ख़ास्त 884 महिलाकर्मियों के स्थान पर किसी भी नयी भर्ती पर रोक लगायी हुई है।

यूनियन की अध्यक्षा शिवानी कौल ने मीडिया से मुख़ातिब होते हुए कहा कि 38 दिनों तक चले इस हड़ताल ने महज़ आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार और भाजपा की केन्द्र सरकार को ही चुनौती नहीं दी, बल्कि समूची पूँजीवादी व्यवस्था को भी इसने बेनक़ाब किया। इस हड़ताल से दिल्ली व केन्द्र सरकार दोनों ही भयाक्रान्त थे। अपनी लाख कोशिशों के बावजूद केन्द्र की भाजपा सरकार और दिल्ली की केजरीवाल की आप सरकार इस हड़ताल को तोड़ने में नाक़ामयाब रहे। अन्ततः, उन्होंने अपने इस डर में ही आपसी सहमति बनाकर उपराज्यपाल के ज़रिये दिल्ली की आँगनवाड़ीकर्मियों की इस अद्वितीय और ऐतिहासिक हड़ताल पर एसेंशियल सर्विसेज़ मेण्टेनेंस एक्ट थोप दिया।

यह दोनों ही पार्टियाँ आँगनवाड़ीकर्मियों की दिल्ली की जनता तक पहुँच को अब तक भले ही नज़रंदाज़ करती आ रही हों लेकिन नगर निगम चुनावों के मद्देनज़र इनके लिए अब ऐसा कर पाना हम असम्भव कर देंगी। दिल्ली की हर एक आँगनवाड़ीकर्मी अपने इलाकों में इन दोनों ही दोमुँही पार्टियों के प्रत्याशियों-कार्यकर्ताओं के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का निश्चय कर चुकी हैं। आज वोट की राजनीति के लिए भले ही यह दोनों पार्टियाँ एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का काम कर रहीं हैं, लेकिन जहाँ कहीं भी मज़दूरों-कामगारों के दमन की बात आती है, इन दोनों ही पार्टियों की यारी देखते बनती है। इस नगर निगम चुनाव में दिल्ली की 22,000 आँगनवाड़ीकर्मी ही नहीं, बल्कि उनके परिवार-दोस्त-सम्बन्धी भी इन दोनों ही पार्टियों के सक्रिय बहिष्कार का ऐलान करते हैं। हम भाजपा और आप का दिल्ली नगर निगम चुनावों में पूर्ण बहिष्कार और उनकी वोटबन्दी का आन्दोलन पूरी दिल्ली में चलाएँगी और पूरी दिल्ली की जनता को इन दोनों झूठी, बेईमान और भ्रष्टाचारी पार्टियों की असलियत से अवगत कराएँगी।

# फीस को लेकर टीचर ने की पिटाई : आठवीं का छात्र फंदे पर झूला, स्कूल के बाहर हंगामा

गाजियाबाद। स्कूल से वापस भेजे जाने से आहत होकर आत्महत्या करने वाला आठवीं कक्षा का छात्र प्रिंस व्यवहार कुशल था। स्कूल से घर और घर से स्कूल उसकी नियमित दिनचर्या था। घटना के बाद बिलखते पिता ने कहा कि वह नर्सरी से अपने तीनों बच्चों को पब्लिक हैप्पी मॉडल स्कूल में पढ़ा रहे हैं। उन्होंने हर साल फीस अदा की है तो इस बार भी दे देते। लेकिन फीस के लिए स्कूल प्रबंधन ने उनके बेटे को सरेआम बेईज्जत किया, जिसके चलते उनके बेटे ने आत्महत्या कर ली।

प्रिंस के पिता हीरालाल ने बताया कि उन्होंने अपने तीनों बच्चों को इसी स्कूल में पढ़ाया है। पिछले कुछ समय से उनकी माली हालत ठीक नहीं चल रही। पिछली साल भी उन्होंने सालभर की फीस एक साथ जमा की थी। इस सत्र में स्कूल शुरू होने पर बच्चों को एडमिशन करा दिया। हीरालाल का

कहना है कि करीब डेढ़ महीने पहले स्कूल में परीक्षा थी, लेकिन फीस के चक्कर में स्कूल प्रबंधन ने उनके बच्चों को परीक्षा में नहीं बैठने दिया। बच्चों के भविष्य को देखते हुए उन्होंने स्टाफ से गुहार लगाई कि वह उनके बच्चों को स्कूल आने दें। वह देर-सवेर फीस दे ही देंगे। हीरालाल के मुताबिक तीन-चार दिन से स्कूल में प्रिंस को प्रताड़ित किया जा रहा था। बुधवार को क्लास के बाहर खड़ा किया तो गुरुवार को पिटाई करके स्कूल से भगा दिया। इससे आहत होकर उनके प्रिंस ने मौत गले लगाने का फैसला लिया।

प्रिंस की मौत के बाद उसकी मां मनवीरी बेसुध हो गई, जबकि पिता हीरालाल भी दहाड़े मारकर रोने लगा। बिलखते परिवार को देखकर लोग आक्रोशित हो गए और स्कूल जा पहुंचे। लोगों का कहना था कि फीस के लिए प्रिंस के साथ जैसा व्यवहार किया गया, कल को दूसरे बच्चों के साथ भी हो सकता है। लोगों का गुस्सा देख पुलिस के भी हाथ-पांव फूल गए, जिसके बाद सिहानी गेट थाने की सभी चौकियों से पुलिस बुला ली गई।

लोग ने कुसुम को ले जाने पर ऐतराज जताया और क्लास टीचर को भी मौके पर बुलाने को कहा। पुलिस पैदल-पैदल कुसुम को ले जाने लगी तो लोग आक्रोशित हो गए और उन्हें पुलिस से छीनने की कोशिश की। इस पुलिस ने तल्ख लहजा अपनाते हुए लोगों को फटकारा। इसके बाद रास्ते में प्राइवेट गाड़ी बुलाकर कुसुम को भीड़ से निकालकर थाने भिजवाया।

### जेएनयू में दो छात्र गुटों के बीच हुई मारपीट, बाहरी लोगों की एंट्री के बाद बवाल

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) परिसर में विद्यार्थियों के दो समूहों के बीच बृहस्पतिवार को झगड़ा हो गया। इस घटना में दो विद्यार्थी जख्मी हो गए। सोशल मीडिया पर सामने आए कुछ वीडियो में दिख रहा है कि कुछ छात्र डंडे लेकर परिसर में भाग रहे हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि दो छात्रों के बीच निजी मामले को लेकर झगड़ा हुआ था, जिसके बाद उनके दोस्त उसमें शामिल हो गए। लड़ाई के दौरान, दो विद्यार्थी मामूली रूप से घायल हो गए। उन्होंने कहा, हमें इस मामले में अब तक कोई औपचारिक शिकायत नहीं मिली है। लड़ाई दो छात्रों के बीच थी और इसमें कोई राजनीतिक समूह शामिल नहीं है। यह दोनों का निजी विवाद है।

# सुकेश ने फिर लिखा खत, दूसरी जेल में शिफ्ट करने की मांग

नई दिल्ली। महाठग सुकेश चंद्रशेखर ने दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना को एक और चिट्ठी लिखी है। सुकेश ने उसे और अपनी पत्नी को दिल्ली के बाहर किसी और जेल में शिफ्ट करने की मांग की है। सुकेश ने आरोप लगाया है कि उसके द्वारा आम आदमी पार्टी के नेताओं पर आरोप लगाए जाने के बाद उसे लगातार धमकियां मिल रही हैं तथा उसपर दबाव मनाया जा रहा है। एलजी को लिखी चिट्ठी में सुकेश ने यह भी आरोप लगाया है कि उसे जेल के अंदर सीआरपीएफ के जवान प्रताड़ित कर रहे हैं।

ठग सुकेश ने अपने वकील के माध्यम से लिखे गये खत में कहा है कि वो मंडोली जेल में फिलहाल एक अंडर ट्रायल कैदी है। उसकी पत्नी भी इसी जेल में बंद है। सुकेश चंद्रशेखर ने कहा है कि सत्येंद्र जैन, अरविंद केजरीवाल और कैलाश गहलोत जैसे आम आदमी पार्टी के बड़े नेताओं के खिलाफ शिकायत करने के बाद से मुझे लगातार धमकियां मिल रही हैं। मैंने आर्थिक अपराध शाखा और प्रवर्तन निदेशालय के सामने जो शिकायत दर्ज करवाई है उसे वापस लेने का दबाव लगातार बनाया जा रहा है।

ठग सुकेश चंद्रशेखर ने यह कहा है कि उनकी पत्नी को भी लगातार धमकी मिल रही है। इसके अलावा जेल के वरिष्ठ अफसर उन्हें गालियां देते हैं और कहते हैं कि वो अपनी पति को इस बात के लिए राजी करे कि वो अपने आरोप वापस ले लें। सुकेश चंद्रशेखर ने मांग की है कि इन हालातों को देखते हुए उसे और उसकी पत्नी को दिल्ली की जेल से हटाकर देश के

## संपादकीय

## यह कैसा इंसाफ

साल 2012 में दिल्ली के छावला में 19 साल की लड़की के साथ हुए गैंगरेप मामले में सुप्रीम कोर्ट ने जब अपना फैसला सुनाया तो जैसे हर कोई सन्न रह गया। जिन दोषियों के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी उसे देश की शीर्ष अदालत ने बरी कर दिया। ऐसे में लोग पूछ रहे हैं कि आखिर यह कैसा इंसाफ है।

दिल्ली के बहुचर्चित छावला गैंगरेप-मर्डर केस में मौत की सजा पा चुके तीन कैदी जिस तरह सुप्रीम कोर्ट से बरी हो गए, वह न केवल चौंकाने वाला है बल्कि हमारी पूरी न्याय प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े करता है। यह मामला दिल्ली में बहुचर्चित निर्भया कांड से कुछ महीने पहले का है, जिसमें काम से लौट रही एक 19 साल की लड़की को घर के पास से अपहृत कर लिया गया था। तीन दिन बाद उसकी लाश हरियाणा के रेवाड़ी से क्षत-विक्षत अवस्था में मिली थी। पता चला कि विक्टिम के साथ गैंगरेप तो हुआ ही था, अपराधियों ने उसकी आंख में तेजाब डाल दिया था और टूटी शराब की बोतलें उसके प्राइवेट पार्ट में घुसाई थीं। इस वीभत्स कांड ने देशवासियों को दहला दिया था। इसके बाद हुए निर्भया कांड ने सबको झकझोर डाला और फिर यौन अपराधों से जुड़े कानूनों को और सख्त बनाया गया। लेकिन छावला गैंगरेप-मर्डर केस की सुप्रीम कोर्ट में हुई परिणति बताती है कि निर्भया कांड के बाद कानून में किए गए सुधार भी सरकारी और न्याय तंत्र के कामकाज के तरीकों में अपेक्षित बदलाव नहीं ला पाए।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने गौर किया कि जो 49 गवाह बनाए गए थे, उनमें से 10 के साथ बचाव पक्ष ने कोई जिरह ही नहीं की। कई अन्य गवाहों के साथ ठीक से जिरह नहीं की गई। सुप्रीम कोर्ट को अपने फैसले में यह भी कहना पड़ा कि मुकदमे में जजों की भूमिका निष्क्रिय अंपायरों जैसी नहीं होनी चाहिए, सही निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए उन्हें गवाहों से सवाल करने की जरूरत होती है। अक्सर अभियुक्त अपने लिए अच्छे वकील करने की स्थिति में नहीं होते। ऐसे में फेयर ट्रायल के लिए यह जरूरी होता है कि जज अभियोजन पक्ष के वर्जन की ठीक से जांच-परख करें। इस मामले में तो जांच के स्तर पर भी गंभीर खामियां थीं। अपहरण की घटना के कई प्रत्यक्षदर्शी थे, इसके बावजूद आरोपियों की पहचान परेड तक नहीं कराई गई। ट्रायल कोर्ट और हाईकोर्ट ने आरोपियों की गिरफ्तारी, उनके कबूलनामे और जप्तियों पर साक्ष्यों से पुष्टि किए बगैर पुलिस के वर्जन को स्वीकार कर लिया। यहां तक कि सैंपल इकट्ठा करने और उन्हें फॉरेंसिक लैब भेजे जाने की प्रक्रिया में भी गड़बड़ियां पाई गईं। ट्रायल कोर्ट और हाईकोर्ट ने इन सबके बावजूद फांसी की सजा सुनाई।

यह कोई इकलौता मामला नहीं है। नैशनल लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली के एक प्रॉजेक्ट 39ए के मुताबिक 2021 में देश भर में 33 ऐसे कैदियों को बरी किया गया, जिन्हें मौत की सजा सुनाई जा चुकी थी। यह बहुत बड़ी संख्या है। चूंकि अपराध को लंबा अरसा हो चुका होता है और ज्यादातर सबूत नष्ट हो चुके होते हैं इसलिए ऐसे मामलों में दोबारा जांच के आदेश भी नहीं दिए जा सकते। निश्चित रूप से यह स्थिति हमारी न्याय व्यवस्था के लिए एक कठिन चुनौती पेश करती है।

## बदलाव की उम्मीद

जब कभी इस पद पर कोई नया व्यक्ति आता है तो उससे नई उम्मीदें लगाई जाती हैं, न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ से भी लगाई जा रही हैं। शपथ लेने के पहले और उसके बाद उन्होंने कई बातें कही हैं और कुछ संकेत दिए हैं जिनसे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे क्या कुछ नया कर सकते हैं।

जहां तक एक प्रधान न्यायाधीश के कुछ कर पाने का सवाल है, तो हाल का अनुभव यह है कि इस पद पर ज्यादातर न्यायाधीशों का कार्यकाल ज्यादा नहीं रहा। लेकिन न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ के पास भरे पूरे दो साल हैं। इसलिए उम्मीद लगाई जा सकती है कि वे जो कुछ करना चाहेंगे, उसे कर पाएंगे। शपथ लेने के पहले उन्होंने काफी कुछ कहा जिससे उनकी प्राथमिकताओं का अंदाजा लगता है। इसके अलावा उनकी पृष्ठभूमि और कार्यशैली के आधार पर भी अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाले दिनों में न्यायपालिका में क्या बदलाव देखने को मिल सकते हैं।

देश को एक ऐसे प्रधान न्यायाधीश मिले हैं जो मानते हैं कि संवैधानिक लोकतंत्र में कोई भी संस्था परिपूर्ण नहीं हो सकती, लेकिन हमारे पास इसे उन्नत करने की अच्छी गुंजाइश है क्योंकि हमारी न्याय व्यवस्था में अभी भी उपनिवेश काल के लक्षण हैं। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने इसे ज्यादा पारदर्शी और नागरिकों के लिए सरल बनाने की बात कही है। यानी आगे यह देखा जाना महत्त्वपूर्ण होगा कि न्याय प्रक्रिया ज्यादा पारदर्शी कैसे बनेगी।

प्रधान न्यायाधीश की कही एक और बात से यह संकेत भी मिलता है कि उनकी विचार व्यवस्था के केंद्र में देश का नागरिक होगा। बहुत संभव है कि उनके नेतृत्व में भारतीय न्याय व्यवस्था को अब हम सामान्य नागरिकों के हित में कुछ उदार होते हुए देखें। यह उम्मीद इस आधार पर भी लगाई जा सकती है कि कार्यभार संभालने के पहले न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ महात्मा गांधी को नमन करने गए। महात्मा गांधी ने कहा था कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। इस तरह एक गुंजाइश यह बन सकती है कि कठोर दंड की बजाय अब उदारता के साथ अपराधियों के सुधार के कुछ प्रयोग होते दिखें।

न्यायपालिका में समयानुकूल एक और सुधार की उम्मीद भी लगाई जा सकती है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव का भी जिक्र किया है। इस सिलसिले में गौर करने की बात यह है कि उन्होंने न्यायतंत्र में भी समयानुकूल प्रशिक्षण की जरूरत की तरफ इशारा किया है। अगर न्याय कार्य में प्रबंधन प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल का संकेत मिला है तो एक उम्मीद यह भी लगाई जा सकती है कि न्यायालय में प्रशासनिक कार्यों में प्रौद्योगिकी का प्रयोग बढ़ेगा। हो सकता है कि अब अदालतों में प्रशिक्षित प्रबंधकों की नियुक्ति का कार्य आगे बढ़ता दिखाई दे। बेशक इससे अदालतों में लंबित मामलों का बोझ कम करने में बहुत मदद मिलेगी। जहां तक न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की न्यायिक और अकादमिक पृष्ठभूमि का पहलू है तो यह पहले से ही माना जाता है कि वे न्याय दर्शन के विद्वान हैं, न्याय सिद्धांत के एक संजीदा अध्येता हैं। इस आधार पर बहुत संभव है कि आने वाले दिनों में हमें कुछ ऐसे फैसले देखने को मिलें जो नजीर बन जाएं। खासतौर पर मानवाधिकारों या नागरिक अधिकारों के जटिल मामलों में न्यायोचित उदारता बढ़ने की भी उम्मीद लगाई जा सकती है। सकारात्मक बदलाव की इतनी उम्मीदें लगाई जा रही हैं तो जल्द ही हमें यह भी देखने को मिल सकता है कि सामान्य नागरिकों के हित के प्रकरणों में सर्वोच्च न्यायलय में अब स्वत संज्ञान के मामले बढ़ते दिखाई दें।

# बिना बात के बतंगड़ में माहिर है कांग्रेस

-ललित गर्ग-

भारतीय राजनीति में अक्सर बिना बात के बतंगड़ होते रहे हैं। ऐसे राजनेता चर्चित माने जाते हैं जो वास्तविक उपलब्धियों एवं सकारात्मक आयामों की भी आलोचना एवं छिद्रान्वेषण करने में चतुर होते हैं। बिना बात का बतंगड़ करने में कांग्रेस के नेता राहुल गांधी एवं देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस का कोई मुकाबला नहीं है। कांग्रेस ने जी-20 सम्मेलन के लोगो में कमल को चित्रित करने पर आपत्ति जताकर बैठे-ठाले न केवल अपनी प्रतिष्ठा को बटा लगाया है बल्कि इस प्रकार उद्देश्यहीन, उच्छृंखल, विध्वंसात्मक नीति को ही प्रदर्शित किया है। आग्रह, पूर्वाग्रह एवं दुराग्रह से ग्रस्त ऐसे आरोपों एवं आलोचनाओं से किसी का भी हित सधता हो, प्रतीत नहीं होता। ऐसा लगता है कि इस पार्टी एवं उसके नेताओं को मोदी सरकार के हर काम और निर्णय का विरोध करने की आदत पड़ गई है। ऐसा तभी होता है, जब कोई अंधविरोध से ग्रस्त हो जाता है। जो बहुचर्चित होता है उसका विरोध भी होता है। पर विरोध का भी कोई उद्देश्य और स्तर होता है। निरूद्देश्य एवं स्तरहीन विरोध, विरोधी खेमे की स्वार्थ एवं संकीर्णपूर्ण मनोवृत्ति, ईर्ष्या और विध्वंस की नीति का ही स्वयंभू प्रमाण है। भारत के लिये गर्व एवं गौरव करने के जी-20 की अध्यक्षता के क्षणों में भी उसने ईर्ष्या एवं मात्सर्य की भावना से प्रेरित होकर विरोध का स्वर बुलन्द कर अपनी बुद्धि का दिवालियापन ही उजागर किया है। उपलब्धियों का बतंगड़ बनाना सीखना हो तो कांग्रेस से सीखना चाहिए। क्या कांग्रेस पार्टी द्वारा इस तरह तिल का ताड़ बनाना उचित है?

आम जनता को गुमराह करने एवं सत्ता तक पहुंचने के लिए इस प्रकार के राष्ट्रीय उजालों पर कालिख पोतने की मनोवृत्ति निश्चित ही अंधेरे सायों से प्यार करने वालों की ही हो सकती है, ऐसे लोगों की आंखों में किरणें आंज दी जायें तो भी वे यथार्थ को नहीं देख सकते। क्योंकि उन्हें नरेन्द्र मोदी रूपी उजाले के नाम से ही एलर्जी है, तरस आता है ऐसे लोगों की बुद्धि पर, जो सूरज के उजाले पर कालिख पोतने का असफल प्रयास करते हैं, आकाश के पैबंद लगाना चाहते हैं और सछिद्र नाव पर सवार होकर राजनीति रूपी सागर की यात्रा करना चाहते हैं। निश्चित ही इससे सबके मन में अकल्पनीय सम्भावनाओं की सिहरन उठती है। प्रजातंत्र में टकराव होता है। विचार फर्क भी होता है। मन-मुटाव भी होता है पर मर्यादापूर्वक। अब इस आधार को कांग्रेस ने ताक पर रख दिया है। राजनीति में दुश्मन स्थाई नहीं होते। अवसरवादिता दुश्मन को दोस्त और दोस्त को दुश्मन बना देती है। यह भी बड़े रूप में देखने को मिला। भारतीय संस्कृति में कमल के पुष्प की महत्ता किसी से छिपी नहीं। यह शुभ, श्रेयस्कर, सौंदर्य, समृद्धि का प्रतीक तो है ही, अनेक देवी-देवताओं से भी संबंधित है। इसका उपयोग विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में शताब्दियों से किया जाता रहा है। चूंकि जी-20 के समृद्ध 20 देशों का नेतृत्व करने का ऐतिहासिक एवं स्वर्णित अवसर भारत को मिला है, इसकी सफलता के लिये कमल पुष्प का लोगों में उपयोग किया जाना दूरगामी सोच से जुड़ा एक सूझबूझभरा निर्णय है।

देश में न जाने कितने प्राचीन भवनों और विशेष रूप से मंदिरों में कमल को उकेरा गया है। स्वतंत्रता संग्राम का संदेश देने के लिए रोटी और कमल का वितरण उपयोग किया गया। स्वतंत्रता के उपरांत भी विभिन्न संस्थाओं के प्रतीक चिह्नों, सरकारी आयोजनों के साथ डाक टिकटों में इसका उपयोग किया जाता रहा। आज भी कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के लोगो में कमल को शोभायमान देखा जा सकता है। वस्तुत: इसी कारण उसे राष्ट्रीय पुष्प की तरह देखा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस भारतीय संस्कृति में कमल की महत्ता से पूरी तरह अनजान है। यह एक विडंबना ही है कि भारत जोड़ो यात्रा पर निकली कांग्रेस भारतीय संस्कृति में कमल के महत्व को नहीं समझ पा रही है। इस दृष्टि से कांग्रेस के द्वारा भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी का विरोध कोई नई बात नहीं है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि भाजपा-विरोध इसकी नियति है। आश्चर्य इस बात का है कि इतने तीव्र, दीर्घ एवं तीक्ष्ण विरोध के बावजूद भाजपा के अस्तित्व पर कोई आंच नहीं आ सकी, बल्कि उसकी हस्ति को और अधिक प्रखर एवं तेजस्वी बनती रही। उल्लेखनीय बात यह है कि निन्दक एवं आलोचक लोगों को सब कुछ गलत ही गलत दिखाई देता है।

एक सफल नेता एवं राजनीति दल होने के लिए आपको अपने लिए समर्थन जुटाना होगा और जनता के बीच अपनी पकड़ मजबूत करनी होगी। इसके लिए नेता को सहृदय, उदार, सकारात्मक और दृढ़ होना चाहिए। लेकिन कांग्रेस में ये विशेषताएं कमतर होती जा रही है। यही कारण है कि उसे कमल के रूप में केवल भाजपा का चुनाव चिह्न ही देता है। इससे भी बड़ा विचित्र एवं विरोधाभास यह देखने को मिला उसे जी-20 सम्मेलन के लोगो में चित्रित कमल ठीक वैसा ही दिखाई दे रहा है जैसा भाजपा का चुनाव चिन्ह में है। यदि कांग्रेस को यह लगता है कि जी-20 सम्मेलन के लोगो में कमल को दर्शाए जाने से भाजपा को राजनीतिक लाभ मिलेगा तो उसे स्पष्ट करना चाहिए कि ऐसा कैसे होगा? क्या जी-20 समूह के देशों की भारत में होने वाले चुनावों में कोई भूमिका रहने वाली है? क्या ये देश वोट देकर मोदी को जीताने वाले है? भाजपा में कहीं कोई आहट भी होती है तो कांग्रेस में भूकल्प-सा आ जाता है। मजे की बात तो यह है कि कांग्रेस को भाजपा की एक भी विशेषता दिखाई नहीं देती। उसने कितनी बड़ी-बड़ी उपलब्धियां देश की झोली में डाली है। इनकी तरफ कांग्रेस का ध्यान क्यों नहीं जाता? शरीर कितना ही सुन्दर क्यों न हो, मक्खियों को तो घाव ही अच्छा लगेगा। इसी प्रकार क निन्दक लोगों को तो अच्छाई में भी बुराई का ही दर्शन होगा।

कोई कमल का विरोध कर रहे हैं तो कोई लक्ष्मी-गणेश की तस्वीर नोटों पर छापने की वकालत कर रहे हैं। जाने-अनजाने इन सबने समय-समय पर यह भी प्रतीति कराई कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के जो भी प्रतीक हैं, वे इन्हें स्वीकार्य नहीं। वास्तव में कमल पर आपत्ति खड़ी कर कांग्रेस ने एक बार फिर यह प्रकट किया कि भारत की संस्कृति एवं उसके सांस्कृतिक प्रतीकों से सीधा लाभ भाजपा को मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस राष्ट्रीय दल ने भारत की संस्कृति से कितनी दूरी बना ली है?

यह सब उसने भाजपा वालों के लिये मान लिया है, उसकी झोली में डाल दिया है। यदि कांग्रेस देश की संस्कृति के प्रतीकों के प्रति सम्मानभाव नहीं प्रकट कर सकती तो कम से कम उसे उनका विरोध भी नहीं करना चाहिए। इस तरह की सिद्धांत एवं संस्कृतिविहीन राजनीति करके वह भारत को जोड़ने नहीं, तोड़ने का ही काम करेंगी।

## सुप्रीम कोर्ट ने फौजी सहायकों से घरेलू काम कराने की प्रथा को नहीं रोका मगर अग्निवीर इसे बंद करेगा

सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की बेंच ने 31 अक्टूबर को उस लोकहित याचिका को दर्ज करने से मना कर दिया, जिसमें मांग की गई थी कि भारतीय सेना में 'सहायक सिस्टम' को खत्म किया जाए. 2009 में, रक्षा मामलों की संसद की स्थायी समिति ने 'सहायकों' की भर्ती को शर्मनाक बताया था और कहा था कि स्वतंत्र भारत में ऐसी प्रथा के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए इसलिए इसे समाप्त किया जाए. समिति ने उम्मीद जाहिर की थी कि रक्षा मंत्रालय इसे बंद करेगा और गृह मंत्रालय भी अर्द्धसैनिक बलों और दूसरे संगठनों के मामले में ऐसे कदम उठाएगा. लेकिन रक्षा मंत्रालय ने अपनी कार्रवाई रिपोर्ट में सहायकों के इस्तेमाल का बचाव करते हुए कहा कि उनके कामों को नियमित करने के बारे में विस्तृत निर्देश दिया जा चुके हैं. कमिटी ने कहा कि उसे समझ में नहीं आता कि सेना में सहायकों की क्या जरूरत है जबकि नौसेना और वायुसेना में ऐसी कोई प्रथा नहीं है. कमिटी ने अपनी पिछली सिफ़ारिश को दोहराते हुए कहा कि सेना को नौसेना और वायुसेना का अनुकरण करते हुए इस औपनिवेशिक प्रथा को तुरंत बंद करना चाहिए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकारी पदाधिकारियों को अप्रासंगिक औपनिवेशिक विरासतों से छुटकारा पाने की नसीहत देते रहते हैं. खासतौर से सेनाओं के संयुक्त कमांडर कन्फ्रेंसों में अपने भाषण में वे प्राय: वे इस बात पर ज़ोर देते रहे हैं. सुप्रीम कोर्ट ने सहायकों के मामले में संसदीय कमिटी की जगह सरकार के नजरिए का समर्थन कर दिया है तो इस औपनिवेशिक प्रथा का कानूनी निपटारा हो गया है. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि सेना में जारी ऐसी कुछ प्रथाओं को बदलने के पक्ष में संगठन या समाज के अंदर हवा नहीं बह रही है जिन प्रथाओं पर नजर रखने या रोक लागने की जरूरत है. 'सहायक' वाली सिस्टम में गड़बड़ी का मूल आधार यह है कि इन कर्मचारियों से घरों में काम करवाया जाता है. यह हर स्तर पर कमांड की ज़िम्मेदारी का मामला है।

मामला ऊंचे अधिकारियों और कुछ स्थितियों में उनकी पत्नी के लिए घरों में काम करने वाले कर्मचारियों की तैनाती को मंजूर करने का भी है. इसमें सुरक्षा का और सेवा देने वालों की आधिकारिक प्रतिबद्धता का भी है. लेकिन अगर यह प्रथा वरिष्ठ नेतृत्व द्वारा पेश की गई निजी मिसाल पर आधारित नहीं होगी तो इसे लागू करने में दिक्कत होगी. जब एकीकृत थिएटर कमांड स्थापित होंगे और तीनों सेनाओं को एक ही व्यवस्था में शामिल किया जाएगा या जब वे करीब-करीब रहकर काम करेंगी तब इस मसले की असली परीक्षा होगी. सहायकों की उपलब्धता थलसेना को हासिल लाभों के मामले में दूसरी सेनाओं के मुक़ाबले ज्यादा फायदे में रखेगी तब सवाल खड़े होंगे और तब बदलाव करना पड़ेगा।

## वैश्विक देशों के नेतृत्व का पहला सोपान

भारत के पांचवी आर्थिक शक्ति बन चुका है। इसके पूर्व भारत की सेना भी विश्व में अग्रिम पंक्ति में आकर खड़ी हो चुकी है। अब भारत आगामी वर्ष में जी-20 जैसे अति महत्वपूर्ण बैठक की मेजबानी कर उसकी अगुवाई करेगा। इस बैठक में वैश्विक स्तर के सभी दमदार शक्तिशाली और परमाणु ऊर्जा संपन्न देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री शामिल होंगे ।भारत के लिए यह वैश्विक नेतृत्व करने का एक महत्वपूर्ण पायदान होगा। संभवत रूस यूक्रेन युद्ध की समाप्ति की योजना पर भी भारत अपनी बात रखेगा। इस बैठक में विश्व शांति परमाणु अस्त्रों पर इस्तेमाल पर प्रतिबंध ग्लोबल वार्मिंग और अन्य अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर संवेदनशील चर्चा होगी । रूस के तानाशाह व्लादिमीर पुतिन के परमाणु अस्त्रों के इस्तेमाल की यूक्रेन तथा यूरोपीय देशों के विरुद्ध धमकी ने अमेरिका, ब्रिटेन ,फ्रांस, कनाडा ,न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों को चिंता में डाल दिया हैद्य ऐसे में विश्व के देशों ने भारत की ओर आशा लगाकर भारतीय प्रधानमंत्री से यह उम्मीद की है कि वही पुतिन को अपने पुराने संबंधों के चलते विश्व शांति का पाठ पढ़ा सकते हैंद्य भारत की विश्व में नई सामरिक तथा आर्थिक स्थिति अब पहले से ज्यादा कई गुना मजबूत हो गई है अब भारत अपनी बात हर तरह से मनवाने में सक्षम भी हैद्य दूसरी तरफ भारतीय मूल के ऋषि सुनक का इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बन जाने से इंग्लैंड और भारत से अच्छे संबंध होने के साथ-साथ भारतीय विदेश नीति पर भी स्पष्ट रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ने की आशा है।

उज़्बेकिस्तान के समरकंद में शंघाई सहयोग संगठन की अति महत्वपूर्ण बैठक में भारत ने अपनी नई दमदार विदेश नीति का आगाज किया है। भारत अब वो पुराना भारत नहीं रहा है। इस बात को दुनिया के सामने इस संगठन की बैठक में भारत ने बड़ी मजबूती के साथ रखेगा । भारत की विदेश नीति के तहत भारत किसी एक मजबूत राष्ट्र का सहारा ना लेकर रूस और अमेरिका को एक ही तराजू में तौल रहा हैद्य भारत की नई कूटनीति तथा विदेश नीति की धमक अब स्पष्ट रूप से इस संगठन की बैठक में दिखाई दी हैद्य भारत में अपनी कूटनीति के चलते बैठक में उपस्थित चीन तथा पाकिस्तान को दरकिनार कर पूरे विश्व को समझा दिया है की चीन और पाकिस्तान दुनिया में अलग-थलग पड़ गए हैंद्य इसी तरह यूक्रेन के मामले में भारत में रूस के व्लादिमीर पुतिन को साफ साफ शब्दों में वैश्विक शांति की बातें समझाइ हैद्य अमेरिका को भी भारत में समझा दिया है की रूस और यूक्रेन मामले में वह अमेरिकी दबाव में ना आकर वाह रूस को मौन समर्थन देना नहीं छोड़ेगा औऱ इसके अलावा रूस से अपने व्यवसायिक रिश्ते बनाकर क्रूड आयल, डीजल तथा पेट्रोल की खरीदी निरंतर जारी रखेगाद्य उल्लेखनीय है कि भारत ने विगत 3 वर्षों से अपनी विदेश नीति कुछ इस तरह निर्धारित की है कि जिसमें बड़े राष्ट्रों पर केंद्रित न होकर वह हर राष्ट्र से संबंध बनाकर वैश्विक जगत में अपनी नई स्वतंत्र विदेश नीति का आगाज करने जा रहा हैद्य आने वाले समय में भी भारत की विदेश नीति एवं भारतीय गणतंत्र एक नई विदेश नीति लेकर उभरेगा। भारत को संभवत शंघाई सहयोग संगठन और द्ब20 तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद जैसे महत्वपूर्ण संगठनों में अध्यक्षता का अवसर भी मिलेगा क्योंकि आने वाले वर्ष में भारत वर्ष में ही शंघाई संगठन सहयोग और जी-20 की महत्वपूर्ण बैठक है आयोजित होने वाली हैं। जी 7 देशों में भी जर्मनी तथा कुछ अन्य देश इस समूह में भारत को शामिल करना चाहते हैं। इस तरह इन देशों के समर्थन से भारत जी 7 का महत्वपूर्ण हिस्सा भी बन सकता है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत ने अपने को स्वतंत्र विदेश नीति का पोषक बना कर रखा है और विगत वर्षों से भारत ने अपने को एक गुट निरपेक्ष राष्ट्र की तरह वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया है।

## सहमति पर विचार

किसी देश के कानून को न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांत का जितना पालन करना चाहिए, उतना ही उसे समय के साथ बदलना भी चाहिए। कर्नाटक उच्च न्यायालय की धारवाड़ पीठ ने इसी आधार पर, भारत के विधि आयोग से यह आग्रह किया है कि 'जमीनी हकीकत को ध्यान में रखते हुए' सहमति की उम्र के मानदंडों पर वह फिर से विचार करे। न्यायाधीशों ने कहा कि उन्हें यह सिफारिश इसलिए देनी पड़ी क्योंकि ऐसे कई मामले उनके सामने आए जिनमें 16 साल से ज्यादा (लेकिन 18 साल से कम) उम्र की नाबालिग लड़कियां किन्हीं लड़कों के प्यार में पड़कर भाग गईं। उन्होंने हैरत जताई कि आखिर यौन संबंध के मामले में लड़कियों की सहमति को इसमें शामिल क्यों नहीं किया गया? खासकर तब, जब पोक्सो अधिनियम के प्रावधानों के तहत आरोप लगाए गए। यह अधिनियम बच्चों को यौन शोषण से बचाने के लिए बनाया गया था। इसमें संभोग के लिए सहमति की उम्र को 16 साल से बढ़ाकर 18 साल कर दिया गया था। हालांकि, व्यावहारिकता के लिहाज से अगर देखें तो कई अध्ययनों से पता चलता है कि किशोर आयु वर्ग (16 वर्ष और उससे अधिक) के बीच इस अधिनियम के तहत दर्ज किए गए कई मामलों में रोमांस शामिल है। इनमें शादी के इरादे से एक-दूसरे के साथ सहमति से भाग जाने के मामले भी शामिल हैं। ऐसे लगभग हर मामले में प्रेमी के साथ भागी नाबालिग लड़कियों के माता-पिता ने पुलिस में मामला दर्ज करवाया। यौन संबंध की पुष्टि के बाद लड़कों पर पोक्सो अधिनियम की धारा लगा दी जाती है। लड़के कभी-कभी नाबालिग होते हैं या मुश्किल से शादी की कानूनी उम्र के होते हैं। यौन हमले के आरोप में मुकदमा चलने का मतलब होता है कि उनकी जिंदगी बदल जाना। इस कानून का मकसद भी वही है। एक तरफ, लड़कों को आपराधिक मुकदमे झेलने पड़ते हैं, वहीं लड़कियां जब अपने माता-पिता के फैसले का विरोध करती है, तो उन्हें भी सरकारी संस्थाओं में भेज दिया जाता है।

## आओ देखें कोई भी मतदाता पीछे न छूटे

मतपत्र के जबरदस्त बल के माध्यम से ताकत निर्बाध रूप से स्थानांतरित होती है, सराहनीय विचार - एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में चुनाव को एक पर्व उत्सवसे लेकर त्यौहार के रूप में मनाया जाता है क्योंकि जहां चुनाव होता है वहां की चहल पहल और माहौल ऐसा होता है, मानो कोई उत्सव हो रहा है यही एक पल होता है जो मतदाता के रूप में चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के महत्व को रेखांकित करता है, क्योंकि मतदाता एक मालिक के रूप में होता है तथा सारे नेता मंत्री से लेकर पीएम तक भी जनता के सामने नतमस्तक होते हैं जो अभी निरंतर कुछ दिनों से हम टीवी चैनलों पर ग्राउंड रिपोर्टिंग देख रहे हैं। बता दें हिमाचल प्रदेश में एक चरण में 68 विधानसभा सीटों का चुनाव 12 नवंबर 2022 को, गुजरात में 1 और 5 दिसंबर 2022 को 182 सीटों और दिल्ली प्रदेश में एकीकृत एमसीडी का चुनाव 4 दिसंबर 2022 को 250 सीटों पर हो रहा है जहां की सरकारों को हम मतदाता ही बना या उलटफेर कर सकते हैं, इसीलिए हम सभी को बाहर निकल कर मतदान जरूर करना है क्योंकि मतपत्र के जबरदस्त बल के माध्यम से हम ताकत को निर्बाध रूप से स्थानांतरित कर सकतेहैं इसीलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आओ देखें कोई भी मतदाता पीछे ना छूटे।

साथियों बात अगर हम मतदाता की ताकत, मतदान की करें तो पिछले कई दशकों से हम देख रहे हैं कि मतदान का प्रतिशत अपेक्षाकृत बहुत कम होता है किसी राज्य में 50 फ़ीसदी से भी कभी-कभी कम होता है। यूपी जैसे बड़े राज्य में भी 50 से 60 फ़ीसदी के आस पास होता है। मेरा मानना है कि इस बार उपरोक्त तीनों चुनाव में 90 फ़ीसदी से अधिक मतदान कर अपनी ताकत को स्थानांतरित करना है जो हम चाहते हैं उसे मतदान के माध्यम से करके दिखाना है क्योंकि हमारे मतदान का प्रतिशत जितना अधिक होगा उसी अनुरूप में हम जिस पार्टी की सरकार चाहते हैं वह हमारी चाहत पूरी होगी इसलिए हम सबको इस उत्सव में सहभागी होकर देखना है कि कोई भी मतदाता पीछे न छूटे हमें इस उत्सव रूपी यज्ञ में अपने मतदान रूपी आहुति जरूर देना है।

साथियों बात अगर हम चुनाव आयोग की करें तो भारतीय चुनाव आयोग की प्रतिष्ठा का वैश्विक स्तरपर डंका है, जो हम देख चुके हैं कि वैश्विक मंचों पर चुनाव आयोग के सुझाव मार्गदर्शन हाथों हाथ लिए जाते हैं इसका उदाहरण दिया जाता है और आयोग की अनेक राज्यों में अलग-अलग स्तर पर अपने मतदान जनजागृती उत्सव, मतदान पंजीकरण - लोकतंत्र का पहला कदम जैसे अनेक कार्यक्रम चलाता है ताकि मतदाता जागरूक होकर अपनी ताकत को पहचाने।

साथियों बात अगर हम दिनांक 9 नवंबर 2022 को मुख्य चुनाव आयुक्त सहित अन्य चुनाव आयुक्त द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंनेकहा भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जिसकी जनसांख्यिकी पूरे यूरोप, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका से भी बड़ी है। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब सभी पात्र मतदाता पंजीकृत हों, मतदाता निर्भय होकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें और चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से हो। उन्होंने बताया कि आजादी के समय देश में केवल 16 प्रतिशत साक्षरता थी, फिर भी लोग मतदान करने गए। हमारे पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि देश के लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करना जानते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार वाला सबसे मजबूत लोकतंत्र है, जहां कई जगहों पर वोट डालने में महिलाओं की संख्या पुरुषों से भी ज्यादा है। भारत में युवा आबादी का प्रतिशत अधिक है, लोकतंत्र को केवल ज्यादा संख्या में युवा पात्र मतदाताओं के पंजीकरण के साथ ही मजबूत किया जा सकता है।

इसलिए आयोग का लक्ष्य यह देखना है कि कोई भी युवा मतदाता पीछे न छूटे। देश के युवाओं के लिए अपने संदेश में उनसे मतदाता बनने का आग्रह किया क्योंकि यह लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, इस देश की जनसांख्यिकी को देखें। इस विशाल देश को देखें जिसमें हम साथ मिलकर रहने में यकीन रखते हैं, चर्चा में यकीन रखते हैं, और हम अपने सभी मुद्दों को सहभागी चुनावों के माध्यम से हल करने में विश्वास रखते हैं। और यह तभी संभव है जब हम मतदान करें। ताकत जो है वो मतपत्र के जबरदस्त बल के माध्यम से निर्बाध रूप से स्थानांतरित होती है। चुनाव हमें व्यवस्था की निरंतरता देता है और युवाओं और समाज में मौजूद लचीलेपन को बरकरार रखता है ।सीबीसी की अतिरिक्त महानिदेशक ने कहा कि सीबीसी व्यवस्थित मतदाता शिक्षा और चुनावी भागीदारी कार्यक्रमों के तहत अपनी क्षेत्रीय और जमीनी गतिविधियों के माध्यम से भारत के चुनाव आयोग के संचार और आउटरीच अभियानों का एक अभिन्न अंग रहा है। देश भर में लगभग 150 स्थानों पर अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ, सीबीसी ने देश में विभिन्न संचार अभियानों के लिए ईसीआई के साथ मिलकर काम किया है।

उन्होंने कहा कि इस संदेश को अंतिम मील तक पहुंचाने के लिए सीबीसी ने अपनी सभी संसाधनों का उपयोग किया है जिसमें देश के नागरिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करने के लिए दूरदराज के गांवों में लोक कलाकार मंडलियों और फील्डअधिकारियों द्वारा डेरा जमाना, युवाओं तक पहुंचने के लिए उन्नत तकनीकी घटकों का उपयोग करकेअभियान चलाना आदि शामिल है।

## मेरे पास टाइम नहीं

मेरे पास पचासों काम रहते है
तुम्हारे समान खाली हूं क्या
मैं बहुत बिजी रहता हूं
मेरे पास टाइम नहीं

सिर्फ चार घंटे मित्रों से बतियाता हूं
सिर्फ दो घंटे धूप में बैठता हूं
सिर्फ दो घंटे नावेल पढ़ता हूं
मेरे पास टाइम नहीं है

संस्थाओं का काम अपने मतलब से करता हूं
स्वार्थी मतलबी बिजी आदमी हूं
कोई मुझसे बात करने आया तो छोड़ता नही

## शार्ट न्यूज

### पेंटिंग प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

सोनभद्र। स्थानीय भारतीय इंटर कालेज में त्रिदिवसीय विज्ञान प्रदर्शनी के दूसरे दिन बृहस्पतिवार को छात्रों ने पेंटिंग प्रदर्शनी का आयोजन किया ।राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिक संचार हेतु भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विज्ञान प्रदर्शनी मेला का आयोजन आकर्षण का केंद्र रहा।पेंटिंग,सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी विज्ञान खोज पर आधारित माडल प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सहायक प्रो जीबी पंत विश्व विद्यालय प्रयागराज डॉ प्रमोद पांडेय ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करके कार्य करना होगा।बिना लक्ष्य के कोई सफल नही हो सकता है।मन एक प्रयोगशाला है इसमें तरह तरह के विचार आते रहते हैं लेकिन लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए।उन्होंने महाभारत का उदाहरण दिया।जिसमें अर्जुन को चिड़िया की आंख ही दिख रही थी।आगे उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उदाहरण देकर बताया कि कैसे उन्होंने मन को एकाग्र होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।इस अवसर पर रितांशु गुप्ता,कार्यक्रम के संयोजक सिद्धार्थ पांडेय,गणेश देव पांडेय,रामानंद पांडेय,प्रमोद श्रीवास्तव,प्रेम प्रकाश पांडेय,लवकुश चौबे,रवि सिंह,रीना राय,सुमित पटेल,मृत्युंजय सिंह,कमलेश पटेल,शांतनु पांडेय आदि मौजूद रहे।

### रोडवेज बस से कानपुर से लखनऊ आ रही दो सगी बहनें रास्ते से गायब, अपहरण की आशंका

**लखनऊ।** कानपुर से लखनऊ रोडवेज की बस से आ रही दो सगी बहनों के लापता होने से सनसनी फैल गई है। जानकारी के मुताबिक दोनों बहनें रोडवेज बस में कानपुर से लखनऊ आने के लिए बैठी थी। बताया जा रहा है कि उन्नाव में उनकी अंतिम लोकेशन मिली है। उन्नाव के बाद से उनकी लोकेशन नहीं मिल रही है। कहा जा रहा है कि दोनों बहनें गुरुनानक जयंती के मौके पर पाठ के लिए कानपुर गई थी और फिर रोडवेज की बस से वापस लखनऊ लौट रह थी। बेटियों के गायब होने की खबर मिलने के बाद से उनके घर में कोहराम मचा हुआ है। परिवार वालों ने कृष्णा नगर थाने में तहरीर दी है। परिवार दोनों लड़कियों के अपहरण की आशंका जता रहा है। दोनों बेटियों के गायब होने के बाद परिवार वाले कृष्णा नगर थाने में जमा हैं और लगातार हंगामा कर रहे हैं। दूसरी तरफ कृष्णा नगर पुलिस ने उन्नाव पुलिस से संपर्क किया है। पुलिस दोनों लड़कियों को ढूढ़ने के लिए टोल प्लाजा पर लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है। इसके अलावा दोनों की कॉल डिटेल भी निकलवाई जा रही है। पुलिस ये भी देख रही है कि दोनों की लोकेशन किस जगह आकर बंद हुई। खबर है कि दोनों बहनों ने अपने घर पर फोन कर बताया था कि बस काफी खाली है। यही नहीं, दोनों ने बस के भीतर की वीडियो भी बनाकर भेजी थी। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। दोनों लड़कियों का मोबाइल स्विच ऑफ आ रहा है।

### कानपुर के रिहाइशी इलाकों में घुसा तेंदुआ

कानपुर। कानपुर शहर के रिहाइशी इलाके अर्मापुर कॉलोनी में तेंदुए ने दस्तक दे दी है। बुधवार सुबह तेंदुआ कॉलोनी में देखा गया। शोर मचा तो कॉलोनी के पीछे झाड़ियों में दुबक गया। पुलिस और वन विभाग की टीमों ने कांबिंग की पर उसका कुछ पता नहीं चल सका। वन विभाग ने कॉलोनी के लोगों से अकेले मॉर्निंग वॉक पर न निकलने, छोटे बच्चों को अकेले बाहर न जाने देने के लिए अलर्ट किया है। कई दिन तक आईआईटी और एनएसआई में दिखने के बाद तेंदुआ मंगलवार को स्माल आर्म्स फैक्टरी में दिखा था। वॉच टॉवर से सुरक्षाकर्मी के शोर मचने पर वह आर्डिनेंस फैक्टरी में कूद गया। बुधवार को पहली बार तेंदुआ अर्मापुर कालोनी के जी-वन ब्लाक के पास टहलता दिखा। कुछ देर बाद स्माल आर्म्स फैक्टरी और आर्डिनेंस फैक्टरी में उसकी चहलकदमी की खबर मिली। वन विभाग की टीमों ने उसे पकड़ने के लिए जाल बिछाए हैं। पूरे परिसर में इंफ्रारेड कैमरे लगाए गए हैं।

### गोरखपुर में 3 जालसाज गिरफ्तार

गोरखपुर। गोरखपुर पुलिस ने तीन शातिर जालसाजों को गिरफ्तार किया है। यह गैंग ट्रक का नंबर प्लेट बदलकर पहले ट्रांसपोर्टर से सामान बुक करता था और फिर रास्ते में सामान बेच देता था। ट्रांसपोर्टर जब ट्रक की पड़ताल करता तो नंबर प्लेट के आधार पर ट्रक किसी और की निकलती थी। गोरखपुर के ट्रांसपोर्टर की शिकायत पर कैंट पुलिस ने गुरुवार को तीन जालसाजों को अरेस्ट कर लिया। उनके पास से पुलिस ने 72 हजार रुपए कैश, सामान और ट्रक भी बरामद कर लिया है। तीनों के खिलाफ चोरी, धोखाधड़ी और जालसाजी का केस दर्ज कर पुलिस कार्रवाई कर रही है। पकड़े गए बदमाशों की पहचान, मो. अयूब हमद, निवासी चमकनी गाड़ीपुरा थाना रामचन्द्रमिशन शाहजहांपुर, रियाजुद्दीन और आकाश, निवासी माथन थाना पिसावा, सीतापुर के रुप में हुई है।

### 6 करोड़ के सिंहासन पर विराजमान हुई राधा रानी

मथुरा। मथुरा के बरसाना में श्री जी मंदिर में राधा-रानी की हीरे से बनी सिंहासन में विराजमान होकर भक्तों को दर्शन दी। श्री बृज हरि संकीर्तन मंडल ने 55 किलो चांदी, 5 किलो सोना और 10 लाख के हीरे से स्वर्ण रजत सिंहासन राधा रानी मंदिर में बुधवार को भेंट किया।6 करोड़ की लागत से दिल्ली के 10 ज्वैलर्स ने 6 महीनों में राधा-रानी के सिंहासन को तैयार किया। राधा-रानी का भक्त विशेष उत्सव जैसे होली, राधा अष्टमी पर ब्रह्मांचल पर्वत पर दर्शन कर सकेंगे। संकीर्तन मंडल के एक सदस्य ने बताया कि बब्बू भैया 8 साल की उम्र से ही अपने पिता चिमनलाल के साथ बरसाना आते थे।52 सालों से बिना पैसे लिए भैया घरों में भजन कीर्तन का गायन कर रहे हैं। श्री जी की प्रेरणा से उन्होंने राधा रानी के भक्तों से सिंहासन बनवाने के लिए कहा। जिस पर भक्तों का समूह तैयार हो गया था। जिसके लिए लोगों से चंदा एकत्र कर 55 किलो चांदी, 5 किलो सोने के साथ दस लाख के हीरों से सिंहासन का निर्माण कराया। संकीर्तन मंडल के द्वारा सिंहासन पर राधा रानी के विराजमान होने की खुशी में मंदिर परिसर में भंडारे का आयोजन किया गया। दिल्ली में श्री ब्रज हरि संकीर्तन मंडल द्वारा बनवाया गया सिंहासन निजी सुरक्षा कर्मियों की देख-रेख में बुधवार को बरसाना पहुंचा। जहां मंदिर प्रबंधन और श्री ब्रज हरि संकीर्तन मंडल के भक्तों द्वारा इसे ब्रहमांचल पर्वत पर बने राधा रानी के मंदिर में ले गए। मंदिर में पहुंचने के बाद सिंहासन की शुद्धि की गई। इसके बाद नव निर्मित सिंहासन में विराजमान हो राधा रानी ने भक्तों को दर्शन दिए।

### लॉरेंस गैंग ने मेरठ में टीचर से मांगी रंगदारी

मेरठ। पंजाबी सिंगर सिद्दू मूसेवाला हत्याकांड में आरोपी लॉरेंस विश्नोई गैंग ने मेरठ के शिक्षक से 5 लाख रुपए की रंगदारी मांगी है। टीचर के पास अनजान नंबर से वॉट्सऐप कॉल कर 5 लाख रुपए मांगी हैं। वहीं, पैसे न देने पर टीचर को जान से मारने की धमकी दी है। टीचर की शिकायत पर गंगानगर थाने में अज्ञात में मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने जाचं शुरू कर दी है। मामला नवजीवन इंटर कॉलेज के कस्तला का है। शिक्षक डॉ. नीरज शर्मा ने बताया, पहले दिन 8 नवंबर को अनजान नंबर से वॉट्सऐप कॉल आया। कॉल करने वालों ने कहा कि हम विश्नोई गैंग से बोल रहे हैं। उसी गैंग की डीपी भी लगा रखी थी। गाली गलौज करते हुए कहा कि तेरे बारे में सब जानता हूं। तू कहां उठता, बैठता है मुझे सब पता है। कॉलर ने मुझसे 5 पेटी मांगते हुए कहा अगर 5 पेटी नहीं दी तो तेरे और तेरे परिवार के लिए अच्छा नहीं होगा। तेरे घर पर तेरी लाश आएगी, जान से मारने की धमकी भी दी। टीचर ने बताया कि बाद में कॉलर ने डीपी भी हटा दी। शिक्षक डॉ. नीरज शर्मा ने बताया, 9 नवंबर को पूरा मामला कॉलेज में अपने साथियों को बताया। इसके बाद 112 नंबर पर कॉल किया और पुलिस कॉलेज पहुंची। पुलिस के आने के बाद मैंने उसी नंबर पर जिससे रंगदारी मांगी गई थी दोबारा कॉल किया। तो इंस्पेक्टर ने खुद उस नंबर पर डॉ. नीरज बनकर बात की, तब कॉलर ने पुलिस के सामने ही कहा कि एकाउंट नंबर दूंगा उसमें 5 पेटी ट्रांसफर कर देना।

# बाराबंकी पहुंचे नगर विकास मंत्री एके शर्मा

## साफ-सफाई की जानी जमीनी हकीकत, सफाई कर्मचारियों को हाथ जोड़कर किया प्रणाम

**बाराबंकी।** नगर विकास और ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने गुरुवार को बाराबंकी शहर का स्थलीय निरीक्षण किया। यहां पर उन्होंने स्थानीय निवासियों से डेंगू, संचारी रोग बुखार और मच्छर जनित बीमारियों से पीड़ित रोगियों के बारे में पूछा। उन्हें साफ-सफाई के लिए जागरूक किया। उन्होंने एक घर के सामने रखे कूलर को खुलवा कर चेक कराया। इस दौरान उन्होंने सफाई कर्मचारियों के सामने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया। कहा कि यह समझ लीजिए आप छोटे सफाई कर्मचारी और हम बड़े सफाई कर्मचारी हैं। हम सब को मिलकर जनता की सेवा करनी है।

मंत्री एके शर्मा ने सत्यप्रेमी नगर में साफ-सफाई का निरीक्षण किया। यहां उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नगर सेवा पखवाड़ा अभियान को अपने-अपने क्षेत्रों में युद्धस्तर पर चलाएं, जिससे लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। निरीक्षण के दौरान ही उन्होंने एक घर के सामने रखे कूलर को खुलवा कर चेक कराया, जिसमें पानी नहीं मिला। इस पर उन्होंने लोगों की तारीफ भी की। कहा कि हमें ऐसे ही जागरूक होना पड़ेगा। हालांकि निरीक्षण के दौरान मंत्री को एक-दो जगह गंदगी भी मिली। जिसकी तत्काल सफाई कराने के उन्होंने निर्देश दिए। मंत्री एके शर्मा ने कहा कि 1 नवम्बर से 15 नवम्बर तक नगर सेवा पखवाड़ा अभियान पूरे प्रदेश के शहरी इलाकों में संचालित किया जा रहा हैं। इस दौरान डेंगू और संचारी रोगों के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। गुरुवार को वह खुद जमीनी हकीकत जानने बाराबंकी आए हैं। यहां आकर उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हमारे पास जनता की सेवा का यह सुनहरा मौका है। हमें इसे हर हाल में करना ही है।

# शरारती तत्व ने तोड़ी अंबेडकर प्रतिमा, ग्रामीणों का हंगामा

अंबेडकरनगर। अंबेडकरनगर में सम्मनपुर थाना क्षेत्र के इस्माइलपुर दुक्खर गांव में स्थापित अंबेडकर की प्रतिमा को अराजक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना से ग्रामीणों में आक्रोश है। सूचना पर पहुंचे प्रशासनिक विभाग के अधिकारियों ने दूसरी प्रतिमा मंगा कर टूटी हुई प्रतिमा की जगह पर स्थापित करा कर ग्रामीणों के गुस्से को शांत कराया। अकबरपुर जलालपुर मुख्य मार्ग पर इस्माइलपुर दुक्खर गांव में बीती रात अराजक तत्वों ने डॉ.अंबेडकर की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया। इससे ग्रामीणों में उबाल आ गया। जब सुबह इसकी जानकारी ग्रामीणों को हुई तब मौके पर वहां भारी भीड़ इकट्ठा हो गई। ग्रामीणों ने हंगामा शुरू कर दिया।

गांव निवासी प्रहलाद कुमार सेन ने इसकी सूचना पीआरवी 112 पुलिस को दी। ग्रामीणों की नाराजगी को भांपते हुए जानकारी मिलने पर एसडीएम अकबरपुर पवन जायसवाल, पुलिस अधीक्षक अजीत कुमार सिंहा, सीओ सिटी सुरेश कुमार मिश्र, थानाध्यक्ष दीपक सिंह रघुवंशी मय फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गए। आनन-फानन में दूसरी प्रतिमा मंगा कर टूटी हुई प्रतिमा की जगह पर स्थापित करा कर ग्रामीणों को शांत कराया। सुरक्षा के दृष्टिगत दो सिपाहियों की ड्यूटी लगा दी गई। प्रहलाद कुमार सेन के नेतृत्व में ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन भी दिया। और प्रतिमा की सुरक्षा के दृष्टिगत बाउंड्री वाल कराने की मांग की।

ज्ञापन देने वालों में मोहनलाल, सोहनलाल, राजेश कुमार, राम सूरत, महेंद्र, ऊधवराम, कामता प्रसाद, रामसेवक, बाबूराम, गया प्रसाद आदि प्रमुख रहे। सम्मनपुर प्रभारी निरीक्षक दीपक सिंह रघुवंशी ने बताया कि अज्ञात के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

# हत्या के मामले में दम्पति को आजीवन कारावास की सजा

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले की स्थानीय अदालत ने हत्या के मामले में पति और पत्नी को आजीवन की सजा सुनायी और साथ ही दोनों पर 17-17 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है।

अपर न्यायाधीश पंचम विद्वान ने अभियोजन की ओर से पेश गवाहों और प्रस्तु साक्ष्य को सही माना और गुरुवार को अदालत में राजू और पद्मा देवी को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनायी और दोनों पर 17-17 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। अदालत ने बचाव पक्ष के दलिलों को सिरे से ठुकरा दिया और दोनों को जेल भेज दिया गया।

अभियोजन पक्ष के 2012 को शहर कोतवाली थाना क्षेत्र के महुअरिया मोहल्ले में एक युवक की हत्या की गयी बाद में पुलिस ने शव बरामद कर लिया था।

शव की शिनाख्त राजेंद्र पुत्र मोतीलाल के रूप में हुई। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना शुरू की। विवेचना के दौरान राजेंद्र की हत्या का कारण प्रेम प्रसंग था।

अभियोजन द्वारा प्रस्तुत आरोप पत्र में बताया गया कि पीड़ित राजेंद्र का प्रेम पद्मा देबी से था। पद्मा ने राजू उर्फ सत्यनारायण से शादी कर ली, लेकिन राजेंद्र उससे मिलने बराबर जाता था।

### अम्बेडकरनगर में किसानों की समस्याओं को लेकर धरना

अम्बेडकरनगर। अंबेडकरनगर में भारतीय किसान समिति के पदाधिकारियों ने किसानों की विभिन्न मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट के निकट अंबेडकर प्रतिमा के प्रांगण में धरना दिया। धरने के बाद जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया। पदाधिकारियों ने मांग किया कि सरकार छत्तीसगढ़ सरकार की तर्ज पर यहां भी धान का एमएसपी 2660 रुपया करें। भारतीय किसान समिति के सदस्य अश्विनी कुमार ने कहा कि धान क्रय केंद्रों पर सचिव के मनमानी के कारण किसानों को परेशानियां झेलना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि तौल केंद्रों पर किसानों के मोटे धान की खरीद नहीं हो रही है, जिससे किसान परेशान है।

# फिरोजाबाद में छात्रा की मौत के बाद बवाल

## छात्राओं ने जाम लगाया, पथराव, तोड़फोड़

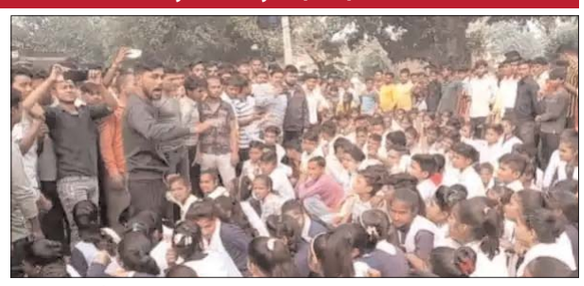

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद के थाना रामगढ़ क्षेत्र में डंपर की टक्कर से छात्रा की मौत के बाद साथी छात्राओं का गुस्सा फूट पड़ा। स्कूल की छात्राओं ने सड़क पर बैठकर जाम लगा दिया। छात्राओं के आक्रोश की बात पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। इसी बीच बवाल बढ़ गया और बड़े अधिकारी को मौके पर बुलाने की मांग करते हुए पथराव हो गया। इससे कई वाहनों के शीशे टूट गए।

नगला धनी नेपई निवासी दिव्या 12 वर्ष पुत्री सोमवीर रागी इंटर कॉलेज चनौरा में कक्षा 6 की छात्रा थी। वह गुरुवार को साइकिल से स्कूल आ रही थी। इसी दौरान डंपर ने उसे टक्कर मार दी। हादसे में छात्रा की मौके पर मौत हो गई। हादसे के बाद वहां काफी लोग एकत्रित हो गए। पता चलते ही उसके परिवारी जन भी वहां पहुंच गए।

स्कूल की छात्राएं सड़क पर आ गईं। उन्होंने सड़क पर जाम लगा दिया। इस दौरान वाहनों में तोड़फोड़ भी की गई। बड़े अधिकारी को मौके पर बुलाने की मांग को लेकर छात्राओं ने पथराव शुरू कर दिया। पथराव से क्षेत्र में भगदड़ मच गई। लोग अपने वाहनों को छोड़कर भाग गए।

छात्राओ ने घंटों सड़क पर बैठकर हंगामा काटा। पुलिस ने छात्राओं को समझाने का प्रयास किया। छात्राएं बड़े अधिकारी को मौके पर बुलाने की मांग पर अड़ी रहीं।

# यूपी पुलिस के माथे पर कलंक, चौकी में घुसकर चोरों ने पिस्तौल-कारतूस के साथ वर्दी भी उड़ाई

कानपुर। उत्तर प्रदेश पुलिस का ध्येय वाक्य है सुरक्षा आपकी, संकल्प हमारा.. मगर कानपुर की आउटर पुलिस अपनी और अपने सामान की सुरक्षा तक न कर सकी। जानकारी के मुताबिक बुधवार को बिधनू थाने के की न्यू आजाद चौकी में घुसकर चोरों ने पिस्तौल और कारसूत पार कर दिए। कमाल की बात ये है कि थाने में चौकी प्रभारी सुधाकर पांडे सो रहे थे। थाना प्रभारी इतना निश्चिंत होकर सो रहे थे कि उन्हें चोरों की आहट तक नहीं लगी और वो पिस्तौल-कारतूस के साथ-

साथ वर्दी भी लेकर चलते बने और चौकी प्रभारी सोते रहे।

जानकारी के मुताबिक बुधवार रात के अंधेरे में चोर पुलिस चौकी के अंदर घुस कर सरकारी असलहा, कारतूस, कपड़ों से भरा बैग चोरी कर ले गए और चौकी इंचार्ज समेत पूरा अमला आराम की नींद सोता रहा। सुबह जब ड्यूटी पर सिपाही पहुंचा तो चौकी की हालत देख हड़कंप मच गया। चौकी में चोरी की सूचना आग की तरह फैली तो आनन-फानन में एसपी आउटर समेत पूरा अमला पहुंच गया। चौकी इंचार्ज को निलंबित कर दिया गया।

बिधनू थाना क्षेत्र में आने वाली न्यू आजाद नगर पुलिस चौकी में बुधवार रात चौकी इंचार्ज सुधाकर पांडे ड्यूटी पर थे। रात को ही चोर अंदर घुस कर चौकी इंचार्ज की पिस्टल, 10 कारतूस, कपड़ों से भरा एक बॉक्स चोरी कर ले गए। चोरों को चौकी इंचार्ज की नींद पर इतना भरोसा था कि उन्होंने एक अलमारी और 4 बक्सों के तालों को भी तोड़ा।

सुबह सिपाही तेज प्रताप और एक होमगार्ड पहुंचा तो चौकी के अंदर सामान अस्त व्यस्त देखा। सूचना पर एसपी आउटर तेज स्वरूप सिंह फोर्स के मौके पर पहुंचे, छानबीन करने के बाद चौकी इंचार्ज को निलंबित कर दिया। सतबरी निवासी एक व्यक्ति को उठा कर पूछताछ की जा रही है।

# पुलिस ने इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया, एक घायल

एजेंसी

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में कल रात ट्रेक्टर सवार बदमाशों और पुलिस के बीच हुई मुठभेड़ में 25000 के ईनामी दो बदमाशों को अवैध हथियारों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों ओर से चली गोली में एक बदमाश पुलिस की गोली लगने से घायल हो गया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार ने बताया कि जिने में वांछित अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत जिले के थाना बीबीनगर पुलिस सैदपुर पुलिया पर संदिग्ध वाहन/व्यक्तियों की जांच कर रही थी कि तभी ट्रेक्टर पर सवार होकर दो संदिग्ध व्यक्तियों के परतापुर गंगावली नहर पटरी से सैदपुर की ओर आने की पुलिस को सूचना मिलने पर पुलिस तुरंत गंगावली बम्बा पर पहुँची। थोड़ी देर बाद पुलिस को एक ट्रेक्टर आता दिखाई दिया। पुलिस ने ट्रेक्टर चालक को रूकने का इशारा करने पर बदमाश ट्रेक्टर को तेजी से मोड़कर भागने का प्रयास करने लगे। पुलिस के पीछा करने पर उनका ट्रेक्टर गढ्डे में धंस गया। बदमाशों ने अपने को पुलिस से घिरता देख पुलिस पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी ।

### सगाई से पहले दुल्हन प्रेमी के साथ भागी

बरेली। बरेली में सगाई से पहले दुल्हन प्रेमी संग फरार हो गई। परिवार ने पुलिस को बताया कि 9 नवंबर को सगाई का कार्यक्रम था। इसके लिए दुल्हन ब्यूटी पार्लर जा रही थी। जहां एक युवक ने अपने भाई और दोस्त के साथ मिलकर अपहरण किया है। दुल्हन के पिता ने इज्जतनगर थाने में एफआईआर कराई है। पूरे मामले में पुलिस मोबाइल की कॉल डिटेल के आधार पर लड़की की बरामदगी का प्रयास कर रही है। पुलिस की जांच में आया है कि यह मामला प्रेम प्रसंग का है। एक कॉलोनी निवासी 25 साल की युवती की 9 नवंबर को सगाई होनी थी। सगाई से एक दिन पहले युवती अपने घर से ब्यूटी पार्लर जाने की बात कहकर घर से गई थी। इस दौरान युवती रात तक घर नहीं लौटी। उधर घर पर सगाई के कार्यक्रम की तैयारियां चल रहीं थी। परिजनों ने जब युवती के मोबाइल पर कॉल की तो मोबाइल नंबर स्विच ऑफ आया। इस दौरान परिजनों की बेचैनी बढ़ती गई। रात तक भी युवती का कोई सुराग नहीं लगा। 9 नवंबर की रात को परिजनों ने इज्जतनगर में एफआईआर कराई है। घर में बेटी की शादी की तैयारियां धूम धूम से चल रही थीं। लेकिन सगाई से पहले दुल्हन संदिग्ध हालत में लापता हो गई। परिवार ने थाने में जो तहरीर दी उसमें पिता ने अपहरण का आरोप लगाया है। युवती के पिता ने पुलिस को बताया कि शाकुल मिश्रा नाम का युवक अपने भाई और दोस्त के साथ हमारी बेटी को जबरन अपहरण करके ले गया।

# खुलासा : अवैध संबंधों में बाधा बन रहा था पति

## पत्नी ने प्रेमी संग मिलकर बनाया था खतरनाक प्लान, 3 आरोपी गिरफ्तार

एजेंसी

नोएडा। ग्रेटर नोएडा में अवैध संबंधों के चलते पत्नी ने ही अपने प्रेमी संग मिलकर अपने पति की ईंट से कुचलकर कथित तौर पर हत्या कर दी थी। पुलिस ने इस हत्याकांड का खुलासा करते हुए बताया कि मंगलवार को इस मामले में आरोपी पत्नी समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि शव को गांव के पशु चिकित्सालय के पास फेंका गया था।

सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) बृजनंदन राय ने बताया कि दनकौर थाना क्षेत्र के देवटा गांव में रहने वाले सतीश नामक व्यक्ति की 19 मई को ईंट से कुचलकर हत्या कर दी गई थी। एसीपी ने कहा कि सतीश के परिजनों ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। उन्होंने बताया कि जांच के दौरान पुलिस ने मुखबिरी और सर्विलांस विधि के आधार पर मृतक की पत्नी पूजा तथा उसके प्रेमी रामकिशोर और रामकिशोर के साथी मनजीत को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पूछताछ से पुलिस को पता चला कि पूजा के रामकिशोर से अवैध संबंध हैं। सतीश को रास्ते से हटाने की नीयत से उन्होंने घटना वाले दिन उसकी ईंट से कुचलकर हत्या करने के बाद शव को पशु चिकित्सालय के पास फेंक दिया था। उन्होंने बताया कि आरोपियों के पास से एक मोबाइल फोन बरामद हुआ है, जिससे पुलिस को हत्या से जुड़े अहम सुराग मिला है। पुलिस ने इस मामले में आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

# भारत-नेपाल की बीच आम चुनाव को लेकर बैठक

एजेंसी

बहराइच। पड़ोसी देश नेपाल में आसन्न आम चुनाव 2022 को स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से बुधवार देर शाम नेपालगंज, बॉके स्थित सॉल्टी होटल में भारत-नेपाल समन्वय बैठक न हुई।

बैठक में नेपाल की ओर से बॉके एवं बर्दिया तथा भारत के जिलाधिकारी बहराइच डॉ दिनेश चन्द्र के नेतृत्व में बहराइच एवं श्रावस्ती जनपद के वरिष्ठ प्रशासनिक, पुलिस, एस.एस.बी., वन और अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

बैठक के दौरान बहराइच जिलाधिकारी डॉ चन्द्र ने आश्वस्त किया कि नेपाल में आसन्न आम चुनाव को स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने में हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। सीडीओ बांके सूर्य बहादुर खत्री ने बताया कि आम चुनाव के दृष्टिगत नेपाल सरकार द्वारा 17 नवम्बर की मध्य रात्रि 12:00 बजे से 20 नवम्बर की मध्य रात्रि 12:00 बजे तक भारत-नेपाल सीमा आवागमन के लिए बन्द रहेगी। श्री खत्री द्वारा इस अवधि में जनपद बहराइच एवं श्रावस्ती के अधिकारियों से सहयोग की अपेक्षा की गयी। बैठक के दौरान सीमा स्तम्भों, मादक पदार्थो और मानव तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने, सीमा पर हो रहे सड़क निर्माण, सीमा पर अन्य अवांछीय गतिविधियों पर अंकुश लगाये जाने, वन सम्पदा की सुरक्षा और अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर भी चर्चा की गयी।

भारत की ओर से डॉ चन्द्र ने नेपाल अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा, समन्यवक बैठकों से भारत और नेपाल के बीच प्राचीन युग से साझा सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक संबंधों को प्रगाढ़ करने में अहम भूमिका निभाई है जिसके लिए मैं सभी अधिकारियों का तहेदिल से आभारी हूं।

डॉ चन्द्र ने कहा, भारत और नेपाल के बीच के रिश्तों को रोटी और बेटी के रिश्तों के नाम से याद किया जाता है। जिलाधिकारी ने पिछली देर रात आए भूकम्प पर चर्चा करते हुए कहा कि नेपाल में आए भूकम्प के झटकों को उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली में भी महसूस किया गया।

इससे भी यह बात साबित होती है कि भूकम्प जैसी दैवीय आपदा में हमारी संवेदनाएं भी साझा रहती हैं। इसका मतलब है कि हम मात्र खुशियों में ही नहीं बल्कि गम में भी बराकर के शरीक हैं।

### बलरामपुर में डीएम ने विकास कार्यों की समीक्षा की

बलरामपुर। बलरामपुर में नई सड़क और सेतू के निर्माण सहित 37 बिंदुओं पर विकास कार्यों की जिलाधिकारी डॉ महेंद्र कुमार ने समीक्षा की। कलेक्ट्रेट में हुई समीक्षा बैठक में नदारद जिले के 5 अधिकारियों का 1 दिन का वेतन रोकते का निर्देश देते हुए उनसे जवाब मांगा। जिलाधिकारी ने नहरों में टेल तक पानी पहुंचने, नई सड़कों का निर्माण, राज्य मार्गों का अनुरक्षण, सेतु का निर्माण, सोलर फोटोवॉल्टिक सोलर सिंचाई पंप का वितरण, किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, निराश्रित गोवंश, सहभागिता योजना, ईयर टैगिंग, स्वच्छ भारत मिशन, पंचायत भवन का निर्माण की स्थिति, मत्स्य आवंटन, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह, कन्या सुमंगला योजना और आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण की समीक्षा की।

### हेमामालिनी, कलाकारों ने महारास का प्रस्तुतीकरण देकर किया भक्ति रस से सराबोर

मथुरा। उत्तर प्रदेश के मथुरा के जवाहर बाग के सुरम्य वातावरण में बुधवार देर शाम मथुरा की सांसद एवं मशहूर नृत्यांगना हेमामालिनी ने कार्तिक रास महोत्सव में महारास का जीवन्त प्रस्तुतीकरण कर वातावरण को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। हेमामालनी ने नाट्य विहार कला केन्द्र मुम्बई एवं कान्हा अकादमी वृन्दावन के कलाकारों के साथ अनूठे तरीके से महारास का प्रस्तुतीकरण कर 11 दिवसीय ब्रज रज उत्सव में चार चांद लगा दिए। मथुरा की सांसद एवं मशहूर सिने कलाकार ने कहा कि उनकी इच्छा आज पूरी हुई है। वैसे तो कुछ इसी प्रकार का कार्यक्रम वह वृन्दावन में कुछ वर्ष पहले कर चुकी हैं, लेकिन उनकी इच्छा थी कि वह इस कार्यक्रम को प्रकृति की गोद में उसी प्रकार करें जैसा द्वापर में राधाकृष्ण ने वृन्दावन में महारास किया था। जवाहर बाग के प्राकृतिक वातावरण में कार्यक्रम कर उन्हें द्वापर की अनुभूति हुई है। उन्होंने इस बात पर अफसोस व्यक्त किया कि उनके अनुरोध पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हिमाचल प्रदेश में चुनाव प्रचार के बीच मथुरा पहुंचे लेकिन बारिश के कारण कार्यक्रम को एक दिन आगे बढ़ाना पड़ा और जिससे श्री योगी इसमें शरीक नहीं हो पाए। ब्रज में महारास का आयोजन वैसे नया नहीं है, लेकिन सुश्री हेमामालिनी ने जिस प्रकार से इसे नया कलेवर देने की कोशिश की उसे हजारों की संख्या में आए कलाप्रेमियों ने न केवल पसंद किया, बल्कि ब्रज के संतों ने भी इसकी प्रशंसा की।उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम उप्र व्रज तीर्थ विकास परिषद के सहयोग से आयोजित किया गया। पौराणिक दृष्टि से महारास में यह गूढ तत्व छिपा है कि यदि राधा की पायल की झंकार न होती तो कान्हा की वंशी अनूठे स्वर न देती।

## शार्ट न्यूज

### रुपया 25 पैसे फिसला

मुंबई। आयातकों और बैंकरों की लिवाली से आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 25 पैसे की गिरावट लेकर 81.72 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया। वहीं, पिछले कारोबारी दिवस रुपया 45 पैसे मजबूत होकर 81.47 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। शुरुआती कारोबार में रुपया 14 पैसे गिरकर 81.61 रुपये प्रति डॉलर पर खुला। सत्र के दौरान यह लिवाली के दबाव में 81.92 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर तक आ गया। हालांकि बिकवाली होने से यह 81.54 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंचा। अंत में पिछले सत्र के 81.47 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 25 पैसे की गिरावट लेकर 81.72 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया।

### पेट्रोल और डीजल के दाम स्थिर

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में आई तेजी के बावजूद देश में पेट्रोल और डीजल के दाम में गुरुवार को भी टिकाव रहा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में लंदन ब्रेंट क्रूड आज 0.18 प्रतिशत बढ़कर 92.82 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी क्रूड 0.05 प्रतिशत की तेजी लेकर 85.87 डॉलर प्रति बैरल हो गया। घरेलू स्तर पर तेल विपणन कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में आज भी टिकाव रहा। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। देश में चार महीने से अधिक समय से ईंधन की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल के दाम 106.31 रुपये प्रति लीटर और और डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

### बेंगलुरू और हैदराबाद में पहुंचा जियो का ट्रू 5जी

नयी दिल्ली। अरबपति मुकेश अंबानी की दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो ने मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, वाराणसी और नाथद्वारा में जियो ट्रू5जी सेवाओं के सफल बीटा-लॉन्च के बाद जियो ने बेंगलुरु और हैदराबाद में भी ट्रू 5जी लॉन्च कर दिया है। यह दोनों ही शहर भारत के साइबर और डिजिटल हब माने जाते हैं। ट्रू5जी की असली परीक्षा इन्हीं शहरों में होगी। कंपनी ने अपने बयान में कहा है कि जियो ट्रू5जी पहले से ही छह शहरों में लाखों उपयोगकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है और इसकी प्रतिक्रिया बेहद सकारात्मक है। ग्राहकों की प्रतिक्रिया के आधार पर जियो लगातार अपने नेटवर्क को और मजबूत बना रहा है। जियो अपनी ट्रू5जी सेवाओं को चरण-वार तरीके से शुरू कर रहा है, ताकि ग्राहकों को सर्वोत्तम अनुभव दिया जा सके। जियो का कहना है कि ग्राहकों को अपने स्मार्टफ़ोन पर 500 एमबीपीएस से 1 जीबीपीएस के बीच स्पीड मिल रही हैं। ग्राहक डेटा का भी काफी अधिक मात्रा में उपयोग कर रहे हैं। कंपनी का दावा है कि यह भारत का एकमात्र ट्रू5जी नेटवर्क है और उसने अपने ट्रू 5जी नेटवर्क की कई खूबियां गिनाई हैं। 10 नवंबर से बेंगलुरू और हैदराबाद के जियो यूजरों को जियो वेलकम ऑफर के लिए आमंत्रित किया जाना शुरू हो गया है। इस ऑफर में ग्राहकों को बिना किसी अतिरिक्त कीमत के 1 जीबीपीएस के साथ स्पीड और अनलिमिटेड 5जी डेटा मिलेगा।

### सेल को दूसरी तिमाही में 386 करोड़ रुपये का नुकसान

नयी दिल्ली । इस्पात क्षेत्र की सरकारी कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेल) को चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 386 करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ा है जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में उसको 4304 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। सेल ने आज यहां जारी बयान में यह जानकारी देते हुये कहा कि सितंबर में समाप्त इस तिमाही में उसका कुल कारोबार 26246 करोड़ रुपये रहा है जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में राशि 26827 करोड़ रुपये रही थी। दूसरी तिमाही में कंपनी का उत्पादन भी घटा है। सितंबर में समाप्त तिमाही में उसका कुल उत्पादन 43 लाख टन रहा है जबकि वर्ष 2021 के सितंबर में समाप्त तिमाही में यह 44.7 लाख टन रहा था। इस दौरान कंपनी की बिक्री पिछले वर्ष के 42.8 लाख टन से घटकर इस वर्ष सितंबर में 42.1 लाख टन पर आ गयी।

### राज्यों के लिए कर हस्तातंरण के 116665 करोड़ रुपये जारी

नयी दिल्ली। केन्द्र सरकार ने राज्यों को कर हस्तातंरण के दो किश्त 116665 करोड़ रुपये आज जारी कर दिये। वित्त मंत्रालय ने यहां जारी बयान में कहा कि राज्यों के लिए इस मद में हर महीने 58333 करोड़ रुपये जारी किये जाते हैं। इस महीने दो महीने की राशि एक साथ जारी की गयी है। यह राशि राज्यों को पूंजी और विकास से जुड़े व्यय को गति देने के लिए जारी की गयी है। इसमें गोवा के लिए सबसे कम 450 करोड़ रुपये जारी हुये हैं जबकि उत्तर प्रदेश के लिए सबसे अधिक 20929 करोड़ रुपये। इस मामले में बिहार 11734 करोड़ रुपये के साथ दूसरे स्थान पर है। आंध्र प्रदेश 4721 करोड़ रुपये, अरूणाचल प्रदेश 2050 करोड़ रुपये, असम 3649 करोड़ रुपये, छत्तीसगढ़ 3975 करोड़ रुपये, गुजरात 4058 करोड़ रुपये, हरियाणा 1275 करोड़ रुपये, हिमाचल प्रदेश 968 करोड़ रुपये, झारखंड 3858 करोड़ रुपये, कर्नाटक 4255 करोड़ रुपये, केरल 2246 करोड़ रुपये, मध्य प्रदेश 9158 करोड़ रुपये, महाराष्ट्र 7370 करोड़ रुपये, मणिपुर 835 करोड़ रुपये, मेघालय 895 करोड़ रुपये, मिजोरम 583 करोड़ रुपये, नगालैंड 664 करोड़ रुपये, ओडिशा 5283 करोड़ रुपये, पंजाब 2108 करोड़ रुपये, राजस्थान 7030 करोड़ रुपये , सिक्किम 453 करोड़ रुपये, तमिलनाडु 4759 करोड़ रुपये, तेलंगाना 2452 करोड़ रुपये, त्रिपुरा 826 करोड़ रुपये , उत्तराखंड 1304 करोड़ रुपये और पश्चिम बंगाल 8777 करोड़ रुपये शामिल है।

### डिफंक ने सलोरा इंटरनेशनल के साथ मिलकर पेश किये कई उत्पाद

नयी दिल्ली। स्विडेन की कंपनी डिफंक ने भारतीय कंपनी सलोरा इंटरनेशनल के साथ मिलकर भारतीय ऑडियो उत्पाद वर्ग में प्रवेश किया है। कंपनी ने आज यहां स्वीडिश ब्रांड ने उत्पादों की एक नई सीरीज पेश की है जिसमें मल्टी-रूम, स्मार्ट वाई-फाई होम स्पीकर सॉल्यूशंस और ट्रूली वायरलेस स्टीरियो (टीडब्ल्यूएस) ईयरबड्स और ईयरपॉड्स की एक सीरीज शामिल है। कंपनी ने भारत में ब्रांड की बिक्री और मार्केटिंग डिस्ट्रीब्यूशन के लिए भारत की एक प्रमुख कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी, दिल्ली मुख्यालय वाली सलोरा इंटरनेशनल लिमिटेड के साथ एक रणनीतिक गठबंधन किया है। भारत में अपने उत्पादों के लॉन्च पर डिफंक के सीईओ और संस्थापक जोहान वाह्लबैक ने कहा भारत, हमारे लिए रणनीतिक रूप से एक महत्वपूर्ण बाजार है और नए बाजारों में ब्रांड के लिए हमारी विस्तार योजनाओं का एक स्वाभाविक कदम है। हम यहां काफी संभावनाएं देखते हैं और भारतीय उपभोक्ताओं के लिए प्रतिस्पर्धी उत्पादों की पेशकश की है। इन उत्पादों को प्रस्तुत करने के साथ, डिफंक उपभोक्ताओं के लिए असाधारण होम स्पीकर्स टेक्नोलॉजी की पेशकश पेश करने के अपने विजन को आगे बढ़ा रहा है। शुरुआत करने के लिए, डिफंक ने भारत मे वाई-फाई होम स्पीकर्स और ईयरबड्स के 5 मॉडल्स को लॉन्च किये हैं। वाई फाई होम स्पीकर में स्माल (40 वॉट) और लार्ज (100 वॉट) आकार शामिल हैं।

### अमेजन पर होम शॉपिंग स्प्री की पेशकश

नयी दिल्ली। ऑनलाइन मार्केटप्लेस अमेजन पर होम शॉपिंग स्प्री की पेशकश की गयी जिसमें एक ही छत के नीचे सर्दी के मौसम से जुड़ी जरूरी वस्तुओं की खरीदारी की जा सकती है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि यहां शॉपिंग करते हुए ग्राहक 12 नवंबर और 13 नवंबर2 को कई ऑफरों का लाभ उठा सकते हैं और एयर प्यूरीफायर, रूम हीटर, गीजर, कंबल, कम्फर्टर, दोहर, थर्मल, फ्लास्क, कैसरोल, ओवन, केटल्स, एयर फ्रायर, कारपेट, रग्स, डोरमैट, बारबेक्यू, चारकोल ग्रिल, राइडिंग ग्लव्स आदि जैसे होम एवं किचन अप्लायंसेस सहित सर्दी के मौसम से जुड़ी आवश्यक वस्तुओं पर भारी छूट प्राप्त कर सकते हैं। कंपनी ने कहा कि इसके अतिरिक्त, बाल दिवस पर, किड्स कार्निवल स्टोर से अपने बच्चों को उनके कमरे, स्कूल और हॉबी के लिए हर जरूरी चीज की खरीदारी करते भी कर सकते हैं।

# नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा 2024 के अंत तक होगा शुरू

ग्रेटर नोएडा। दिल्ली एनसीआर के जेबर में 70 करोड़ डॉलर की लागत से बन रहे नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के वर्ष 2024 के अंत तक शुरू करने की घोषणा करते हुये इसको बना रही कंपनी यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड ने आज कहा कि इसके निर्माण में उत्तर प्रदेश के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का समिश्रण देखने को मिलेगा।

कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी क्रिस्टोफ श्रेलमैन और मुख्य परिचालन अधिकारी किरण जैन ने यहां संवाददाताओं से चर्चा में यह घोषणा करते हुये कहा कि नोएडा अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट 2024 के अंत तक दिल्ली एनसीआर की हवाई यात्री परिचालन क्षमता में प्रतिवर्ष 1.2 करोड़ यात्रियों की बढ़ोत्तरी कर देगा।

श्रेलमैन ने कहा कि टाटा प्रोजेक्टस इसके निर्माण का काम शुरू कर दिया है और अभी एक हजार से अधिक श्रमिक काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस हवाई अड्डे का पहला चरण 2024 के अंत तक पूरा हो जायेगा। अभी यह 1300 हेक्टेयर में बन रहा है लेकिन जब इस हवाई अड्डा का चौथा चरण पूर्ण होगा तब इसकी वार्षिक क्षमता सात करोड़ यात्री होगी। जब पहले चरण की क्षमता का 80 प्रतिशत उपयोग होने लगेगा तब दूसरे चरण का निर्माण शुरू होगा और आगे भी इसी तरह से विभिन्न चरणों का निर्माण किया जायेगा। उनकी कंपनी का 40 वर्ष के लिए यह हवाई अड्डा मिला है। पहले चरण में एक रनवे और एक टर्मिनल का निर्माण किया जायेगा। अंतिम चरण पूरा हो जाने के बाद इस एयरपोर्ट के दो टर्मिनल और दो रनवे होंगे, जो हर साल 7 करोड़ यात्रियों को संभालेंगे।

जैन ने कहा कि इसके निर्माण में बनारस के घाटो से लेकर उत्तर प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों पर आधारित निर्माण पर जोर दिया गया

है। इसके साथ ही यात्रा को सुगम बनाने के लिए डिजिटल टेक्नालॉजी पर बल दिया जा रहा है ताकि विमान के परिचालन और यात्रियों का हवाई अड्डे पर लगने वाले समय में कमी लायी जा सके। इस एयरपोर्ट के डिज़ाइन की प्रेरणा भारत से ली गई है और इस क्षेत्र के वास्तुकला से प्रेरित अनेक तत्वों को इसमें शामिल किया गया है। इस टर्मिनल के बाहरी कोर्ट की सीढ़ियाँ वाराणसी और हरिद्वार के मशहूर घाटों से प्रेरित हैं, जो लोगों का स्वागत कर उन्हें एक साथ लाती हैं। हवेली का रूप व अहसास प्रदान करते हुए कोर्टयार्ड से ताजा हवा और धूप टर्मिनल के भवन में प्रवेश करेगी। क्षेत्र की महत्वपूर्ण नदियों से प्रेरित, सफेद, ट्रांसलुसेंट,और लहरदार छत बहती नदी का प्रभाव उत्पन्न करेगी। यात्री टर्मिनल में बारीक कला से बनी जालीदार स्क्रीन हैं, जो भारतीय वास्तुकला से प्रेरित हैं। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट उत्तर प्रदेश राज्य में एक भव्य प्रवेश का प्रदर्शन करेगा।

उन्होंने कहा कि यात्रियों के आवागमन के लिए इन टर्मिनल को आपस में जोड़ा जाएगा, पैदल चलने की दूरी और पर्यावरण पर प्रभाव को कम किया जाएगा। इसके अलावा, मॉड्युलर डेवलपमेंट प्लान द्वारा निर्माण के दौरान कार्यों पर प्रभाव को कम किया जाएगा। इंटर-टर्मिनल कनेक्टर हवाई जहाज और उनके परिचालन का लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। पहले रनवे की लंबाई 3900 मीटर होगी। दूसरे रनवे की लंबाई भी 3900 मीटर होगी जबकि तीस रनवे 4150 मीटर लंबा होगा।

उन्होंने कहा कि एयरपोर्ट से यात्रियों के सुगम व कॉन्टैक्टलेस आवागमन के लिए अत्याधुनिक टेक्नॉलॉजी के क्रियान्वयन के साथ डिजिटल एयरपोर्ट के रूप में नए मानक स्थापित करेगा। इसमें इंटीग्रेटेड सिस्टम्स और सेवाओं द्वारा मदद मिलेगी, जिसमें भारतीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय की डिजी यात्रा पॉलिसी के अनुरूप् इनडोर नैविगेशन, पैसेंजर फ्लो मैनेजमेंट, एवं स्मार्टफोंस द्वारा चेक-इन बैगेज ड्रॉप, और सभी चेकप्वाईंट्स पर डिजिटल प्रोसेसिंग जैस टेक्नॉलॉजीज़ का इस्तेमाल शामिल है।

उन्होंने कहा कि यह उत्तर भारत का मुख्य एयर कार्गो गेटवे बन जाएगा। यह एयरपोर्ट एक परिवेश का विकास करेगा, जिसमें अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्रोडक्ट होंगे, जो सर्वश्रेष्ठ प्रक्रियाओं द्वारा समर्थित होंगे, जिसमें स्विस एफिशियंसी, सहजता व क्वालिटी शामिल है। इसमें इंटीग्रेटेड मल्टीमोडल कार्गो हब उत्तर प्रदेश को विश्व में लॉजिस्टिक्स के नक्शे पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस एयरपोर्ट में लचीले, मॉड्युलर और किफायती कार्गो एवं लॉजिस्टिक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ निर्माण केंद्रों से तीव्र, सुविधाजनक और इंटरमोडल कनेक्टिविटी होगी।

# आईसीआईसीआई लोम्बार्ड ने की स्वास्थ्य, वाहन, कॉर्पोरेट क्षेत्र की नयी बीमा योजनाएं

नयी दिल्ली। देश में निजी क्षेत्र की अग्रणी गैर-जीवन बीमा कंपनी आईसीआईसीआई लोम्बार्ड ने 14 नए और पूर्व से बेहतर बीमा शुरू की है। जिसमें स्वास्थ्य, कॉर्पोरेट और मोटर वाहन क्षेत्र में ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार कंपनी ने नवीनतम श्रृंखला को स्थापित करते हुए इन बीमा को पेश किया।

आईसीआईसीआई लोम्बार्ड ने गुरुवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि ग्राहकों के बदलते व्यवहार और नए तकनीकी समाधानों और अवसरों से प्रेरित मूल विचार को ध्यान में रखते हुए यह घोषणा की गयी है। कुछ नया करना कंपनी के डीएनए का हिस्सा है।

कंपनी की योजनाओं में बीफिट बीमा अस्पताल में भर्ती न होने और छोटे इलाजों के लिए काम आएगा जबकि पेयू मोटर बीमा में उतना ही प्रीमियम देना होगा जितना ग्राहक ने वाहन का इस्तेमाल किया है और इसके अलावा अच्छी तरह वाहन चलाने वाले चालकों के लिए कम प्रीमियम देने की बीमा योजना भी है। कॉर्पोरेट क्षेत्र में साइबर अटैक को लेकर भी कंपनी ने

बीमा उपलब्ध कराया है। आईसीआईसीआई लोम्बार्ड ने स्वास्थ्य क्षेत्र में गोल्डेन शील्ड, हेल्थ एडवांटेज, बीफिट और व्यापक स्वास्थ्य बीमा (सीएचआई) एवं हेल्थ बूस्टर बीमाओं की शुरुआत की है जबकि मोटर वाहन क्षेत्र के लिए मोटर फ्लोटर बीमा, टेलीमैटिक्स ऐड-ऑन, पे-ऐज-यू-यूज प्लान (पेयू), आपातकालीन चिकित्सा व्यय कवर और समान मासिक किस्त (ईएमआई) प्रोटेक्ट को पेश किया गया है।

कंपनी ने कॉर्पोरेट जगत के लिए क्लब रॉयल होम इंश्योरेंस, वोयाजर यात्रा बीमा, लाबिलिटि फ्लोटर, ड्रोन बीमा और रिटेल साइबर लायबिलिटि बीमा लाई है। कंपनी के हेल्थ एजेंसी के प्रमुख विवेक श्रीवास्तव ने कहा कि छोटे उपचारों और अस्पताल में भर्ती न होने की स्थिति बीफिट ग्राहकों को बड़ा लाभ पहुंचाएगा। यह कैशलेस ओपीडी पॉलिसी के रूप में अपनी तरह का पहली पहल है।

यह खांसी, जुकाम यह मामूली चोटों जैसी सामान्य बीमारियों को कवर करता है। मरीज इसमें अस्पताल या क्लिनिक जाकर उपचार करा सकता है जिसमें उसे कोई राशि नहीं देनी होगी। इसके बाद एक घंटे के अंदर दवाइयां मरीज के पास पहुंचा दी जाएगी।

उन्होंने कहा, बीफिट को शुरुआत में 20 स्थानों पर शुरू किया गया था जिसका दायर बढ़कर अब 50 स्थानों पर पहुंच गया है। भविष्य में इसे तेजी से बढ़ाने की योजना पर काम किया जा रहा है।

आईसीआईसीआई लोम्बार्ड के अंडरराइटिंग लायबिलिटी के सहयोगी उपाध्यक्ष ने कहा कि रिटेल साइबर लायबिलिटी बीमा धारकों और उनके परिवारों को ऐसे किसी भी साइबर धोखाधड़ी या डिजिटल जोखिम से सुरक्षा प्रदान करता है जिसके परिणामस्वरूप उन्हें वित्तीय या उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचता है।

उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष देश में साइबर अपराध के तकरीबन 55,000 मामले सामने आए हैं और सालाना यह 10 प्रतिशत की वृद्धि से बढ़ रहे हैं। अनुमान है कि यह वह मामले हैं जो दर्ज हुए जो कुल अपराधों के एक-तिहाई हो सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि आईसीआईसीआई लोम्बार्ड 31 मार्च 2022 तक 2.93 करोड़ पॉलिसी जारी कर चुकी है, जिसमें 23 लाख दावों का निपटारा किया गया है। कंपनी की 283 शाखाएं हैं जिसमें 11,085 कर्मचारी काम करते हैं।

## एक्सपीरियन व्हाट्सऐप पर निःशुल्क उपलब्ध करायेगा क्रेडिट स्कोर

मुंबई। डेटा एनालिटिक्स और डिसिजनिंग कंपनी एक्सपीरियन इंडिया ने एक ऐसी सेवा का शुभारंभ किया है जिसके जरिए भारतीय उपभोक्ता व्हाट्सऐप पर अपने क्रेडिट स्कोर की निःशुल्क जाँच कर सकते हैं। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि भारत में पहली बार कोई क्रेडिट ब्यूरो इस तरह की सेवा प्रदान कर रहा है। अब उपभोक्ता नियमित तौर पर अपनी एक्सपीरियन क्रेडिट रिपोर्ट देख सकते हैं तथा बड़ी आसानी से अपने क्रेडिट पोर्टफोलियो पर नजर रख सकते हैं। इस पहल के जरिए अपने एक्सपीरियन क्रेडिट स्कोर तक तुरंत, आसानी से और सुरक्षित तरीके से पहुँचने की सुविधा मिलती है, जिसके बाद कहीं भी, कभी भी क्रेडिट स्कोर देखा जा सकता है। उसने कहा कि उपभोक्ता अपनी एक्सपीरियन क्रेडिट रिपोर्ट देख सकते हैं, किसी भी तरह की अनियमितता पर नजर रख सकते हैं, धोखाधड़ी का तुरंत पता लगा सकते हैं तथा अपना क्रेडिट स्कोर फिर से बना सकते हैं, और इस तरह उन्हें अपने क्रेडिट प्रोफाइल पर पूरा नियंत्रण प्राप्त होता है। 48.75 करोड़ उपयोगकर्ताओं के साथ भारत में व्हाट्सऐप का उपयोग करने वाले

लोगों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक है, और व्हाट्सऐप मैसेजिंग सेवा देश के लोगों के लिए रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गई है।

कंपनी के कंट्री मैनेजर नीरज धवन ने कहा लोगों की भलाई के लिए डेटा का उपयोग करना एक्सपीरियन का मिशन रहा है और यह कदम इस दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है। हम उपभोक्ताओं के लिए क्रेडिट से संबंधित जानकारी को सुलभ बनाना और भारत में एक मजबूत क्रेडिट इकोसिस्टम का निर्माण करना चाहते हैं।

इस तरह की सेवा की पेशकश करने वाले भारत के पहले क्रेडिट ब्यूरो होने के नाते, यह पहल भारत में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। एक्सपीरियन में, हम मानते हैं कि उचित और किफायती ऋण प्राप्त करना हर व्यक्ति का अधिकार है।

## श्रीराम का इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहनों के वित्तपोषण को लेकर यूलर के साथ करार

मुंबई। श्रीराम समूह की परिसंपत्ति वित्तपोषण कंपनियों में से एक श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड (एसटीएफसी) ने सुदूर इलाकों तक लॉजिस्टिक समाधान की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए इलेक्ट्रिक तिपहिया मालवाहक वाहन का वित्त पोषण करने के लिए यूलर मोटर्स के साथ समझौता किया। यह साझेदारी हरित एवं टिकाऊ भविष्य के उद्देश्य को ध्यान में रखकर की गई है। श्रीराम ट्रांसपोर्ट ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि यह कंपनी का इलेक्ट्रिक व्यावसायिक वाहनों को लेकर पहला समझौता है और कंपनी आने वाले समय में इस तरह के और कदम उठाएगी। यूलर के साथ इस समझौते के साथ कंपनी ई-कॉमर्स वाहने के आपूर्ति श्रृंखला वित्तपोषण में उपलब्ध होगी और कंपनी धीरे-धीरे इस क्षेत्र में विस्तार करेगी। यूलर मोटर्स ईवी तिपहिया वाहनों का विनिर्माण करती है और अपने व्यापक पार्टनर नेटवर्क में इसे काम पर भी लगाती है। कंपनी बिगबास्केट, ई-कॉम एक्सप्रेस, उड़ान, जोमैटो जैसी अग्रणी ई-कॉमर्स कंपनियों के साथ मिलकर काम कर रही है। श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस के संयुक्त एमडी पी श्रीधरन ने कहा है, कंपनी के पास उचित वित्तपोषण समाधान हैं और ग्रामीण तथा अर्द्ध-शहरी इलाकों में ग्राहकों के बीच अच्छा तालमेल है और हम अगले तीन-पांच साल के दौरान इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहन में शानदार सफलता की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने कहा, यूलर के साथ साझेदारी ईवी फाइनेंसिंग स्पेस को लेकर हमारे रुख के अनुरूप है, इसके साथ-ही-साथ यह पूरे ई-कॉमर्स लॉजिस्टिक सप्लाई चेन इकोसिस्टम को फाइनेंस उपलब्ध कराने की रणनीति का हिस्सा भी है।

## एचसीएल फाउंडेशन का जनकल्याण कार्यों में 900 करोड़ का निवेश

नयी दिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी एचसीएलटेक की कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी (सीएसआर) शाखा एचसीएल फाउंडेशन ने वित्त वर्ष 2022 में अपने कम्युनिटी कार्यक्रमों में 216 करोड़ रुपये का निवेश किया है और इस तरह से वह अब तक इस पर 900 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश कर 37 लाख से अधिक लोगों के जीवन में बदला ला चुका है।

एचसीएल फाउंडेशन ने आज यहां वित्त वर्ष 2022 में किये गये कार्यों पर आधारित एक रिपोर्ट जारी की जिसमें यह उल्लेख किया गया है। यह वित्त वर्ष 2017 से इस कार्य को रह रहा है जहां एचसीएलटेक उन कम्युनिटी के लिए सुपरचार्जिंग उन्नति की गहरी प्रतिबद्धता को दिखाता है जहां यह संचालित होता है।

वित्त वर्ष 2022 के दौरान, एचसीएल फाउंडेशन ने शहरी विकास पहलों के लिए 91 करोड़ रुपये और

HCL FOUNDATION

ग्रामीण विकास के लिए 83 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया और 42 करोड़ के बढ़े हुए खर्च के साथ पर्यावरणीय एक्शन पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

फाउंडेशन के कार्यक्रम स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता, गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, कौशल और आजीविका, पर्यावरण, और आपदा जोखिम में कमी, संयुक्त राष्ट्र द्वारा उल्लिखित सभी 17 सोशल विकास लक्ष्यों को संबोधित करते हैं।

आज तक, एचसीएल फाउंडेशन ने अपने कम्युनिटी कार्यक्रमों में 900 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया है। फाउंडेशन के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक एचसीएल उदय को हाल ही में भारत सरकार द्वारा शहरी गरीबी निवारण प्रभाव के लिए राष्ट्रीय सीएसआर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

एचसीएल टेक्नोलॉजीज के सीईओ और प्रबंध निदेशक सी विजयकुमार ने इस मौके पर कहा एचसीएलटेक में हमें अपने सभी हिस्सेदारों के लिए ठोस और टिकाऊ प्रगति प्रदान करने के उद्देश्य से निर्देशित किया गया है।

सामाजिक दूरी के युग में, एचसीएल फाउंडेशन और उसके सहयोगियों ने कम्युनिटी के साथ 2016 के बाद से हमारे कार्यक्रम की पहुंच को 12 गुना से अधिक बढ़ाने के लिए अथक रूप से प्रयास किया है। हमारी परियोजनाएं संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेंचमार्क प्रक्रियाओं और संरचनाओं के साथ मॉनिटर किये जाते हैं। हम आगे के इस लंबे सफ़र के लिए प्रतिबद्ध हैं, सुपरचार्जिंग प्रगति के रूप में हम अपने प्रभाव को और अधिक विश्वीय स्थानों पर ले जायेंगे।

फाउंडेशन की निदेशक एवं उपाध्यक्ष डॉ निधि पुंधीर ने कहा 2011 में, हमने आर्थिक-सामाजिक और पर्यावरणीय विकास के स्रोत कोड होने और देश के सबसे कमजोर नागरिकों को खुशहाल, स्वस्थ, सम्मानजनक जीवन जीने के लिए सशक्त बनाने का वादा किया था।

ग्यारह साल बाद, हमारे स्रोत कोड भारत के 22 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में जीवन को रोशन करते हैं। परिणाम हमारे कार्यक्रमों की गंभीरता और मज़बूती की बात करते हैं। एनजीओ भागीदारों और सरकार के साथ संमिलन में सह-निर्मित और सह-कार्यान्वित, वे मुझे आशावाद से भर देते हैं कि एक जीवन में पर्यावरणीय गरीबी सहित गरीबी के चक्र को तोड़ना संभव है।

# शेयर बाजार में लगातार गिरावट जारी

मुंबई। अमेरिका में महंगाई के आंकड़े जारी होने से पहले निवेशकों की बिकवाली से वैश्विक बाजार में आई गिरावट के दबाव में स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा बिकवाली से शेयर बाजार आज लगातार दूसरे दिन भी गिरकर बंद हुआ। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 419.85 अंक लुढ़ककर 60,613.70 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) 128.80 अंक गिरकर 18,028.20 अंक पर आ गया। बीएसई का मिडकैप 1.02 प्रतिशत टूटकर 25,427.98 अंक और स्मॉलकैप 1.05 उतरकर 28,889.48 अंक पर रहा। इस दौरान बीएसई में कुल 3592 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2203 में बिकवाली जबकि 1261 में लिवाली हुआ वहीं 128 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह एनएसई में 39 कंपनियां लाल जबकि शेष 11 हरे

निशान पर रहे। बीएसई के सभी 19 समूहों में गिरावट रही। इस दौरान कमोडिटीज 1.35, सीडी 1.35, ऊर्जा 0.80, एफएमसीजी 0.67, वित्तीय सेवाएं 0.61, हेल्थकेयर 0.77, इंडस्ट्रियल्स 0.85, आईटी 0.48, यूटिलिटीज 0.77, ऑटो 2.06, बैंकिंग 0.56, कैपिटल गुड्स 0.84, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 1.36, धातु 0.94, तेल एवं गैस 0.55, पावर 0.61 और टेक समूह के शेयर 0.29 प्रतिशत लुढ़क गया। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में गिरावट का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.18, जर्मनी का डैक्स 0.12, जापान का निक्केई 0.98, हांगकांग का हैंगसेंग 1.70 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.39 प्रतिशत टूट गया।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 509 अंक की बड़ी गिरावट लेकर 60,524.27 अंक पर खुला लेकिन लिवाली होने से यह थोड़ी देर बाद ही 60,848.73 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। हालांकि बिकवाली के दबाव में यह दोपहर बाद 60,425.47 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। अंत में यह पिछले दिवस के 61,033.55 अंक के मुकाबले 0.69 प्रतिशत टूटकर 60,613.70 अंक पर रहा। इसी तरह निफ्टी भी 113 अंक गिरकर 18,044.35 अंक पर खुला। सत्र के दौरान यह 18,103.10 अंक के उच्चतम जबकि 17,969.40 के निचले स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 18,157.00 अंक की तुलना में 0.71 प्रतिशत की गिरावट लेकर 18,028.20 अंक पर रहा।

### इमामी एग्रोटेक के नेतृत्व दल में शामिल हुए देबाब्रत मुखर्जी

कोलकाता। खाद्य तेल क्षेत्र में कार्य करने वाली कंपनी इमामी एग्रोटेक लिमिटेड ने देबाब्रत मुखर्जी को मुख्य विपणन और रणनीति अधिकारी के रूप में नियुक्त किया है। मुखर्जी को औद्योगिक क्षेत्र में प्रबंधन, विपणन एवं बिक्री संचालन, व्यापार रणनीति एवं नवाचार में 28 वर्ष से अधिक का अनुभव है। ईएएल ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि कंपनी के साथ जुड़ने से पहले मुखर्जी यूबी ग्रुप में सीएमओ के पद पर थे। इससे पहले वह स्थानीय और वैश्विक ब्रांड किंगफिसर, अल्ट्रा, हेनेकेन और एमस्टेल से जुड़े थे। मुखर्जी अपने व्यापक अनुभव के साथ कंपनी के खाद्य तेल, मसाले, सोया बड़ी और बेकरी के विपणन कार्यों का नेतृत्व करेंगे। इसके साथ ही वह इमामी एग्रोटेक की भविष्य की योजनाओं को लेकर बनायी जाने वाले नवाचार रणनीतियों की अध्यक्षता करेंगे।

## आईएमपीसीएल ने दिया 10.3 करोड़ रुपये का लाभांश

नयी दिल्ली। केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रम इंडियन मेडीसिन्स फार्मास्यूटिकल कार्पोरेशन लिमिटेड (आईएमपीसीएल) ने आयुष मंत्रालय और उत्तराखंड सरकार को 10.3 करोड़ रुपये का लाभांश देने की घोषणा की है। कंपनी के अधिकारियों ने गुरुवार को यहां एक समारोह में आयुष मंत्रालय का

## शार्ट न्यूज

### आस्ट्रेलिया की युवती के साथ बलात्कार के आरोप को लेकर श्रीलंका ने मांगी माफी

कोलम्बो। श्रीलंका के खेल मंत्री रोशन रानासिंघे ने दनुष्का गुणतिलाका के विरुद्ध लगे दुष्कर्म के आरोप को लेकर ऑस्ट्रेलिया की सरकार,वहां के लोगों, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और पीड़ित युवती से माफी मांगी है। अखबार डेली मिरर ने रानासिंघे के हवाले से कहा, खेल मामलों के लिये जिम्मेदार मंत्री होने के नाते मैं माफी मांगता हूं। रानासिंघे ने कहा कि इस मामले की जांच निष्पक्ष तरीके से होनी चाहिए और उनकी सरकार को श्रीलंका सरकार पूरा सहयोग करेगी। रानासिंघे ने कहा, मैं (मामले को लेकर) बहुत चिंतित हूं और अपने देश और इसके लोगों की ओर से आवश्यक कार्रवाई करने की जिम्मेदारी लूंगा। उल्लेखनीय है कि गुणतिलाका को सिडनी में एक महिला के साथ दुष्कर्म के आरोप में रविवार गिरफ्तार किया गया था। वह मांसपेशियों की चोट के कारण टी20 विश्व कप के पहले दौर से ही बाहर हो गए थे, लेकिन ऑस्ट्रेलिया में टीम के साथ बने रहे। ऑस्ट्रेलिया की एक अदालत ने सोमवार को गुणतिलाका की जमानत अर्जी खारिज कर दी थी।

### सुमित, गोविंद ने एशियाई चैंपियनशिप में जीते कांस्य

अम्मान (जॉर्डन)। थाईलैंड ओपन 2022 के चैंपियन सुमित और गोविंद कुमार साहनी ने एएसबीसी एशियाई एलीट मुक्केबाजी चैंपियनशिप में गुरुवार को अपने-अपने सेमीफाइनल मुकाबले हारकर कांस्य पदक से संतोष किया। गोविंद को पुरुषों के 48 किग्रा सेमीफाइनल में कजाकस्तान के संजर ताशकेनबे के हाथों हार का सामना करना पड़ा। भारतीय मुक्केबाज ने पहले राउंड में ताशकेनबे के कई वार रोके, लेकिन यूथ विश्व चैंपियनशिप 2021 के गोल्ड मेडलिस्ट ताशकेनबे ने अगले दो राउंड में वापसी करके बाउट जीत लिया। दूसरी ओर, सुमित (75 किग्रा) का सामना एशियाई प्रतियोगिता के गत चैंपियन जफ़ारोव सैदजमशीद से था, जहां भारतीय मुक्केबाज को 0-5 की हार का सामना करना पड़ा। एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप में 27 शीर्ष मुक्केबाजी देशों के 267 मुक्केबाज भाग ले रहे हैं।

### सीडब्ल्यूसी श्रीलंका सरकार में शामिल होने के लिए तैयार

कोलंबो। श्रीलंका में चाय उगाने वाले पहाड़ी क्षेत्रों पर बसे भारतीय तमिलों के समर्थन वाली सिलोन वर्कर्स कांग्रेस (सीडब्ल्यूसी) ने राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की सरकार में शामिल होने का संकेत दिये हैं। सीडब्ल्यूसी के महासचिव जीवन थोंडामन ने डेली मिरर को बताया कि उनकी पार्टी ने श्री विक्रमसिंघे को कैबिनेट विभाग को स्वीकार करने की अपनी इच्छा के बारे में सूचित कर दिया। उन्होंने कहा कि हालांकि सीडब्ल्यूसी का उनको जाने वाले विभाग के आधार पर सरकार में शामिल होना निर्भर होगा। श्री थोंडामन ने कहा कि उनकी पार्टी यह महसूस करती है कि श्री विक्रमसिंघे देश में तमिलों के मुद्दों को हल करने में मदद कर सकते है। श्री थोंडामन से यह पूछे जाने पर कि क्या सीडब्ल्यूसी पूर्व प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे के साथ काम करेगी, अगर वह सरकार का नेतृत्व करते हैं तो, उन्होंने कहा कि ऐसी संभावना नहीं है। उन्होंने कहा कि वह श्री राजपक्षे का सम्मान करते है, लेकिन सीडब्ल्यूसी और उनकी पार्टी के बीच राजनीतिक संबंध अब खत्म हो गये हैं।

### चीन में भूकंप के झटके महसूस किए गए

बीजिंग। दक्षिण-पश्चिम चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के निंगची शहर में गुरुवार अपराह्न भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 5.6 मापी गयी। चाइना अर्थक्वेक नेटवर्क्स सेंटर (सीईएनसी) के अनुसार आज स्थानीय समयानुसार एक बजकर एक मिनट पर निंगची शहर में भूकंप के तेज झटकों से मेडोग काउंटी डोल गया। सीईएनसी ने कहा कि भूकंप का केंद्र 28.35 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 94.48 डिग्री पूर्वी देशांतर और जमीनी सतह से 10 किमी की गहराई पर स्थित था।

### सं राष्ट्र ने सीरिया में बढ़ती हिंसा पर जतायी व्यक्त की

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने उत्तर-पश्चिमी सीरिया में हाल ही में गोलाबारी और हवाई हमले सहित हिंसा की बढ़ती घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है, जिसके कारण इदलिब प्रांत में विस्थापित लोगों के शिविरों और उसके आसपास के इलाकों में नागरिकों की मौत हुई है और लोग हताहत हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव की सहयोगी प्रवक्ता स्टेफनी ट्रेम्बले ने बुधवार को कहा कि श्री गुटेरेस ने सभी पक्षों से ज्यादा से ज्यादा संयम बरतने और खराब स्थिति से बचने का आह्वान किया है। उन्होंने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि श्री गुटेरेस ने शांति का आह्वान किया है और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 2254 के अनुसार राष्ट्रव्यापी संघर्ष विराम की आवश्यकता पर बल दिया है। स्टेफनी ट्रेम्बले ने मंगलवार को कहा कि उत्तर-पश्चिमी सीरिया में इस वर्ष कम से कम 121 नागरिक मारे गए हैं जबकि अन्य 210 घायल हुए हैं।

### श्रीलंका में अडानी-जेकेएच की परियोजना

कोलंबो। भारत के अडाणी समूह और उसके श्रीलंकाई साझेदार जेएचके ने कोलंबो बंदरगाह पर वेस्ट इंटरनेशनल टर्मिनल का निर्माण कार्य वाली एक परियोजना की शुरुआत की है। यह जानकारी द आइलैंड अखबार ने गुरुवार को दी। द आइलैंड अखबार के अनुसार, श्रीलंका के बंदरगाह एवं जहाजरानी मंत्री निमल सिरिपाला डी सिल्वा और भारतीय उच्चायुक्त गोपाल बागले की भागीदारी से यह निर्माण कार्य बुधवार को शुरू हुआ है। इस परियोजना में अडानी समूह की हिस्सेदारी 51 प्रतिशत और जेकेएच की हिस्सेदारी 34 प्रतिशत है जबकि श्रीलंका बंदरगाह प्राधिकरण की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत यानि 78.90 करोड़ डॉलर है।

### यूक्रेन ने यूरोपीय संघ के सहायता पैकेज का स्वागत किया

कीव 10 नवम्बर (वार्ता/शिन्हुआ) यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लोडिमिर जेंलेस्की ने यूरोपीय आयोग के यूक्रेन के लिए अगले साल के लिए अठारह अरब यूरो तक के समर्थन पैकेज के प्रस्ताव के निर्णय का स्वागत किया है। श्री जेलेंस्की ने बुधवार को ट्वीट किया 2023 के लिए अठारह अरब यूरो की वित्तीय सहायता पैकेज की घोषणा करने के लिए यूरोपीय आयोग और उसकी अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयन का आभारी हूं। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह यूक्रेन के साथ यूरोपीय संघ की सच्ची एकजुटता को दर्शाता है। इससे पहले दिन में यूरोपीय आयोग ने यूक्रेन को सहायता पैकेज देने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि प्रति माह औसतन 1.5 अरब यूरो की सहायता से यूक्रेन को 2023 के लिए अपनी अल्पकालिक वित्त पोषण जरूरतों के एक महत्वपूर्ण हिस्से को पूरा करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि पैकेज के प्रस्तावों को लागू करने से पहले यूरोपीय संसद और यूरोपीय परिषद द्वारा अनुमोदन की आवश्यकता है।

### चीन ने उठाया एंटी-ड्रोन 'हार्ड एंड सॉफ्ट किल' सिस्टम से पर्दा

बीजिंग। चीन के मानव रहित युद्ध के लिए अनुकूल होने का संकल्प इस सप्ताह उसके प्रमुख हथियार प्रदर्शनी में एक चौतरफा एंटी-ड्रोन सिस्टम के अनावरण के साथ दिखाई दे रहा है। साउथ चीन मॉर्निंग पोस्ट के अनुसार, देश के मुख्य मिसाइल निर्माता चीन एयरोस्पेस साइंस एंड इंडस्ट्री कॉरपोरेशन (कैसिक) ने कहा कि मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी) प्रणाली हाल के वैश्विक संघर्षों से प्रेरित थी जिसमें यूक्रेन में युद्ध भी शामिल है। वहां विभिन्न तरह के ड्रोनों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। चीन सैन्य और नागरिक उपयोग के लिए ड्रोन का एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आपूर्तिकर्ता है, इसके कुछ गैर-सैन्य उत्पादों को युद्ध के मैदान में भी देखा जाता है। चीनी सेना पहले से ही कई प्रकार के ड्रोन तैनात कर रही है और साथ ही उसके जवाबी उपाय विकसित करने की इरादे साफ हैं।

# भारत को हराकर फाइनल में पहुंची इंग्लैंड

एडिलेड। इंग्लैंड ने एलेक्स हेल्स (86 नाबाद) और जॉस बटलर (80 नाबाद) के तूफानी अर्द्धशतकों की बदौलत गुरुवार को टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में भारत को 10 विकेट से रौंदकर पाकिस्तान के साथ फाइनल में जगह बनाई।

भारत ने इंग्लैंड को 169 रन का लक्ष्य दिया, जिसे बटलर-हेल्स की जोड़ी ने चार ओवर रहते हुए हासिल कर लिया।

पहले विकेट के लिये 170 रन की नाबाद साझेदारी में एलेक्स हेल्स ने 47 गेंदों पर चार चौकों और सात छक्कों की मदद से नाबाद 86 रन बनाये जबकि कप्तान बटलर ने 49 गेंदों पर नौ चौके और तीन छक्के लगाकर 80 रन की अजेय पारी खेली।

हार्दिक पांड्या ने भारत को 168 रन के चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचाने के लिये 33 गेंदों पर चार चौकों और पांच छक्कों की मदद से 63 रन की विस्फोटक पारी खेली थी, लेकिन बटलर-हेल्स की जोड़ी ने हार्दिक की मेहनत पर पानी फेर दिया।

इंग्लैंड और पाकिस्तान दोनों मेलबर्न में रविवार को होने वाले फाइनल में दूसरी बार टी20 विश्व कप खिताब जीतने के लिये अपनी दावेदारी पेश करेंगे। इंग्लैंड ने इससे पहले 2010 में यह खिताब जीता था जबकि टी20 विश्व कप 2016 के फाइनल में उन्हें वेस्ट इंडीज के हाथों हार मिली थी।

दूसरी ओर, पाकिस्तान ने 2009 में टी20 विश्व कप

की ट्रॉफी उठाई थी और यह उनका दूसरा फाइनल है। पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच एकदिवसीय विश्व कप 1992 का फाइनल भी इंग्लैंड में खेला गया था जहां इमरान खान की टीम ने इंग्लैंड को मात देकर ट्रॉफी उठाई थी। बटलर और हेल्स की जोड़ी ने 169 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए विस्फोटक शुरुआत की। दोनों ने पावरप्ले में इंग्लैंड के लिये 63 रन जोड़े जबकि भारत इस दौरान एक विकेट के नुकसान पर 38 रन ही बना सका था।

बटलर-हेल्स ने विस्फोटक शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलते हुए 11वें ओवर में 100 रन का आंकड़ा छुआ, जबकि 16वें ओवर की आखिरी गेंद पर बटलर ने छक्का लगाकर इंग्लैंड को फाइनल में पहुंचाया।

यह (170 नाबाद) टी20 विश्व कप की सबसे बड़ी, जबकि टी20 अंतरराष्ट्रीय में इंग्लैंड की दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। इसके अलावा यह भारत के खिलाफ पहले विकेट के लिये सबसे बड़ी साझेदारी है। इससे पहले बाबर आज़म और मोहम्मद रिज़वान ने टी20 विश्व कप 2021 में 152 रन की अजेय साझेदारी करके पाकिस्तान को भारत पर जीत दिलाई थी।

अक्षर पटेल (चार ओवर, 30 रन) और अर्शदीप सिंह (दो ओवर, 15 रन) के अलावा कोई भी भारतीय गेंदबाज रनों पर लगाम नहीं लगा सका। रविचंद्रन अश्विन ने दो ओवर में 27 रन दिये, जबकि मोहम्मद शमी ने तीन ओवर में 39 रन लुटाए। भुवनेश्वर कुमार को दो ओवर में 25 रन पड़े और हार्दिक पांड्या ने तीन ओवर में 34 रन दिये।

इससे पूर्व, भारत ने हार्दिक पांड्या की 61 रनों की विस्फोटक पारी के दम पर 168 रन बनाये। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर भारत को बल्लेबाजी के लिये बुलाया और दूसरे ही ओवर में केएल राहुल को आउट कर दिया। रोहित शर्मा ने कोहली के साथ दूसरे विकेट के लिये 47 रन जोड़े लेकिन वह 28 गेंदों पर 27 रन ही बना सके।

आदिल रशीद ने भारत की मुश्किलें बढ़ाते हुए रनगति पर लगाम लगाई और सूर्यकुमार यादव (14) का बहुमूल्य विकेट ले लिया।

# आयरलैंड की हार के बाद अच्छी वापसी की : बटलर

एडिलेड। इंग्लैंड के कप्तान जॉस बटलर ने टी20 विश्व कप 2022 में गुरुवार को भारत के खिलाफ 10 विकेट की विशाल जीत के बाद कहा कि उनकी टीम ने सुपर-12 दौर में आयरलैंड के हाथों मिली हार से उभरने के लिये शानदार क्षमता दिखाई।

आयरलैंड ने टी20 विश्व कप के सुपर-12 मैच में डकवर्थ लुइस पद्धति के आधार पर इंग्लैंड को पांच रनों से मात दी थी।

बटलर ने कहा, मुझे लगता है कि हमने आयरलैंड के हाथों हार के बाद से जो क्षमता दिखाई है वह शानदार है। हम यहां बहुत उत्साहित होकर आए थे और अच्छा महसूस कर रहे थे। हमारे सभी खिलाड़ियों ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई।

भारत ने इंग्लैंड को फाइनल में पहुंचने के लिये 169 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे बटलर और एलेक्स हेल्स की सलामी जोड़ी ने 16 ओवर में ही हासिल कर लिया। दोनों ने पावरप्ले में विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए 63 रन जोड़े और इसी आक्रामक अंदाज के दम पर भारतीय गेंदबाजों को पस्त कर दिया।

बटलर ने कहा, हम तेज और आक्रामक शुरुआत करना चाहते थे। राशिद 11वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हैं, यह जानना अद्भुत है कि हमारी बल्लेबाजी में ऐसी गहराई है। हेल्स ने मैदान के आयामों का अच्छा प्रयोग करते हुए अपनी फॉर्म दिखाई है।

मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर रविवार को होने वाले फाइनल में इंग्लैंड का सामना पाकिस्तान से होगा। पाकिस्तान ने फाइनल में जगह बनाने के लिये पहले सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड को सात विकेट से मात दी थी।

बटलर ने कहा कि इस जीत की खुशी मनाना महत्वपूर्ण है। उन्होंने टी20 विश्व कप 2022 का अपना पहला मैच खेल रहे क्रिस जॉर्डन की गेंदबाजी के लिये उनकी तारीफ की और कहा कि जॉर्डन ने हार्दिक पांड्या जैसे विश्व स्तरीय खिलाड़ी के खिलाफ डेथ ओवरों के दबाव में अच्छी गेंदबाजी की।

# रोहित शर्मा पर भड़के सहवाग और जडेजा, कहा टीम बनाने के लिए टीम के साथ रहना पड़ता है

**एजेंसी**

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2022 के सेमीफाइनल में इंग्लैंड के हाथों मिली 10 विकेट से हार के बाद रोहित शर्मा की कप्तानी सवालों के घेरे में है। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड के सामने 169 रनों का लक्ष्य रखा था जिसे विपक्षी टीम ने 16 ओवर में आसानी से हासिल कर लिया। मैच के बाद भारतीय पूर्व खिलाड़ी वीरेंद्र सहवाग और अजय जडेजा ने रोहित शर्मा की कप्तानी पर सवाल उठाए। सहवाग ने कहा कि रोहित पर आज प्रेशर साफ देखने को मिल रहा था, वहीं जडेजा ने कहा कि टीम बनाने के लिए कप्तान को पूरा साल टीम के साथ रहना पड़ता है। क्रिकबज से बात करते हुए अजेय जडेजा ने कहा एक बात मैं बोलूंगा जो चूबेगी अगर रोहित शर्मा सुनेंग उन्हें भी..टीम अगर बनानी है किसी कप्तान को तो उसे सारे साल टीम के साथ रहना पड़ता है। पूरे साल में रोहित शर्मा कितने दौरों पर गए। मैं ये हार की वजह से नहीं बोल रहा हूं, पहले भी मैं ये बोल चुका हूं। जब आपको टीम बनानी है तो आप टीम के साथ नहीं हो.. कोच ने टीम बनानी है वो न्यूजीलैंड नहीं जा रहे। तो फिर टीम बनेगी कैसे। घर का एक बुजुर्ग होना चाहिए, अगर घर में 7 बुजुर्ग हो जाएंगे तो भी दिक्कत है।

वहीं वीरेंद्र सहवाग ने कहा आज वो रोहित शर्मा नजर नहीं आए जो रोहित शर्मा पहले बतौर कप्तान नजर आते थे। आज पहली बार लगा कि उनको भी प्रेशर फील हुआ। उन्होंने भी जो बदलाव किए अक्षर पटेल को पावरप्ले में गेंदबाजी करवाई, मोहम्मद शमी को गेंदबाजी नहीं दी, अर्शदीप को दूसरा ओवर नहीं मिला, भुवी ने पहला ओवर कीपर ऊपर रख कर डाला। तो रोहित शर्मा ने भी बतौर कप्तान बहुत सारी चीजें आज ठीक नहीं की है। हम कहते हैं कि वो वर्ल्ड के या भारत के बेस्ट कप्तान है, लेकिन आज उन्होंने भी चीजें ठीक नहीं की है। जब बतौर कप्तान आप पर प्रेशर आता है तो आप ऐसी चीजें करते हैं।

# हमारी गेंदबाजी निराशाजनक रही : रोहित शर्मा

एडिलेड। भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में गुरुवार को इंग्लैंड के हाथों मिली 10 विकेट की शर्मनाक हार के बाद कहा कि भारतीय गेंदबाजी का स्तर बेहद निराशाजनक रहा।

रोहित ने कहा, आज का दिन बहुत निराशाजनक रहा। हमने इस स्कोर तक पहुंचने के लिये अंत में अच्छी बल्लेबाजी की। हमारी गेंदबाजी का स्तर निराशाजनक था, हम उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। इंग्लैंड ने पाकिस्तान के साथ फाइनल में जगह बनाने के लिये भारत को 10 विकेट से मात दी। भारत ने इंग्लैंड को 169 रन का लक्ष्य दिया, जिसे जॉस बटलर और एलेक्स हेल्स की जोड़ी ने चार ओवर रहते हुए हासिल कर लिया।

उन्होंने कहा, यह नॉकआउट मैचों में दबाव को सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। इन सब खिलाड़ियों ने यह समझने के लिये काफी मैच खेले हैं। आईपीएल मैचों में भी दबाव में खेला है, तो यह शांत रहने पर निर्भर करता है। हमने शुरुआत में कुछ गलतियां कीं, लेकिन इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाजों को श्रेय देना होगा। वह बहुत अच्छा खेले। हम जानते थे कि विकेट के दाईं और बाईं ओर रन बनाना आसान था। रोहित की टीम सुपर-12 के ग्रुप-2 की अंक तालिका के शीर्ष पर रही थी। उन्होंने अपने चार मुकाबलों में जीत दर्ज की थी जबकि एक में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। रोहित ने टूर्नामेंट में भारत के सफर के बारे में कहा कि जब उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ पहला मैच जीता था तब टीम ने अपनी क्षमता दिखाई थी। बंगलादेश के विरुद्ध मुकाबला थोड़ा चुनौतीपूर्ण था, लेकिन भारत ने संयम के साथ अपनी योजनाओं पर अमल किया।

## रूस के खिलाफ ब्रिटेन का बड़ा एक्शन

# 18 बिलियन की सपंत्तियों को किया फ्रीज

लंदन। यूक्रेन के खिलाफ जंग झेड़ने वाले रूस को लेकर ब्रिटेन की सरकार ने गुरुवार को बड़ा कदम उठाया है। ब्रिटेन सरकार ने गुरुवार को कहा कि उसने रूस की 18 बिलियन पाउंड (20.5 बिलियन डॉलर) की संपत्ति को फ्रीज कर दिया है। यह संपत्ति रूस के अमीर लोगों, संस्थाओं और अन्य व्यक्तियों की है। ब्रिटेन की सरकार की ओर से रूस के खिलाफ यह अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई मानी जा रही है। ब्रिटेन की ओर से अब तक रूस की जितनी भी संपत्तियों को फ्रीज किया गया है उसकी तुलना में यह छह बिलियन पाउंड अधिक है।

ब्रिटेन की ट्रेजरी में एक जूनियर सरकार मंत्री एंड्रयू ग्रिफिथ ने कहा, हमने रूस पर अब तक के सबसे गंभीर प्रतिबंध लगाए हैं और यह उनकी युद्ध की मशीन को पंगु बना देगा। हमारा मैसेज

साफ है हम इस क्रूर युद्ध में पुतिन को सफल नहीं होने देंगे। रूस और यूक्रेन के बीच आठ महीने से अधिक समय से लड़ाई चल रही है। अब तक की लड़ाई पर नजर डाले तो कई बिंदुओं पर रूस की पकड़ काफी कमजोर हुई है।

### खेरसॉन से पीछे हट रही रूसी सेना

रूस की सेना ने घोषणा की है कि वह यूक्रेन के दक्षिणी शहर खेरसॉन और उसके आसपास के क्षेत्रों से पीछे हट रही है। पिछले आठ महीने से चल रही इस लड़ाई में यह रूस के लिए एक अन्य अपमानकारी झटका माना जाएगा। वैसे यूक्रेन के अधिकारियों ने इस कदम की तत्काल पुष्टि नहीं की है। हाल के दिनों में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा है कि अपनी चाल में फंसाने के लिए खेरसॉन से हटने का स्वांग रूसी रच रहे हैं। जेलेंस्की ने नागरिकों को रूसी नियंत्रण वाले युद्धक्षेत्र में अंदर तक आने के लिए राजी करने की कोशिश को नाटक करार दिया।

### रूस के खिलाफ सोमवार को मतदान

संयुक्त राष्ट्र महासभा यूक्रेन पर हमला कर अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करने के लिए रूस को जवाबदेह ठहराने वाले एक प्रस्ताव पर सोमवार को मतदान करेगी। इस प्रस्ताव में रूस द्वारा क्षतिपूर्ति का भुगतान करने का भी प्रावधान है।

प्रस्ताव के मसौदे में यूक्रेन के खिलाफ रूस के गलत कार्यों से हुए नुकसान या चोट के लिए क्षतिपूर्ति का एक अंतरराष्ट्रीय तंत्र स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

# जी-20 समिट में भाग नहीं लेंगे पुतिन, यूक्रेन युद्ध पर बाइडन सहित पश्चिमी नेताओं से हो सकती थी टकरार

बाली। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन जी-20 शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे। इंडोनेशिया के एक सरकारी अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अगले सप्ताह इंडोनेशिया में ग्रुप ऑफ 20 शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे। पुतिन का यह कदम यूक्रेन युद्ध को लेकर अमेरिका और उसके सहयोगियों के साथ संभावित टकराव से बचने के लिए है। रूस द्वारा इस साल फरवरी अंत में यूक्रेन पर हमला करने के बाद पहली बार बाइडन और पुतिन किसी विश्व मंच पर साथ आने वाले थे। जी-20 के 'चीफ ऑफ सपोर्ट' लुहुत बिनसर पंडजैतन ने इंडोनेशिया के देनपसार में पत्रकारों से कहा कि रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव रूसी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।

### संभावित टकराव से बचना चाहते हैं पुतिन

इंडोनेशिया के अधिकारी ने कहा, यूक्रेन पर संभावित टकराव से बचने के

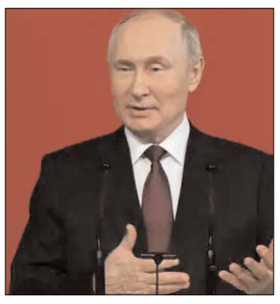

लिए रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन जी-20 शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अन्य विश्व नेताओं को 15 नवंबर से शुरू होने वाले दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में भाग लेना है। यह समिट इंडोनेशिया के शहर बाली में हो रही है।

इंडोनेशिया में मास्को के दूतावास ने भी पुष्टि की कि पुतिन इसमें शामिल नहीं होंगे। रूसी दूतावास के प्रोटोकॉल के प्रमुख यूलिया टॉम्स्काया ने कहा, मैं पुष्टि कर सकता हूं कि (विदेश मंत्री) सर्गेई लावरोव जी20 में रूसी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। राष्ट्रपति पुतिन के कार्यक्रम पर अभी भी काम किया जा रहा है, वह ऑनलाइन भाग ले सकते हैं।

### पुतिन के साथ बैठक में भाग लेने से मना कर चुके हैं बाइडन

लुहुत बिनसर पंडजैतन ने कहा, ''इंडोनेशियाई सरकार रूस के फैसले का सम्मान करती है। राष्ट्रपति पुतिन ने पहले राष्ट्रपति जोको विडोडो को फोन पर इस फैसले के बाबत जानकारी दी थी।'' इससे पहले बाइडन ने शिखर सम्मेलन से इतर पुतिन के साथ बैठक करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा था कि वह रूसी नेता से केवल रूस में बंद अमेरिकियों की रिहाई पर ही चर्चा कर सकते हैं। बाइडन प्रशासन के अधिकारियों ने कहा कि पुतिन के ऑनलाइन माध्यम से शिखर सम्मेलन में शामिल होने पर वे विश्व नेताओं से उन्हें अलग-थलग करने का आह्वान करेंगे। उन्होंने बहिष्कार या अन्य तरीके से उनकी निंदा करने पर भी चर्चा की है।

### ब्रिटिश सेना में पहली बार सिख प्रार्थना पुस्तकें जारी

लंदन। सदी में पहली बार ब्रिटिश सेना में सिख सैन्य कर्मियों को दैनिक प्रार्थना पुस्तकें जारी की गयी है। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, ब्रिटेन के रक्षा सिख नेटवर्क के अध्यक्ष के रूप में, मेजर दलजिंदर सिंह विरदी ने बदलाव के लिए प्रचार करते हुए दो साल बिताए हैं। ब्रिटेन के रक्षा सिख नेटवर्क द्वारा लंदन में एक समारोह में प्रार्थना पुस्तकें 'नितनेम गुटका' जारी की गईं। इन पुस्तकों को सैन्य जीवन की कठोरता का सामना करने के लिए टिकाऊ और जलरोधी सामग्री में तीन भाषाओं में मुद्रित किया गया है। ब्रिटिश सेना के गुटका में छलावरण कवर होता है और रॉयल नेवी तथा आरएएफ गुटका में नेवी ब्लू कवर होता है। मेजर सिंह विरदी ने कहा कि वह दिन में तीन बार अपने नितनेम गुटका का उपयोग करते हैं। सेना कई वर्षों से ईसाई धार्मिक ग्रंथ प्रदान कर रही है और अब सिख धर्म के लिए सिख ग्रंथ उपलब्ध कराने का दरवाजा खोलने का अवसर मिला। इन किताबों को लंदन के केंद्रीय गुरुद्वारा मंदिर के पुस्तकालय में रखा जाएगा।

### अफगानिस्तान के मनोरंजन पार्कों में नहीं जा पाएंगी महिलाएं, तालिबान ने लगाया बैन

काबुल। अफगानिस्तान में महिलाएं अब मनोरंजन पार्कों में नहीं जा सकेंगी। तालिबान ने महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। तालिबान सरकार की नैतिक पुलिस ने बुधवार को आदेश दिया कि अफगानिस्तान में महिलाओं को देश के मनोरंजन पार्कों में प्रवेश से वंचित कर दिया जाएगा। लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई अशरफ गनी सरकार को सत्ता से हटाने के बाद तालिबान पहले ही अफगान महिलाओं पर कई तरह के प्रतिबंध लगा चुका है। तालिबान के इस नए आदेश से महिलाओं की स्वतंत्रता को और प्रभावित होने का खतरा है। अफगानिस्तान के पुण्य का प्रचार और बुराई की रोकथाम मंत्रालय (एमपीवीपीवी) के एक प्रवक्ता ने बुधवार को कहा कि महिलाओं को मनोरंजन पार्क में प्रवेश करने की अनुमति नहीं होगी। दो पार्क संचालकों के हवाले से समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने कहा कि तालिबान ने उन्हें महिलाओं को अपने पार्कों में प्रवेश नहीं करने का निर्देश दिया है। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि इन नए प्रतिबंधों को कैसे लागू किया जाएगा, क्योंकि कुछ दिनों पहले इसी मंत्रालय ने एक नियम में कहा था कि पार्कों को महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग विभाजित किया जाना चाहिए। साथ ही नियम में कहा गया था कि महिलाओं के लिए पार्कों में जाने के लिए अलग-अलग दिन तय होने चाहिए।

### मस्क के सऊदी अरब समेत अन्य देशों के साथ संबंध देखने योग्य : बाइडेन

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा है कि एलन मस्क के सऊदी अरब समेत अन्य देशों के साथ संबंध देखने योग्य हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक श्री बाइडेन से पूछा गया कि क्या मस्क ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया है और अगर सऊदी अरब ने ट्विटर को खरीदने में उनकी मदद की तो इसकी जांच होनी चाहिए। सऊदी अरब के राजकुमार अलवलीद बिन तलाल ने ट्विटर की 1.89 अरब डॉलर के शेयर खरीदे हैं। बुधवार को व्हाइट हाउस में एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान, एक रिपोर्टर ने बाइडेन से पूछा क्या आपको लगता है कि एलन मस्क अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं और क्या अमेरिका को सउदी अरब समेत विदेशी सरकारों के साथ ट्विटर के संयुक्त अधिग्रहण की जांच करनी चाहिये। इस पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा एलन मस्क का अन्य देशों के साथ सहयोग अथवा तकनीकी संबंध देखने लायक है। उन्होंने कहा, वह कुछ भी अनुचित कर रहे हैं या नहीं, मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं। मैं सुझाव दे रहा हूं कि यह देखने लायक है। मैं बस इतना ही कहूंगा। मस्क ने लंबी कानूनी लड़ाई के बाद पिछले महीने ट्विटर पर अपना 44 अरब डालर का अधिग्रहण पूरा किया।

### मेटा ने की 11 हजार से अधिक कर्मचारियों की छंटनी

मेनलो पार्क (अमेरिका)। सोशल मीडिया प्लेटफार्म फेसबुक,इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप के आधिपत्य वाली कंपनी मेटा ने नौकरियों में कटौती करना शुरू कर दिया है और अब तक 11 हजार से अधिक कर्मचारियों की छंटनी की जा चुकी है। वर्ष 2004 में मार्क जुकरबर्ग ने फेसबुक की स्थापना की थी जिसके बाद सिलिकान वैली कंपनी ने लगातार कर्मचारियों की भर्ती कर रही थी, लेकिन अब कंपनी ने अपने कार्यबल को 13 फीसदी तक कम कर दिया। बुधवार को मेटा ने नौकरियों में कटौती करना शुरू कर दिया है। न्यूयार्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार मेटा ने कहा कि वह 11 हजार से अधिक कर्मचारी या अपने कार्यबल के लगभग 13 प्रतिशत की छंटनी कर रही है। छंटनी विभागों और क्षेत्रों में की गई है। इस मामले की जानकारी रखने वाले दो लोगों ने कहा कि जिन डिवीजनों में तेजी से कटौती नहीं की गई, उनमें मेटावर्स से संबंधित परियोजनाओं पर काम करने वाले इंजीनियर शामिल हैं। जुकरबर्ग ने कर्मचारियों को लिखे एक पत्र में कहा, मैं इन फैसलों के लिए और हम यहां कैसे पहुंचे, इसके लिए जवाबदेही लेना चाहता हूं। मुझे पता है कि यह सभी के लिए कठिन है और मुझे विशेष रूप से प्रभावित लोगों के लिए खेद है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

# टॉन्सिल्स या गले का संक्रमण भी हो सकता है गले में खराश का कारण

**क्या आपके गले में हमेशा खराश बनी रहती है? मौसम का बदलाव या सर्द-गर्म की वजह से इसे सामान्य समस्या न समझो। इस खराश का कारण टॉन्सिल्स या गले का संक्रमण भी हो सकता है।**

गले में खराश होना आम बात होती है। इसमें गले में कांटे जैसी चुभन, खिचखिच और बोलने में तकलीफ जैसी समस्याएं आती हैं। ऐसा बैक्टीरिया और वायरस के कारण होता है। कई बार एलर्जी और धूम्रपान के कारण भी गले में खराश की समस्या होती है। गले के कुछ संक्रमण तो खुद-ब-खुद ही ठीक हो जाते हैं, लेकिन कुछ मामलों में इलाज की जरूरत पड़ती ही है। आमतौर पर लोग गले की खराश को आम बात समझ कर अक्सर अनदेखा करते रहते हैं। लेकिन गले की किसी भी परेशानी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ये गंभीर बीमारी का रूप भी ले सकती है। गले का संक्रमण आमतौर पर वायरस और बैक्टीरिया के कारण होता है। इसके अलावा फंगल इंफेक्शन भी होता है, जिसे ओरल थ्रश कहते हैं। किसी खाने की वस्तु, पेय पदार्थ या दवाइयों के विपरीत प्रभाव के कारण भी गले में संक्रमण हो सकता है। इसके अलावा गले में खराश की समस्या अनुवांशिक भी हो सकती है। खान-पान में त्रुटियां जैसे ठंडे, खट्टे, तले हुए एवं प्रिजर्वेटिव खाद्य पदार्थ इसका कारण बन सकते हैं। मुंह व दांतों की साफ-सफाई न रखने के कारण भी संक्रमण की आशंकाएं बढ़ जाती हैं।

## टॉन्सिल्स

गले में खराश या ग्रसनीशोथ गले का इंफेक्शन है, जिसमें गले से कर्कश आवाज, हल्की खांसी, बुखार, सिरदर्द, थकान और खासकर कुछ निगलते वक्त गले में दर्द होता है। हमारे गले में दोनों तरफ टॉन्सिल्स होते हैं, जो कीटाणुओं, बैक्टीरिया और वायरस को हमारे गले में जाने से रोकते हैं, लेकिन कई बार जब ये टॉन्सिल्स खुद ही संक्रमित हो जाते हैं, तो इन्हें टॉन्सिलाइटिस कहते हैं। इसमें गले के अंदर दोनों तरफ के टॉन्सिल्स गुलाबी व लाल रंग के दिखाई पड़ते हैं। ये थोड़े बढ़े हुए होते हैं और ज्यादा लाल होते हैं। कई बार इन पर सफेद चकत्ते या पस भी दिखाई देता है। वैसे तो टॉन्सिलाइटिस का संक्रमण उचित देखभाल और एंटीबायोटिक से ठीक हो जाता है। लेकिन इसका खतरा तब अधिक बढ़ जाता है, जब ये संक्रमण स्ट्रेप्टोकॉकस हिमोलिटीकस नामक बैक्टीरिया से होता है। तब ये संक्रमण हृदय एवं गुर्दे में फैलकर खतरनाक बीमारी को जन्म दे सकता है।

## एडीनॉयड

एडीनॉयड अर्थात् नाक के पीछे होने वाला टॉन्सिल्स। एंडीनॉयड में संक्रमण होने पर बुखार, सर्दी, नाक एवं गले से कफ आना, खांसी हो सकती है। ऐसे में रात में सांस लेने में तकलीफ होती है। इसमें मुंह खुला रहता है और कई बार खर्राटे भी आने लगते हैं। एडीनॉयड संक्रमण होने पर कान की बीमारियां हो जाती हैं।

## लक्षण

- गले में दर्द रहना और सूजन आना बुखार आना
- गले के अंदर टॉन्सिल्स लाल होना व सूजन आना
- बोलने में परेशानी होना
- टॉन्सिल्स पर पीले या सफेद दाग होना
- खांसी और सांस में बदबू

## सावधानी व अन्य उपचार

गले की खराश के उपचार के बारे में कहते हैं- आमतौर पर गले की खराश कोल्ड और फ्लू के वायरस के कारण ही होती है। गले के छोटे संक्रमण तो कई बार खुद ही दूर हो जाते हैं, लेकिन स्ट्रेन्टोकॉकस जैसे संक्रमण के लिए एंटीबायोटिक्स और दर्द निवारक दवाएं लेना बहुत जरूरी होता है। इसके अलावा बैक्टीरिया या वायरस आदि को बढ़ने से रोकने के लिए कुछ उपचार हैं। **इनमें निम्न उपचार प्रमुख हैं :**

- गले की नमी बनाए रखने के लिए पानी और जूस जैसे तरल पदार्थों का सेवन करते रहें।
- नर्म चीजें खाएं, जैसे हलवा, जई (ओट्स) और सूप।
- डॉक्टर द्वारा बताए गए निर्धारित समय पर पेरासिटामोल या आई ब्रुफिन लेते रहें।
- नमक युक्त गुनगुने पानी से गरारे करें। इससे आराम मिलेगा।
- जब गले में खराश फंगस की वजह से हो या ओरल थ्रश हो, तभी डॉक्टर एंटी-फंगल दवाएं देते हैं।
- अदरक, कैमोमाइल या कुठरा की चाय गले में आराम भी देती है और इसमें जीवाणुरोधक गुण भी हैं।
- धूम्रपान न करें और मिर्च-मसाले का भोजन न लें।

**फेफड़े शरीर के सबसे सक्रिय, महत्वपूर्ण और नाजुक अंगों में से एक हैं। पर, दिल की तरह उन्हें सेलिब्रिटी का दर्जा प्राप्त नहीं है। जबकि, दिल से ज्यादा मौतें फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों की वजह से होती हैं। भारत में मृत्यु के दस प्रमुख कारणों में चार कारण फेफड़े व श्वसन रोगों से जुड़े हैं। क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) लोवर रेस्पिरेटरी इंफेक्शन, कैंसर (फेफड़ों का कैंसर दूसरे स्थान पर है) और ट्युबरक्लोसिस। बढ़ता वायु प्रदूषण इस समस्या की गंभीरता को और बढ़ा देता है।**

# बढ़ता वायु प्रदूषण बन रहा है फेफड़ों के लिए समस्या

दो दशक पहले तक फेफड़ों के कैंसर और सीओपीडी को धूम्रपान करने वालों की बीमारी माना जाता था, क्योंकि 90 प्रतिशत मामले धूम्रपान करने वालों के ही होते थे। पर, अब यह समस्याएं ज्यादातर सभी लोगों को अपना शिकार बना रही है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2019 में वायु प्रदूषण की वजह से भारत में 16.7 लाख लोगों की मौत हुई। यह आंकड़ा 2020 में देश में कोरोना महामारी से हुई कुल मौतों से करीब 12 गुना ज्यादा है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वायु प्रदूषण फेंफड़ों से जुड़ी 40 प्रतिशत बीमारियों के लिए जिम्मेदार है। नेचर जेनेटिक्स में प्रकाशित शोध के अनुसार, वायु प्रदूषण से सभी तरह की नॉन कम्युनिकेबल डिसीज़ेज जैसे कार्डियो वॉस्क्युलर, ऑटो इम्युन डिसीज़ेज, डायबिटीज़, अर्थराइटिस आदि का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। हम दिन भर में करीब 25,000 बार सांस लेते और छोड़ते हैं। प्रदूषित हवा के बीच लगातार रहना कई तरह से सेहत पर असर डालता है। खासकर, ठंड में वायु प्रदूषण का बढ़ना फेफड़ों की समस्या से जूझ रहे लोगों की दिक्कत बढ़ा देता है।

### कैसे डालते हैं प्रदूषक सेहत पर असर

सेहत पर सबसे अधिक बुरा असर पार्टिकुलेट मैटर (पीएम), ओजोन, नाइट्रोजन डाय ऑक्साइड और सल्फर डाईऑक्साइड का पड़ता है। ईंधन के जलने, बिजली के उपकरण व औद्योगिक प्रक्रियाओं से सल्फर डाई ऑक्साइड निकलती है। जिसके कारण सांस फूलना, लगातार नाक से पानी निकलने लगता है। 10 और 2.5 माइक्रॉन से कम व्यास वाले पीएम सेहत के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। ये सांस से फेफड़ों में प्रवेश करते हैं और रक्त के प्रवाह में मिल जाते हैं।

### ऐसे रहेंगे फेफड़े स्वस्थ और मजबूत

- नीम प्रदूषकों को अवशोषित करके शरीर से वायु प्रदूषण के असर को कम करने में मदद करता है। इसके लिए त्वचा व बालों को नीम की पत्तियों के उबले हुए पानी से धोने से त्वचा व म्युकोसल मैम्ब्रेन में फंसे पोषक तत्व बाहर निकलते हैं। सप्ताह में दो बार नीम की 3-4 पत्तियां चबाने से भी लाभ मिलता है।
- तुलसी प्रदूषक तत्वों को सोखती है। इसका काढ़ा श्वसन रोगों में राहत देता है।
- हल्दी एक एंटीऑक्सीडेंट है। इसे घी के साथ मिलाकर लेना कफ में आराम देता है और अस्थमा अटैक में सहायता करता है।
- रोज 2-3 चम्मच देसी घी खाएं, ये लेड व पारे जैसे हानिकारक तत्वों को शरीर में जमा नहीं होने देता।
- त्रिफला पॉउडर वात, पित्त और कफ दोषों के असंतुलन को संतुलित करके इम्यूनिटी बढ़ाता है। रात में एक चम्मच शहद के साथ लें।
- श्वसन क्रियाएं प्राणायाम, कपालभाति व जलनेति करें।
- यूनिवर्सिटी ऑफ मेरीलैंड मेडिकल सेंटर के अनुसार, पोषक तत्वों जैसे विटामिन ए, सी, ई और मिनरल्स जैसे जिंक, पोटेशियम, सेलेनियम और मैग्नीशियम की कमी फेफड़ों के रोगों का खतरा बढ़ाती है। रंग-बिरंगी सब्जियां, साबुत अनाज खाएं।

### वायु प्रदूषण का असर

- सिरदर्द
- नाक, गला और आंखों में दर्द, सूजन और जलन
- खांसी और सांस लेने में दर्द
- निमोनिया, ब्रोन्काइटिस
- स्किन इरिटेशन
- दीर्घकालिक असर
- सेंटर नर्वस सिस्टम पर असर (सिरदर्द, बेचैनी)
- कार्डियोवैस्कुलर रोग
- श्वसन तंत्र से जुड़े रोग
- (अस्थमा, कैंसर)

### वायु प्रदूषण का खतरा किन लोगों को है ज्यादा

- फेफड़े, हृदय व मधुमेह से जूझ रहे लोग
- बच्चे व बुजुर्ग
- गर्भवती महिलाएं
- बहुत अधिक समय प्रदूषित वातावरण में बिताने वाले लोग

### ठंड में रहें सावधान

सर्दियों में श्वसन तंत्र से जुड़ी समस्याओं के बढ़ने के तीन प्रमुख कारण हैं; पहला, जब तापमान में तेज गिरावट आती है तब श्वास नलिकाएं थोड़ी सिकुड़ जाती हैं जिससे सांस लेने में परेशानी होती है। दूसरा, ठंडी और सूखी हवा बीमार फेफड़ों को ही नहीं स्वस्थ्य फेफड़ों को भी नुकसान पहुंचाती है। तीसरा सर्दियों में स्मोग (स्मोक+फॉग) के कारण प्रदूषण का स्तर अधिक होता है। प्रदूषित वायु श्वास नलिकाओं और फेफड़ों के साधे संपर्क में आने से ऊतकों की कोशिकाओं के डीएनए को नुकसान पहुंचता है जिससे वो क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। ऐसे में चेहरे व नाक को ढक कर रखें, जब तापमान बहुत कम हो तो खुले में व्यायाम न करें, मुंह के बजाय नाक से सांस लें, ताकि फेफड़े ठंडी हवा के सीधे संपर्क में न आएं। दमा या सांस के रोगी एन 95 मास्क पहनकर ही बाहर निकलें। गहरी सांस लें डीप ब्रीदिंग से फेफड़े साफ होते हैं। अधिक मात्रा में ऑक्सीजन अंदर जाती है और कार्बन डाईऑक्साइड बाहर निकल जाती है। डीप ब्रीदिंग का सही तरीका है, नाक से सांस अंदर लो और मन ही मन 1-2-3-4 तक गिनो, फिर मुंह से सांस छोड़ो और 1-2-3-4-5-6-7-8 तक गिनो। गहरी सांस छाती से नहीं पेट से लेनी चाहिए।

### फेफड़ों के कैंसर का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण

प्रदूषित वायु में सांस लेने से फेफड़ों की क्षमता और कार्यप्रणाली प्रभावित होती है और वो समय से पहले बूढ़े होने लगते हैं। लगातार टॉक्सिन्स और प्रदूषकों के संपर्क में रहने से फेफड़े क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। डब्ल्यूएचओ की इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) के अनुसार, वायु प्रदूषण फेफड़ों के कैंसर के प्रमुख कारणों में से एक है। वायु प्रदूषण का असर बड़ों की तुलना में बच्चों पर अधिक होता है। बच्चों की श्वसन दर वयस्कों से अधिक होती है, इस कारण बच्चे सांस के जरिए अधिक मात्रा में प्रदूषक भी अंदर ले लेते हैं। बच्चों की लंबाई और आदतों के कारण वो उन प्रदूषकों के अधिक संपर्क में रहते हैं जो वायु से भारी होते हैं और उनके ब्रीदिंग जोन में केंद्रित हो जाते हैं। बच्चों का एअरवेज भी संकरा होता है और उनके फेफड़े अभी भी विकसित हो रहे हैं इसलिए थोड़ा सा भी प्रदूषण बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। जिन लोगों को धूल, मिट्टी की एलर्जी से अचानक ही दौरा पड़ने की स्थिति आती है, उन्हें इमरजेंसी दवाएं घर में रखनी चाहिए।

### इनडोर प्रदूषण से भी बचें

- घरों और ऑफिसों के भीतर की हवा भी शुद्ध रखें। एअर फ्रेशनर का उपयोग न करें, बल्कि एयर प्यूरीफिकेशन सिस्टम लगवाएं। हमेशा खिड़कियां और दरवाजे बंद करके न रहें, दिन में कुछ समय ताजी हवा अंदर आने दें। -घर के अंदर धूम्रपान न करें।
- ठहाके लगाएं ठहाका लगाकर हंसते समय बासी हवा बाहर निकल जाती है और फेफड़े ताजी हवा से भर जाते हैं।
- मसूड़े रखें स्वस्थ स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क में हुए शोध के अनुसार बीमार मसूड़ों की वजह से व्यक्ति के फेफड़े ठीक से कार्य नहीं कर पाते हैं।
- व्यायाम के समय फेफड़ों की क्षमता बढ़ जाती है। अध्ययनों के अनुसार सामान्य स्थिति में स्वस्थ व्यक्ति एक मिनट में 15 बार सांस लेता है, पर व्यायाम के दौरान यह बढ़कर 40-50 प्रति मिनट हो जाता है।
- पानी और दूसरे तरल पदार्थ अधिक लें। इससे फेफड़ों की म्युकोसल लाइनिंग पतली रहती है, जिससे फेफड़े बेहतर काम कर पाते हैं।
- संक्रमित होने से बचें। बार-बार संक्रमण फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है। जब जरूरी हो हाथों को साबुन और पानी से धोएं। सर्दियों में गुनगुना पानी पिएं। बार-बार चेहरे को छूने से बचें।
- रीढ़ को सीधा करके बैठें, ताकि फेफड़ों को पर्याप्त स्थान मिल सके। जो लोग दिनभर ऑफिस में कुर्सी पर बैठे-बैठे काम करते हैं, उन्हें चाहिए कि हर दो घंटे में पांच मिनट के लिये कुर्सी पर थोड़ा पीछे की ओर झुक जाएं, छाती को थोड़ा-सा ऊपर उठा दें और गहरी सांस लें।

# प्लास्टिक का ज्यादा इस्तेमाल खतरनाक

रिसर्च से ये बात सामने आई है कि प्लास्टिक के बोतल और कंटेनर के इस्तेमाल से कैंसर हो सकता है। हवाई के कैंसर हॉस्पिटल के डॉक्टर एडवर्ड फुजीमोटो ने प्लास्टिक और कैंसर पर काफी शोध किया है। उनका कहना है कि प्लास्टिक के बर्तन में खाना गर्म करना और कार में रखे बोतल का पानी कैंसर की वजह हो सकते हैं। फुजीमोटो के मुताबिक कार में रखी प्लास्टिक की बोतल जब धूप या ज्यादा तापमान की वजह से गर्म होती है तो प्लास्टिक में मौजूद नुकसानदेह कैमिकल डाइऑक्सिन का रिसाव शुरू हो जाता है। ये डाईऑक्सिन पानी में घुलकर हमारे शरीर में पहुंचता है। जानकारों का कहना है कि डाइऑक्सिन हमारे शरीर में मौजूद कोशिकाओं पर बुरा असर डालता है। इसकी वजह से महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। प्लास्टिक का ज्यादा इस्तेमाल खतरनाक है। कई जानकार प्लास्टिक से कैंसर होने की बात को गलत ठहराते हैं। उनका कहना है कि अभी तक इस विषय पर आधिकारिक रिसर्च की कमी है। इसलिए कैंसर जैसी बीमारी के लिए प्लास्टिक को दोषी ठहराना गलत होगा। जानकारों का कहना है कि अगर खरीदते वक्त ही अच्छी क्वालिटी का प्लास्टिक लिया जाए तो कैंसर का खतरा टाला जा सकता है। वैसे जानकारों की सलाह है कि जहां तक हो सके खाने-पीने के लिए स्टील और कांच के बर्तनों का ही इस्तेमाल करना चाहिए। प्लास्टिक की क्वालिटी को लेकर सरकार भी काफी सख्त है। प्लास्टिक के प्रोडक्ट्स के लिए बाकायदा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं ताकि कंपनियां लोगों की आंखों में धूल न झोंक पाएं। फिर भी लोग हल्की क्वालिटी के प्लास्टिक के टिफिन और बोतल खरीदकर उन्हें इस्तेमाल करते हैं जो शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं।

# सेहत को बिगाड़ सकता है इन चीजों का रात के समय खाना

**अगर आप भी रात में इन चीजों में से कोई एक भी खाते हैं तो जरा संभल जाए। इन चीजों को रात के समय खाना आपकी सेहत को बिगाड़ सकता है। हो सके तो इन 8 चीजों को रात के समय यानी कि डिनर के भोजन में खाने से बचें।**

## स्नैक्स

रात के वक्त कुछ चीजें खाने से आप तौबा ही करें तो बेहतर होगा। इनमें स्नैक्स या चिप्स जैसी चीजें भी शामिल है। हालांकि इनका सेवन दिन के वक्त भी नुकसानदेह ही होता है। दरअसल इनमें अत्यधिक मात्रा में मोनोसोडियम ग्लूटामेट होता है, जो आपको नींद संबंधी समस्याएं देने के साथ ही, अन्य स्वास्थ्य परेशानियां भी दे सकता है।

## एल्कोहल

रात को सोने से ठीक पहले किसी भी प्रकार का नशा या अल्कोहल का सेवन आपके लिए बेहद हानिकारक हो सकता है। यह आपकी नींद को भी प्रभावित कर सकता है। खास तौर से वाइन नींद की गुणवत्ता को खराब करती है नींद के समय को कम कर देती है। इसमें कैलोरी भी बहुत अधिक मात्रा में होती है।

## पिज्जा

अक्सर रात के वक्त पार्टी या बाहर जाकर खाने में लोग पिज्जा पसंद करते हैं। लेकिन इसे पचाने में आपके पाचन तंत्र को काफी मेहनत करनी पड़ती है। इसके अलावा पिज्जा में चिकनाई बहुत अधिक होती है और इसमें जो सॉस व अन्य मसाले प्रयोग किए जाते हैं, वे आपके लिए हार्टबर्न का खतरा बढ़ा देते हैं। इसलिए कोशिश करें कि रात के वक्त इसका प्रयोग बिल्कुल न करें।

## बर्गर

सोने से पहले बर्गर खाना भी सेहत के लिए हानिकारक होता है। बर्गर में चीज व सॉस का प्रयोग कर हम इसे भले ही इसका स्वाद बढ़ा लेते हैं, लेकिन यही चीजें पेट में प्राकृतिक एसिड के उत्पादन को बढ़ाती हैं, जिससे हार्टबर्न की समस्या हो सकती है। इसलिए कोशिश करें की चीज और सॉस से युक्त बर्गर का सेवन न ही करें।

## रेड मीट

रेड मीट प्रोटीन और आयरन का स्रोत है। लेकिन इसका अधिक सेवन करने से आपको बेचैनी हो सकती है और यह आपकी नींद को भी प्रभावित कर सकता है। तो अगर आप शांति से गहरी नींद लेना चाहते हैं, तो रात में रेड मीड को नजरअंदाज करें।

## पास्ता

पास्ता कैलोरी से भरपूर होता है, और इसमें सबसे अधिक कैलोरी होती है। इसमें अधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट होता है जो वसा में बदल जाता है। इसके अलावा इसे चीज और अन्य फैटी चीजों के साथ बनाया जाता है जिससे इसका ग्लासिमिक सूचकांक बहुत अधिक होता है। रात के समय इसका प्रयोग हृदय और पाचन तंत्र के लिए हानिकारक होता है।

## ऐसी सब्जियां

कुछ सब्जियों में अघुलनशील फाइबर की मात्रा अधिक होती है, जो लंबे समय तक आपका पेट भरा रखती है, और पाचन तंत्र धीमी गति से कार्य करने लगता है। ऐसे में आपको गैस या पाचन संबंधी अन्य समस्याएं हो सकती है। ऐसी सब्जियों को रात के वक्त खाने से बचना चाहिए। प्याज, ब्रोकोली, पत्तागोभी आदि सब्जियां इनमें शामिल है।

## डॉर्क चॉकलेट

डार्क चॉकलेट में बहुत अधिक मात्रा में कैफीन व अन्य उत्तेजक पदार्थ होते हैं, जो हृदय को आराम देने के बजाए कार्यशील रखते हैं तथा मस्तिष्क को केंद्रित रखते हैं। इससे आपकी नींद बुरी तरह से प्रभावित हो सकती है।